VISION IAS
INSPIRING INNOVATION

संस्कृति

क्लासरूम स्टडी मटेरियल

(अप्रैल, 2023 से दिसंबर, 2023)

PT 365

www.visionias.in 8468022022, 9019066066

enquiry@visionias.in /c/VisionIASdelhi /visionias.upsc /vision _ias VisionIAS_UPSC

अहमदाबाद बैंगलोर भोपाल चंडीगढ़ दिल्ली गुवाहाटी हैदराबाद जयपुर जोधपुर लखनऊ प्रयागराज पुणे रांची

फाउंडेशन कोर्स
सामान्य अध्ययन
प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा 2025

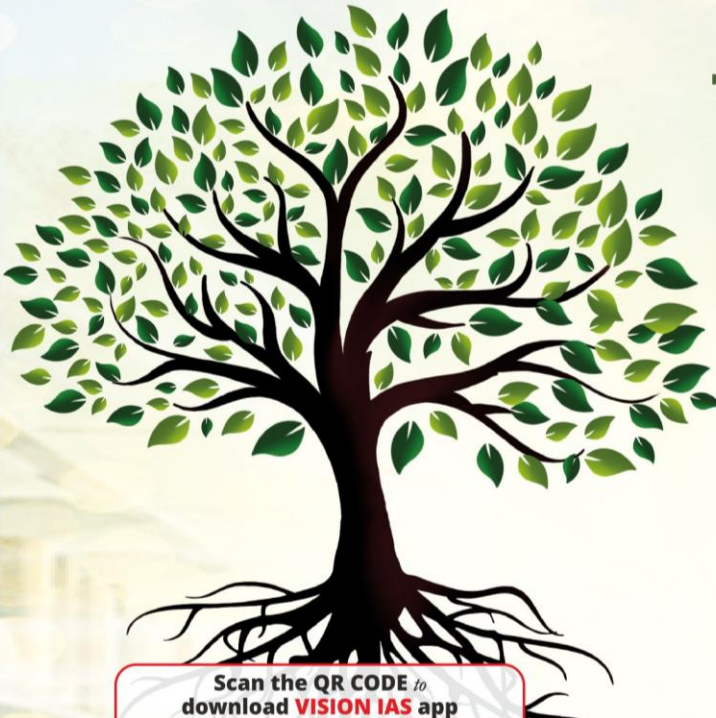

इनोवेटिव क्लासरूम प्रोग्राम

- प्रारंभिक परीक्षा, मुख्य परीक्षा और निबंध के लिए महत्वपूर्ण सभी टॉपिक का विस्तृत कवरेज
- मौलिक अवधारणाओं की समझ के विकास एवं विश्लेषणात्मक क्षमता निर्माण पर विशेष ध्यान
- एनीमेशन, पॉवर प्वाइंट, वीडियो जैसी तकनीकी सुविधाओं का प्रयोग
- अंतर - विषयक समझ विकसित करने का प्रयास
- योजनाबद्ध तैयारी हेतु करेंट ओरिएंटेड अप्रोच
- नियमित क्लास टेस्ट एवं व्यक्तिगत मूल्यांकन
- सीसैट कक्षाएं
- PT 365 कक्षाएं
- MAINS 365 कक्षाएं
- PT टेस्ट सीरीज
- मुख्य परीक्षा टेस्ट सीरीज
- निबंध टेस्ट सीरीज
- सीसैट टेस्ट सीरीज
- निबंध लेखन - शैली की कक्षाएं
- करेंट अफेयर्स मैगजीन

नोट: ऑनलाइन छात्र हमारे पाठ्यक्रम की लाइव वीडियो कक्षाएं अपने घर पर ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर देख सकते हैं। छात्र लाइव चैट विकल्प के माध्यम से कक्षा के दौरान अपने संदेह और विषय संबंधी प्रश्न पूछ सकते हैं। वे अपने संदेह और प्रश्न नोट भी कर सकते हैं और दिल्ली केंद्र में हमारे कक्षा सलाहकार को बता सकते हैं और हम फोन/मेल के माध्यम से प्रश्नों का उत्तर देंगे।

Scan the QR CODE *to* download **VISION IAS** app

DELHI: 10 अप्रैल, **9 AM**

BHOPAL: 11 जून

LUCKNOW: 5 जून

JODHPUR: 7 मार्च

JAIPUR: 27 मार्च

"You are as strong as your Foundation"

FOUNDATION COURSE
GENERAL STUDIES
PRELIMS CUM MAINS
2025, 2026 & 2027

Approach is to build fundamental concepts and analytical ability in students to enable them to answer questions of Preliminary as well as Mains Exam

- Includes comprehensive coverage of all the topics for all the four papers of GS Mains, GS Prelims & Essay
- Access to LIVE as well as Recorded Classes on your personal student platform Includes All India GS Mains, GS Prelims, CSAT & Essay Test Series
- Our Comprehensive Current Affairs classes of PT 365 and Mains 365 of year 2025, 2026 & 2027

ONLINE Students

NOTE - Students can watch LIVE video classes of our COURSE on their ONLINE PLATFORM at their homes. The students can ask their doubts and subject queries during the class through LIVE Chat Option. They can also note down their doubts & questions and convey to our classroom mentor at Delhi center and we will respond to the queries through phone/mail.

Live - online / Offline Classes

Scan the QR CODE *to* download **VISION IAS** app

DELHI: 11 APRIL, 9 AM

GTB Nagar Metro (Mukherjee Nagar): 23 APR, 5:30 PM

AHMEDABAD: 8 JAN | BHOPAL: 5 APR | CHANDIGARH: 5 APR | HYDERABAD: 15 APR

JAIPUR: 27 MAR | JODHPUR: 7 MAR | LUCKNOW: 12 MAR | PUNE: 15 MAR

संस्कृति (Culture)

विषय-सूची

1. मूर्तियां, मंदिर एवं स्थापत्य (Sculptures, Temples and other Architecture) ____ 4

1.1. यूनेस्को द्वारा मान्यता ____ 4

1.1.1. शांति निकेतन ____ 4

1.1.2. पवित्र होयसल मंदिर समूह ____ 6

1.2. मंदिर ____ 7

1.2.1. कोणार्क सूर्य मंदिर ____ 7

1.2.2. शारदा मंदिर ____ 9

1.3. सुर्ख़ियों में रहे अन्य मंदिर ____ 10

1.3.1. त्र्यंबकेश्वर मंदिर ____ 10

1.3.2. तुंगनाथ मंदिर ____ 11

1.3.3. जागेश्वर मंदिर और पार्वती कुंड ____ 11

1.3.4. श्री सीताराम स्वामी मंदिर, त्रिशूर, केरल ____ 11

1.3.5. तिरुनेल्ली मंदिर, केरल ____ 12

2. स्थापत्य एवं मूर्तिकला (Architecture and Sculpture) ____ 13

2.1. मोहनजोदड़ो की नर्तकी की मूर्ति ____ 13

2.2. नटराज की प्रतिमा ____ 13

2.2.1. सेंगोल ____ 17

2.3. G20 शिखर सम्मेलन में प्रदर्शित अन्य सांस्कृतिक पहलू 18

2.4. नया संसद भवन ____ 20

2.5. जंतर-मंतर ____ 21

2.6. सुर्ख़ियों में रहे अन्य स्थापत्य ____ 22

2.6.1. गोलकोंडा (गोलकुंडा) का किला ____ 22

2.6.2. सिरी किला ____ 22

2.6.3. एकात्मता की मूर्ति ____ 23

3. चित्रकला और अन्य कला शैलियां (Painting and other Forms of Art) ____ 24

3.1. इतिहास के स्रोतों के रूप में अभिलेख ____ 24

3.2. यूनेस्को क्रिएटिव सिटीज़ नेटवर्क ____ 25

3.3. जहाज निर्माण की प्राचीन सिलाई विधि (टंकाई पद्धति) 26

3.4. मेवाड़ चित्रकला शैली ____ 26

3.5. सुर्ख़ियों में रही अन्य चित्रकारियां ____ 27

3.5.1. बाग प्रिंट (छपाई) ____ 27

3.5.2. पनामलै चित्रकला (तमिलनाडु) ____ 27

3.5.3. चेरियल स्क्रॉल पेंटिंग ____ 28

3.5.4. पिछवाई चित्रकला ____ 28

3.6. गरबा नृत्य ____ 29

3.7. सुर्ख़ियों में रही अन्य नृत्य शैलियां ____ 30

3.7.1. चाम लामा नृत्य ____ 30

3.7.2. कोलकली नृत्य ____ 30

3.7.3. पुलिकली (बाघ नृत्य) ____ 31

3.8. सुर्ख़ियों में रही अन्य कला शैलियां ____ 31

3.8.1. गिलगित पांडुलिपियां ____ 31

3.8.2. ओल चिकी लिपि ____ 31

3.8.3. फणीगिरी कलाकृतियां ____ 32

3.8.4. वज्र मुष्टि कलागा ____ 32

4. सुर्ख़ियों में रहे महत्वपूर्ण स्थल (Important Sites in the News) ____ 33

4.1. कीलाडी उत्खनन ____ 33

4.2. सुर्ख़ियों में रहे अन्य संगमकालीन स्थल ____ 33

4.2.1. पोर्पनैकोट्टई स्थल ____ 33

4.2.2. आदिचनल्लूर ____ 33

4.3. सुर्ख़ियों में रहे अन्य महत्वपूर्ण स्थल ____ 34

4.3.1. जूना खटिया स्थल ____ 34

4.3.2. चेब्रोलू ____ 34

4.3.3. मेन्हीर ____ 34

4.3.4. तोप्पिकल्लु या हैट स्टोन्स ____ 35

4.3.5. सुंदरगढ़ प्राकृतिक मेहराब ____ 35

4.3.6. शिशुपालगढ़ ____ 35

4.3.7. भायखला रेलवे स्टेशन, मुंबई ____ 35

4.3.8. व्हिसलिंग विलेज (कोंगथोंग गांव) ____ 36

5. व्यक्तित्व (Personalities) ____ 37

5.1. मिहिर भोज ____ 37

5.2. संत मीराबाई ____ 38

5.3. रानी दुर्गावती ____ 40

5.4. छत्रपति शिवाजी महाराज ____ 41

5.5. सर सैयद अहमद खान ____ 42

5.6. महर्षि दयानंद सरस्वती ____ 43

5.7. श्री अरबिंदो घोष ____ 44

5.8. भगवान बिरसा मुंडा ____ 45

© Vision IAS

5.9. श्री अल्लूरी सीताराम राजू _____ 46
5.10. काज़ी नजरुल इस्लाम _____ 47
5.11. राजा रवि वर्मा _____ 48
5.12. सुर्ख़ियों में रहे अन्य व्यक्तित्व _____ 48
5.12.1. श्रीमंत शंकरदेव _____ 48
5.12.2. अहिल्याबाई होल्कर (1725 – 1795) _____ 49
5.12.3. श्री नारायण गुरु (1856-1928) _____ 49
5.12.4. सच्चिदानंद सिन्हा (1871-1950) _____ 49
5.12.5. स्वामी सहजानंद सरस्वती _____ 50
5.12.6. मालती मेम (उर्फ मंगरी ओरंग) _____ 50
5.12.7. रुक्मिणी लक्ष्मीपति (1892-1951) _____ 50
5.12.8. अशफाक उल्ला खान (1900-1927) _____ 50
5.12.9. श्री रामालिंगा स्वामीगल _____ 51
6. पुरस्कार (Awards) _____ 52
6.1. साहित्य का नोबेल पुरस्कार _____ 52
6.2. साहित्य अकादमी पुरस्कार _____ 53
6.3. संगीत नाटक अकादमी अमृत पुरस्कार _____ 53
6.4. अन्य महत्वपूर्ण पुरस्कार _____ 54
6.4.1. गोविंद स्वरूप लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड _____ 54
6.4.2. रेमन मैग्सेसे पुरस्कार _____ 54
6.4.3. इंदिरा गांधी शांति पुरस्कार, 2023 _____ 54
6.4.4. अन्नपूर्णा प्रमाण-पत्र कार्यक्रम _____ 54
7. सुर्ख़ियों में रही जनजातियां (Tribes in News) _____ 56
7.1. कुई भाषा _____ 56
7.1.1. सुर्ख़ियों में रही अन्य जनजातियां और संबंधित घटनाएं _____ 57
8. विविध (Miscellaneous) _____ 58
8.1. प्राचीन भारत में सैन्य प्रणाली _____ 58
8.2. संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन _____ 59
8.3. गिरमिटिया मजदूरी _____ 59
8.4. सुर्ख़ियों में रहे त्यौहार _____ 60
8.5. सुर्ख़ियों में रहे खेल _____ 60
8.5.1. भारत के राष्ट्रीय खेल _____ 60
8.5.2. खेलो इंडिया पैरा गेम्स 2023 _____ 61
8.5.3. डायमंड लीग _____ 62
8.5.4. ICC वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप (WTC) _____ 62
8.6. सुर्ख़ियों में रही सरकारी पहलें _____ 62
8.6.1. संशोधित 'एडॉप्ट ए हेरिटेज 2.0' कार्यक्रम _____ 62
8.6.2. राष्ट्रीय सांस्कृतिक मानचित्रण मिशन _____ 63
8.7. भौगोलिक संकेतक (GI) टैग _____ 64
8.8. अन्य महत्वपूर्ण सुर्ख़ियां _____ 68
8.8.1. होमो नलेडी _____ 68
8.8.2. महिला ओधुवर _____ 68
8.8.3. बाली यात्रा _____ 68
8.8.4. यूनेस्को का प्रिक्स वर्साय पुरस्कार, 2023 _____ 68
8.8.5. अभिलेख पटल _____ 69
8.8.6. JATAN: वर्चुअल म्यूजियम बिल्डर _____ 69
8.8.7. संयुक्त राज्य अमेरिका ने 100 से ज्यादा भारतीय पुरावशेष वापस किए _____ 69
8.8.8. वैश्विक बौद्ध शिखर सम्मेलन, 2023 _____ 69
परिशिष्ट I : बौद्ध धर्म _____ 70
परिशिष्ट II : जैन धर्म _____ 71

Copyright © by Vision IAS
All rights are reserved. No part of this document may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior permission of Vision IAS.

अभ्यर्थियों के लिए संदेश

प्रिय अभ्यर्थी,

PT 365 (हिंदी) डाक्यूमेंट के अंतर्गत, व्यापक तौर पर विगत **1 वर्ष (365 दिन) की महत्वपूर्ण समसामयिकी को समेकित रूप से कवर किया गया है,** ताकि प्रीलिम्स की तैयारी में अभ्यर्थियों को सहायता मिल सके।

अभ्यर्थियों के हित में PT 365 डॉक्यूमेंट को और बेहतर बनाने के लिए इसमें निम्नलिखित नवीन विशेषताओं को शामिल किया गया है:

संक्षेप में इन्फोग्राफिक्स के रूप में टॉपिक्स, **जैसे–**

- **विभिन्न राजवंशों** के बारे महत्वपूर्ण जानकारी,
- **भारत की G20 अध्यक्षता** के दौरान प्रदर्शित सांस्कृतिक पहलू,
- **मंदिर एवं अन्य स्थापत्य कलाओं** का विवरण,

आदि को सारांश के रूप में प्रस्तुत कर उन्हें इंटरैक्टिव इन्फोग्राफिक्स के रूप में शामिल किया गया है, ताकि उन्हें समझने में आसानी हो, सीखने का सहज अनुभव मिल सके और कंटेंट को बेहतर तरीके से याद रखना सुनिश्चित किया जा सके।

परिशिष्ट: इसमें प्रीलिम्स एग्जाम को ध्यान में रखते हुए जैन एवं बौद्ध से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी को व्यापक तरीके से जोड़ा गया है, ताकि क्विक रिविजन को सुविधाजनक बनाया जा सके।

सुव्यवस्थित मानचित्र: इनका उपयोग सुर्ख़ियों में रहे त्योहारों, जनजातियों आदि के बारे में भौगोलिक और प्रासंगिक जानकारी प्रदान करने के लिए किया गया है।

क्विज़: अभ्यर्थी ने विषय को कितना बेहतर समझा है, इसके परीक्षण के लिए QR आधारित स्मार्ट क्विज़ को शामिल किया गया है।

VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION

सिविल सेवा मुख्य परीक्षा के लिए उत्तर लेखन

UPSC मुख्य परीक्षा में सबसे ज्यादा उत्तर लेखन का कौशल मायने रखता है। इसका कारण यह है कि उत्तर लिखने की कला ही अभ्यार्थियों के लिए अपने ज्ञान, समझ, विश्लेषणात्मक क्षमता और टाइम मैनेजमेंट के कौशल को प्रदर्शित करने के एक प्राथमिक साधन के रूप में कार्य करती है। मुख्य परीक्षा में प्रभावी उत्तर लेखन, इन्फॉर्मेशन को सही तरीके से पेश करने, विविध दृष्टिकोणों का आलोचनात्मक मूल्यांकन करने और संतुलित तर्क प्रस्तुत करने की क्षमता प्रदर्शित करने में अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। कुशलतापूर्वक एवं समग्रता से लिखा गया उत्तर, परीक्षा में अधिकतम अंक प्राप्त करने एवं इस प्रतिस्पर्धी माहौल में अभ्यार्थियों को भीड़ से अलग करने में सहायक होता है, जो अंततः UPSC मुख्य परीक्षा में उनकी सफलता का निर्धारण करता है।

प्रभावशाली उत्तर लेखन के प्रमुख घटक

संदर्भ की पहचानः प्रश्न के थीम या टॉपिक को समझना एवं उस टॉपिक के संदर्भ में ही अपना उत्तर लिखना।

सटीक एवं प्रभावी इंट्रोडक्शनः उत्तर शुरू करने के लिए भूमिका को आकर्षित ढंग से लिखने से, परीक्षक का ध्यान आकर्षित होता है एवं इससे उत्तर के आगे होने वाली चर्चाओं का संक्षिप्त विवरण मिलता है।

संतुलित निष्कर्षः मुख्य बिंदुओं को संक्षेप में लिखने का प्रयास करना चाहिए। यदि प्रश्न में पूछा गया हो तो अंतर्दृष्टि या सिफारिशें प्रस्तुत करनी चाहिए। साथ ही, अपने तर्क या चर्चा को संतोषजनक निष्कर्ष तक पहुंचाना भी आवश्यक होता है।

कंटेंट की प्रस्तुतीः विषय–वस्तु की व्यापक समझ का प्रदर्शन करना भी जरूरी होता है। इसके लिए प्रश्न से संबंधित सटीक तथ्यों, प्रासंगिक उदाहरणों एवं व्यावहारिक विश्लेषण को उत्तर में शामिल करना चाहिए।

संरचना एवं प्रस्तुतीकरणः उत्तर को क्लियर हेडिंग के साथ, सब–हेडिंग या बुलेट पॉइंट के माध्यम से व्यवस्थित तरीके से लिखना आवश्यक होता है। इसके अलावा, आसान समझ के लिए जानकारी को तार्किक ढंग से एवं बेहतर रूप से प्रस्तुत करना जरूरी होता है।

भाषाः संदर्भ के अनुरूप सटीक और औपचारिक भाषा का उपयोग करना आवश्यक होता है। साथ ही, शब्दजाल, आम बोलचाल की भाषा के इस्तेमाल या अस्पष्टता से बचते हुए अभिव्यक्ति में प्रवाह एवं स्पष्टता का प्रदर्शन करना आवश्यक होता है।

Vision IAS के "ऑल इंडिया GS मेन्स टेस्ट सीरीज़ और मेंटरिंग प्रोग्राम" से जुड़कर प्रभावशाली उत्तर लेखन की कला एवं रणनीति में महारत हासिल कीजिए। इस प्रोग्राम में शामिल हैं:

- उत्तर लेखन पर 'मास्टर क्लासेज'
- विस्तृत मूल्यांकन
- व्यक्तिगत मेंटरिंग
- फ्लेक्सिबल टेस्ट शेड्यूल
- व्यापक फीडबैक
- पोस्ट–टेस्ट डिस्कशन

यह हमेशा ध्यान रखिए कि **सिविल सेवा मुख्य परीक्षा UPSC CSE** की यात्रा का एक चरण मात्र नहीं है, बल्कि यह सिविल सेवाओं में प्रतिष्ठित पद तक पहुंचने का एक डायरेक्ट गेटवे है। इस प्रकार, यह परीक्षा आपकी आकांक्षाओं को वास्तविकता में बदल देता है।

"ऑल इंडिया GS मेन्स टेस्ट सीरीज़ और मेंटरिंग प्रोग्राम" के लिए रजिस्टर करने और ब्रोशर डाउनलोड करने हेतु QR कोड को स्कैन कीजिए।

टॉपर्स के एप्रोच और तैयारी की रणनीतियों को जानने के लिए QR कोड को स्कैन कीजिए

1. मूर्तियां, मंदिर एवं स्थापत्य (Sculptures, Temples and other Architecture)

1.1. यूनेस्को द्वारा मान्यता (UNESCO Recognition)

1.1.1. शांति निकेतन (Shanti Niketan)

सुर्ख़ियों में क्यों?

शांति निकेतन भारत का **41वां यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल (WHS)**[1] बन गया है।

अन्य संबंधित तथ्य

- यह **पश्चिम बंगाल का तीसरा यूनेस्को विश्व धरोहर** है। **पश्चिम बंगाल** के अन्य दो विश्व धरोहर हैं: **सुंदरवन राष्ट्रीय उद्यान** और **दार्जिलिंग माउंटेन रेलवे।**
- इसे आकार देने में रवीन्द्रनाथ टैगोर के साथ-साथ **सुरेंद्रनाथ कर, नंदलाल बोस, पैट्रिक और आर्थर गेडेस** की अहम भूमिका थी।
- अंतर्राष्ट्रीय स्मारक और स्थल परिषद (ICOMOS)[2] ने **"शांति निकेतन" को यूनेस्को WHS में शामिल** करने की सिफारिश की थी।

शांति निकेतन

अंतर्राष्ट्रीय स्मारक और स्थल परिषद (ICOMOS) के बारे में

- **उत्पत्ति:** इसे **1965 में स्थापित** किया गया था। यह **ऐतिहासिक इमारतों के वास्तुकारों और विशेषज्ञों की दूसरी बैठक/ कांग्रेस** का एक परिणाम है। यह बैठक 1964 में **वेनिस** में आयोजित हुई थी।
- **मुख्यालय: पेरिस, फ्रांस**
- **ICOMOS के बारे में:** यह यूनेस्को से जुड़ा एक **वैश्विक गैर-सरकारी संगठन** है। इसका उद्देश्य **स्मारकों, भवन परिसरों और सांस्कृतिक विरासत स्थलों के संरक्षण, सुरक्षा, उपयोग व बेहतरी** को बढ़ावा देना है।
- **सदस्य:** इसमें **भारत सहित लगभग 151 देश शामिल** हैं।
- **अन्य महत्वपूर्ण जानकारी:** यह यूनेस्को के विश्व विरासत कन्वेंशन के कार्यान्वयन के लिए **विश्व विरासत समिति का एक सलाहकार निकाय** है।
- **रिपोर्ट: हेरिटेज एट रिस्क**

विश्व विरासत स्थलों (WHS) के बारे में

- ये स्थल यूनेस्को की **विश्व धरोहर सूची में सूचीबद्ध धरोहर स्थल** होते हैं।
- ये स्थल **1972 के विश्व विरासत कन्वेंशन के तहत उत्कृष्ट सार्वभौमिक मूल्य** वाले स्थल के रूप में चिन्हित होते हैं।
- इन स्थलों को **तीन श्रेणियों यानी सांस्कृतिक, प्राकृतिक और मिश्रित** के तहत चुना जाता है।
    - भारत में **42 विश्व धरोहर स्थल** हैं। इनमें से **34 सांस्कृतिक, 7 प्राकृतिक** और **एक मिश्रित प्रकार** का है।
- WHS को सदस्य देशों द्वारा सौंपी गई **अस्थायी सूची (Tentative list)** के आधार पर नामांकित किया जाता है।
- विश्व विरासत सूची में शामिल होने के लिए किसी स्थल को **चयन संबंधी दस मानदंडों में से एक को पूरा** करना होता है।

[1] World Heritage Site

[2] International Council on Monuments and Sites

शांति निकेतन के बारे में

- **अवस्थिति:** यह पश्चिम बंगाल के **बीरभूम जिले** में स्थित है।
- **संक्षिप्त विवरण:** शांति निकेतन ने भारत की **प्राचीन, मध्यकालीन और लोक परंपराओं के साथ-साथ जापानी, चीनी, फारसी, बाली, बर्मी तथा डेको कला शैलियों (पश्चिमी यूरोप और संयुक्त राज्य अमेरिका)** को भी अपनाया है।
- **विशिष्टता:** यह **"कला की संपूर्ण कृति (Gesamtkunstwerk)"** का एक विशिष्ट भारतीय उदाहरण है। यहां **जीवन, शिक्षा, कार्य और कला** अपने स्थानीय एवं वैश्विक रूपों के साथ एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं।

अलग–अलग संस्कृतियों के स्थापत्य कला के मुख्य तत्व

संस्कृति	उदाहरण
चीन	गुहाघर की गोलाकार खिड़की
जापान	काष्ठ कृतियां
नव–गॉथिक और नव क्लासिकी	बंगला शैली का शांति निकेतन और सुरुल कुथिबारी
बौद्ध	**अजंता** (पाठ भवन) और **सांची** (छतिम तल की रेलिंग)
सल्तनत और मुगल काल	मेहराब, अग्रभाग और जालियां
बंगाली	चैती, यह एक ग्रामीण बंगाली झोपड़ी से प्रेरित है

- **स्थापना (प्रारंभिक दिन):**
  - स्थापना: 19वीं शताब्दी के मध्य में **महर्षि देवेन्द्रनाथ टैगोर (रवीन्द्रनाथ टैगोर** के पिता) ने इसकी स्थापना थी।
  - यहां मृदा अपरदन के कारण कुछ क्षेत्र **बंजर भूमि** में बदल गया था। इस घटना को स्थानीय भाषा में **खोई** कहा जाता है।
  - शांति निकेतन दो तरफ से **अजय** और **कोपाई** नदियों से घिरा हुआ है।

प्रमुख स्थापत्य और सांस्कृतिक विशेषताएं

- **समग्र रूप से: कांच का मंदिर** शांति निकेतन परिसर में बनी प्रथम संरचना थी। यह मंदिर किसी सम्प्रदाय विशेष के लिए नहीं था।
- **स्थानीय स्थापत्य शैली:**
  - **भवन निर्माण सामग्री:** भवन निर्माण में **मिट्टी और घास-फूस जैसी पारंपरिक सामग्री तथा मजबूत सीमेंट कंक्रीट** दोनों तरह की सामग्रियों का इस्तेमाल किया गया है।
  - **सजावट:** परिसर की दीवारें प्रमुख भारतीय कलाकारों द्वारा निर्मित **भित्तिचित्रों, फ्रेस्को विधि से बने चित्रों और मूर्तियों** से सुसज्जित हैं।
    - **कालो बारी** की दीवारें और गलियारे **भरहुत, महाबलीपुरम, मोहनजोदड़ो, मिस्र व असीरियन रूपांकनों** से अलंकृत है।

रवीन्द्रनाथ टैगोर के अधीन शांति निकेतन

- वर्ष 1901 में, रवीन्द्रनाथ टैगोर ने शांति निकेतन में **ब्रह्मचर्य आश्रम** की स्थापना की थी।
  - यह **तपोवन और गुरुकुल जैसी प्राचीन वैदिक परंपराओं** से प्रेरित था। इसमें वृक्षों की छाया के नीचे खुली हवा में कक्षाएं आयोजित की जाती थीं।
    - इस आश्रम को **1925 में पाठ-भवन** के नाम से जाना जाने लगा था।
- उन्होंने **शांति निकेतन के परिवेश के कारण वहां आश्रम की स्थापना** की थी।
- **विश्व भारती विश्वविद्यालय, शांति निकेतन:**
  - 1921 में **विश्व भारती** नामक एक **'विश्वविद्यालय'** की स्थापना की गई।
  - 1951 में, विश्व भारती एक **केंद्रीय विश्वविद्यालय** में बदल गया। **रवीन्द्रनाथ टैगोर**, इसके पहले कुलपति बने।

अन्य संबंधित सुर्खियां

बांग्लार माटी

- पश्चिम बंगाल ने **रवीन्द्रनाथ टैगोर** के 'बांग्लार माटी, बांग्लार जल' को अपना **राज्य गान** घोषित किया है।
- पश्चिम बंगाल विधान सभा ने **पोइला बैशाख (पहला बैशाख) को राज्य दिवस के रूप में मनाने** का भी प्रस्ताव पारित किया है। यह बंगाली कैलेंडर के पहले दिन यानी **15 अप्रैल** को पड़ता है।
- यह गीत **बंगाल विभाजन के खिलाफ शुरू किए गए बंग भंग आंदोलन के दौरान लिखा** गया था। यह गीत **रक्षाबंधन** के माध्यम से सांप्रदायिक सद्भाव को बढ़ावा देता है।
- टैगोर ने **आमार सोनार बांग्ला** (बांग्लादेश का राष्ट्रीय गान) की भी रचना की थी।

© Vision IAS

1.1.2. पवित्र होयसल मंदिर समूह (Sacred Ensembles of Hoysalas)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, **यूनेस्को ने कर्नाटक के पवित्र होयसल मंदिर समूह को भारत का 42वां विश्व धरोहर** घोषित किया है।

अन्य संबंधित तथ्य

- **पवित्र होयसल मंदिर समूह के तीन मंदिर निम्नलिखित हैं:**
    - **चेन्नाकेशव मंदिर, बेलूर;**
    - **होयसलेश्वर मंदिर, हलेबिडु;** तथा
    - **केशव मंदिर, सोमनाथपुरा**
- होयसल मंदिर समूह **कर्नाटक का चौथा विश्व धरोहर** है। कर्नाटक के अन्य तीन विश्व धरोहर हैं- **हम्पी, पत्तदकल और पश्चिमी घाट (कर्नाटक वाला भाग)।**

होयसल मंदिर और उनकी अनूठी विशेषताएं

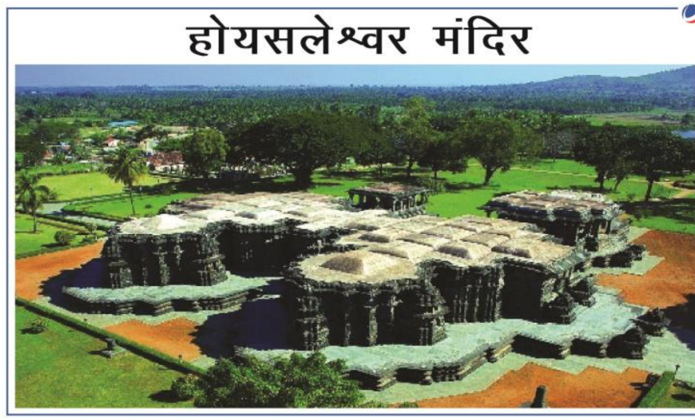

- **चेन्नाकेशव मंदिर (इसे विजयनारायण मंदिर के नाम से भी जाना जाता है):**
    - **निर्माणकर्ता:** इस मंदिर का निर्माण **1117 ई. में बेलूर क्षेत्र (हासन जिले) में राजा विष्णुवर्धन** ने करवाया था।
        - मंदिर **यगची नदी** के तट पर अवस्थित है।
    - **देवता:** यह एक **एककुट** (एक देवालय वाला मंदिर) है। इसके **गर्भगृह** में भगवान **कृष्ण की मूर्ति** स्थापित है।
        - यह मंदिर **भगवान विष्णु** को समर्पित है, जो चेन्नाकेशव के नाम से भी लोकप्रिय है। यहां **चेन्ना का अर्थ- सुंदर और केशव विष्णु का अन्य नाम है।**
        - यह मंदिर वर्तमान में भी श्रद्धालुओं के लिए खुला है। इन तीनों मंदिरों में से यही एकमात्र मंदिर है, जहां श्रद्धालुओं द्वारा पूजा-अर्चना की जाती है।
- **होयसलेश्वर मंदिर (हलेबिडु मंदिर):**
    - **निर्माणकर्ता:** इसे **1121 ईस्वी में हलेबिडु (हासन जिले)** में बनवाया गया था। राजा **विष्णुवर्धन** ने इस मंदिर के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।
        - यह मंदिर **द्वारसमुद्र झील** के तट पर अवस्थित है।
    - **देवता:** यह **नटराज के रूप में भगवान शिव** को समर्पित है। शिव का यह रूप **'संहार के देवता'** के रूप में विख्यात है।

- **केशव मंदिर:**
    - **निर्माणकर्ता:** इसका निर्माण **होयसल राजा नरसिंह तृतीय** के शासनकाल में एक उच्च अधिकारी **सोमनाथ ने 1268 ईस्वी में सोमनाथपुरा (मैसूर)** में करवाया था।
        - यह मंदिर **कावेरी नदी** के तट पर अवस्थित है।
    - **देवता:** यह एक **त्रिकुट मंदिर** है। यह मंदिर **भगवान कृष्ण** के तीन रूपों अर्थात् **जनार्दन, केशव और वेणुगोपाल** को समर्पित है।

होयसल मंदिर स्थापत्य शैली

- **होयसल मंदिर समूह मंदिर निर्माण की मिश्रित या वेसर शैली** में निर्मित है। इस शैली की मुख्य विशेषताएं निम्नलिखित हैं:

- यह शैली **द्रविड़ और नागर शैली** का मिश्रित रूप है।
- इस शैली पर **'भूमिजा' शैली** का अत्यधिक प्रभाव है।
  - **भूमिजा शैली** उत्तर भारतीय **शिखर** का एक प्रकार है।
- इसके अलावा, **कल्याणी चालुक्य क्षेत्र की कर्नाट द्रविड़ शैली** का भी इस पर प्रभाव देखा जा सकता है।

मंदिर स्थापत्य की मुख्य विशेषताएं

- **शैली:** इस शैली के मंदिर एक **ऊंचे चबूतरे (अधिष्ठान) पर तारकीय योजना** में निर्मित हैं।
- **मंदिर निर्माण में सेलखड़ी** का उपयोग किया गया है। सेलखड़ी मुलायम और नर्म होता है।
- **गर्भगृह:** यह मंदिर का सबसे पवित्र भाग माना जाता है। इस कक्ष के केंद्रीय भाग अर्थात् **पीठ (आसन)** पर मुख्य देवता की मूर्ति **स्थापित** होती है।
- **मंडप:** यह मंदिर का वह भाग है, जहां पर लोग **प्रार्थना** के लिए एकत्र होते थे:
  - मंडप परिसर में **वृत्ताकार स्तंभ** भी बने हैं। प्रत्येक स्तंभ के **शीर्ष कोष्ठक पर चार मूर्तियां** उत्कीर्ण हैं।
- **गोपुरम (मंदिर का प्रवेश द्वार):** इस शैली में निर्मित मंदिरों का गोपुरम काफी ऊंचा है।
- **मूर्तिकला: शालभंजिका** (एक स्त्री की मूर्ति), यह मूर्तिकला की एक सामान्य शैली है।
- **विमान (गर्भगृह या आंतरिक गर्भगृह के ऊपर की संरचना):** यह भीतर से सामान्य लेकिन बाहर से भव्य रूप से सुसज्जित है।
- **अन्य विशेषताएं:** इसकी छत पर **टोड़ा गुंबद (corbelled domes)** बने हुए हैं।

होयसल राजवंश

उत्पत्ति	उन्हें **कर्नाटक के मलनाड क्षेत्र** का मूल वासी माना जाता है। हालांकि, कुछ अभिलेख उन्हें **उत्तर भारत के यादव वंश** के साथ भी जोड़ते हैं।
संस्थापक	**राजा नृप काम द्वितीय** उसने **पश्चिमी गंग राजवंश** के साथ गठबंधन बनाया था।
शासनकाल	10वीं से 14वीं शताब्दी ईस्वी
राजधानी	**बेलूर,** जिसे बाद में **द्वारसमुद्र (आधुनिक हलेबिडु)** स्थानांतरित कर दिया गया था।
साम्राज्य विस्तार	वर्तमान **कर्नाटक से तमिलनाडु** तक का बहुत बड़ा क्षेत्र।
प्रमुख शासक	**विष्णुवर्धन राय:** इसके शासनकाल में **कर्नाटक क्षेत्र में श्री रामानुजाचार्य** का प्रभाव बहुत बढ़ गया था तथा **श्रीवैष्णवाद** अत्यधिक लोकप्रिय होने लगा था। इसने **तलकाडु के युद्ध में गंगवाड़ी से चोलों को निष्कासित** कर दिया था। इस उपलक्ष्य में उसने **तलकाडुगोंडा** की उपाधि धारण की थी। **वीर बल्लाल द्वितीय:** होयसलों को **चालुक्यों** की अधीनता से मुक्त कराया और एक **स्वतंत्र साम्राज्य की स्थापना** की थी।
प्रशासन	होयसल साम्राज्य क्रमशः **नाडुओं, कम्पन, विषय** और **देश** में विभक्त था।
पतन	इसका अंतिम शासक वीर बल्लाल तृतीय था। वह **1343 ई. में मदुरै के युद्ध** में मारा गया था। तब, **हरिहर प्रथम** ने होयसल साम्राज्य के संप्रभु राज्यक्षेत्रों को **तुंगभद्रा नदी क्षेत्र** में अपने प्रशासन के अधीन क्षेत्रों में विलय कर लिया था।

1.2. मंदिर (Temple)

1.2.1. कोणार्क सूर्य मंदिर (Konark Sun Temple)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में आयोजित हुए G-20 शिखर सम्मेलन में विश्व के नेताओं के सामने प्रसिद्ध **कोणार्क सूर्य मंदिर के पहिए पर उत्कीर्ण चित्र** का प्रदर्शन किया गया।

© Vision IAS

कोणार्क सूर्य मंदिर के बारे में

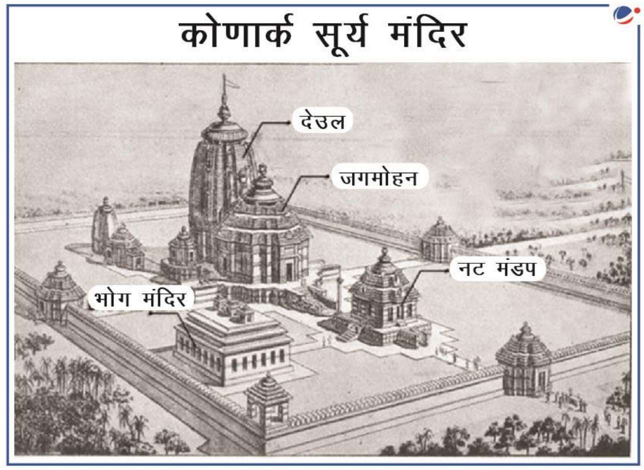

- कोणार्क सूर्य मंदिर एक **यूनेस्को विश्व विरासत स्थल** है। यह मंदिर **ब्लैक पैगोडा, अर्क क्षेत्र और पद्म क्षेत्र** के रूप में भी लोकप्रिय है।
- कोणार्क सूर्य मंदिर के पहिए का निर्माण **13वीं शताब्दी में पूर्वी गंग वंशीय शासक नरसिंह देव प्रथम** ने कराया था।
  - यह मंदिर **भगवान सूर्य** को समर्पित है। ये पहिए **सूर्य की खगोलीय गति** को दर्शाने के लिए बनाए गए हैं।
  - मंदिर का निर्माण **क्लोराइट, लेटराइट और खोंडलाइट चट्टानों** से किया गया है।
- कोणार्क सूर्य मंदिर के बारे में नोबेल पुरस्कार विजेता **रवींद्रनाथ टैगोर** ने कहा था कि यह एक ऐसी जगह है **जहां के पत्थरों की भाषा मनुष्य की भाषा से श्रेष्ठ है।**
- **भारत में अन्य प्रमुख सूर्य मंदिर:** मार्तंड सूर्य मंदिर (**जम्मू और कश्मीर**), कटारमल सूर्य मंदिर (**उत्तराखंड**), सूर्य पहर मंदिर (**असम**), दक्षिणार्क सूर्य मंदिर (**बिहार**), अरसावल्ली सूर्य नारायण मंदिर (**आंध्र प्रदेश**), सूर्यनार कोविल (**तमिलनाडु**), मोढेरा सूर्य मंदिर (**गुजरात**) **और** ब्राह्मण्य देव मंदिर (**मध्य-प्रदेश**)।

मंदिर की संरचना

- **काल/ स्थापत्य: कलिंग स्थापत्य कला।**
- **प्रवेश द्वार:** मंदिर का मुख्य प्रवेश द्वार **गजसिम्हा (हाथी पर शेर)** की मूर्ति से सुसज्जित है। यहां गज का अर्थ **हाथी** और सिंह/ सिम्हा का अर्थ **शेर** है।
  - पौराणिक कथाओं के अनुसार, यहां **शेर अहंकार का और हाथी धन का प्रतीक** है तथा ये दोनों (अहंकार व धन) ही मनुष्य के पतन का कारण बनते हैं।
- **नाट्य मंडप:** प्रवेश द्वार के बाद नाट्य मंडप आता है। यह सूर्य मंदिर में नृत्य और रंगमंच के लिए बना एक विशाल कक्ष है।
- **जगमोहन:** यह मंदिर का **सभा कक्ष** है।
- **देउल:** जगमोहन के बाद देउल नामक संरचना आती है। यह एक **गर्भगृह** है, जहां पर मुख्य देवता की प्रतिमा स्थापित की गई है।
- **भोग-मंदिर (रसोईघर):** यह वह स्थान है, जहां पर देवता और श्रद्धालुओं के लिए भोग बनाया जाता है।

कलिंग स्थापत्य शैली

- **प्रकृति:** मंदिर निर्माण की कलिंग स्थापत्य शैली उत्तर भारत की **नागर शैली** और दक्षिण भारत की **द्रविड़ शैली** का मिश्रित रूप है।
- **विशिष्ट स्थापत्य कला शैली:** कलिंग शैली में निर्मित मंदिरों में दो विशिष्ट संरचनाएं होती हैं- एक गर्भगृह **(देउल)** और एक सभा कक्ष **(जगमोहन)**। हालांकि, इस शैली के आरंभिक मंदिरों में **जगमोहन संरचना नहीं** होती थी।
  - इस शैली के बाद के बने मंदिरों में **नाट्य-मंडप** और फिर **भोग-मंदिर संरचना** का निर्माण किया जाने लगा था।
- **श्रेणियां:** कलिंग स्थापत्य शैली को सामान्यतः **तीन मुख्य श्रेणियों** में बांटा गया है-
  - **रेखा देउल;**
  - **पीढ़ा देउल या भद्र देउल; तथा**
  - **खाखरा देउल।**

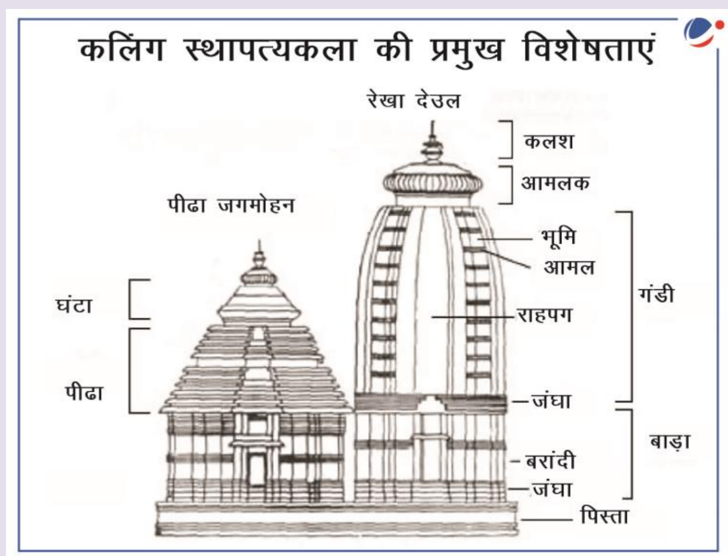

मंदिर की स्थापत्य विशेषताएं

- **सूर्य की किरणें:** इस सूर्य मंदिर को इस तरह से डिजाइन किया गया है कि सूर्योदय के समय **सूर्य की पहली किरण मंदिर के गर्भगृह और इष्टदेव पर पड़े।**
- **रथ की योजना:** कोणार्क सूर्य मंदिर की योजना **सूर्यदेव के रथ** के समान है।

- **कोणार्क रथ मंदिर के पहिए:** पहियों की परिधियां (rims) **पक्षियों, जानवरों और पर्ण समूह** की नक्काशी से अलंकृत हैं। पहियों की तीलियों में **बने चित्रफलकों** पर अलग-अलग **विलासितापूर्ण मुद्राओं में महिला आकृतियां** उत्कीर्ण हैं।
- **सात घोड़े:** भगवत गीता में इन **सात घोड़ों को 'गायत्री', 'उष्णिक', 'अनुस्तुव', 'वृहति', 'पंगति', 'त्रिष्टुप' और 'जगती'** नाम दिया गया है। ये संभवतः **वेदों के पवित्र छंदों की लयबद्ध प्रस्तुति** का प्रतीक हैं।
  - इन सात घोड़ों के **नाम भी इंद्रधनुष के सात रंगों पर आधारित** हैं: सहस्रार (बैंगनी), इंद्रनील (इंडिगो), नीला, हरितह (हरा), पीत (पीला), कौसुंभह (नारंगी) और रक्त (लाल)।
- **मंदिर में नक्काशी:**
  - **युद्ध अश्व (War Horses):** कोणार्क मंदिर के दक्षिणी हिस्से के सामने युद्ध अश्वों की नक्काशीदार दो भव्य मूर्तियां हैं।
    - युद्ध अश्व प्रतिमा को **ओडिशा सरकार ने अपने राजकीय चिन्ह के रूप में स्वीकार** किया है।
  - **सूर्य देव:** मंदिर में तीन महत्वपूर्ण स्थलों पर सूर्य देव की तीन प्रभावशाली मूर्तियों को इस तरह से स्थापित किया गया है कि सूर्योदय, दोपहर और सूर्यास्त के समय सूर्य का प्रकाश इन मूर्तियों पर अलग-अलग पड़ता है।
  - **अन्य:** कुछ नक्काशीदार आकृतियां **भावमय मुद्रा** में उत्कीर्ण की गई हैं, जबकि अन्य आकृतियों में **मिथकीय जीवों, हाथियों व पक्षियों** को उत्कीर्ण किया गया है।
  - **कोणार्क पहिए की अलग-अलग व्याख्याएं:** समय, जीवन चक्र, राशियां, धर्मचक्र, धूपघड़ी, लोकतंत्र का प्रतीक।

कोणार्क–युद्ध के घोड़े

पूर्वी गंग राजवंश

संस्थापक	**कमर्णव** को पूर्वी गंग राजवंश का संस्थापक माना जाता है।
समयावधि	• **इंद्रवर्मन प्रथम** ने **जिर्जिंगी ताम्रपत्र अनुदान** को **537 ईस्वी** में जारी किया था। • इस वंश का सबसे प्रतापी शासक **अनंतवर्मन चोडगंग** था।
प्रमुख शहर	• **राजधानी:** कलिंगनगर • **वर्तमान क्षेत्र:** ओडिशा, साथ ही पश्चिम बंगाल, आंध्र प्रदेश और छत्तीसगढ़ के बड़े हिस्से।
बाहरी आक्रमणों और आंतरिक संघर्षों के कारण इसका पतन हुआ, जिससे **विजयनगर साम्राज्य** का उदय हुआ।	

1.2.2. शारदा मंदिर (Sharda Temple)

सुर्ख़ियों में क्यों?

जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा जिले के टीटवाल गांव में नियंत्रण रेखा (LoC) के करीब नवनिर्मित शारदा देवी मंदिर में नवरात्रि पूजा का आयोजन किया गया।

अन्य संबंधित तथ्य

- यह मंदिर **पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (PoK) की नीलम घाटी में स्थित पारंपरिक शारदा देवी पीठ** की ओर जाने वाले मार्ग पर अवस्थित है।

शारदा मंदिर

शारदा देवी पीठ के बारे में

- शारदा पीठ इस क्षेत्र के **तीन प्रमुख तीर्थस्थलों में से एक** था। अन्य दो प्रमुख **तीर्थ स्थल मार्तंड सूर्य मंदिर और अमरनाथ मंदिर हैं।**
- यह मंदिर **मार्तंड मंदिर से काफी मिलता-जुलता** है।
- प्रसिद्ध विद्वान और यात्री **अलबरूनी** ने मंदिर का उल्लेख एक **प्रतिष्ठित पूजनीय तीर्थ स्थल** के रूप में किया है।

शारदा देवी पीठ का महत्त्व

- **धार्मिक महत्त्व:** यह **18 महाशक्ति पीठों** में से एक है। यह **हिंदू देवी सरस्वती** को समर्पित है।
    - देवी शारदा **कश्मीरी पंडितों की कुलदेवी** है। कई लोग देवी को **कश्मीरा पुरवासिनी** (कश्मीर की निवासी) के नाम से भी जानते हैं।
- **शैक्षिक महत्त्व:** एक समय यह पीठ **वैदिक ग्रंथों, शास्त्रों, और टीकाओं की उच्चतर शिक्षा के लिए अध्ययन का प्रमुख केंद्र था।** इसकी तुलना **नालंदा और तक्षशिला** जैसे प्राचीन शिक्षा केंद्रों से की जाती थी।
    - ऐसा माना जाता है कि एक विश्वविद्यालय के रूप में शारदा पीठ की अपनी स्वयं की एक लिपि थी, जिसका नाम **शारदा लिपि** था।
    - इस विश्वविद्यालय में **5,000 से अधिक विद्यार्थी अध्ययन** करते थे। इसके परिसर में एक विशाल **पुस्तकालय** भी था।
    - ऐसा कहा जाता है कि **प्रसिद्ध विद्वान आदि शंकराचार्य ने भी शारदा विश्वविद्यालय में अध्ययन** किया था।
    - यह भी मान्यता है कि **वैष्णव परंपरा** के सबसे महत्वपूर्ण प्रतिपादकों में से एक **श्री रामानुजाचार्य ने भी शारदा पीठ का भ्रमण किया था और इसी जगह अपने ग्रंथ 'श्री भाष्य' की रचना की थी।**

1.3. सुर्ख़ियों में रहे अन्य मंदिर (Other temples in news)

1.3.1. त्र्यंबकेश्वर मंदिर (Trimbakeshwar temple)

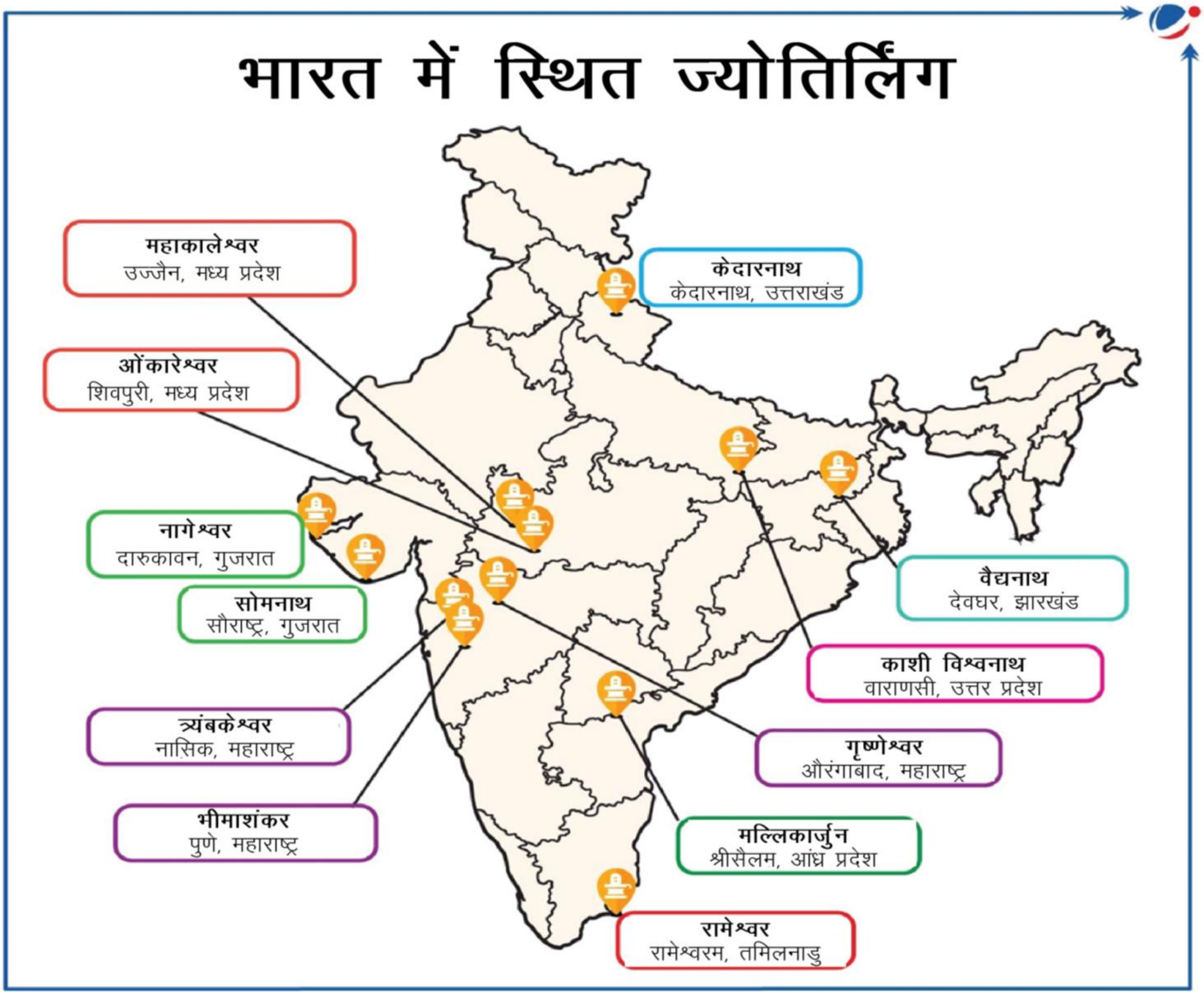

- त्र्यंबकेश्वर मंदिर **भगवान शिव के 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है। ज्योतिर्लिंग को हिंदू धर्म में भगवान शिव का प्रतीक** माना जाता है।
    - यह मंदिर **ब्रम्हगिरी पर्वत की तलहटी** में स्थित है। यहां से **गोदावरी नदी** बहती है।
    - इसका निर्माण **तीसरे पेशवा बालाजी बाजीराव (1740-1760) ने एक पुराने मंदिर के स्थान** पर करवाया था।
    - शब्द **"त्र्यंबक" त्रिदेवों (भगवान ब्रह्मा, भगवान विष्णु और भगवान महेश)** को इंगित करता है।
    - यह **मंदिर स्थापत्यकला की नागर शैली** में निर्मित है। इसका **निर्माण काले पत्थर से** किया गया था। यह ज्यादातर **भारत के उत्तरी भागों** में प्रचलित शैली है।

1.3.2. तुंगनाथ मंदिर (Tungnath Temple)

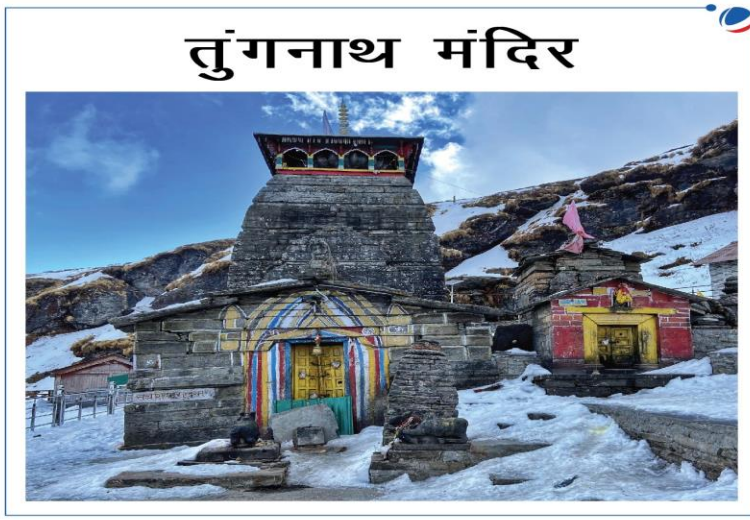

- यह मंदिर **उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग जिले** में अवस्थित है। यह मंदिर 1,000 वर्ष से भी अधिक पुराना है। एक मान्यता के अनुसार **पांडव अर्जुन** ने इस मंदिर की नींव रखी थी।
    - यह **दुनिया में सर्वाधिक ऊंचाई पर स्थित शिव मंदिर** है। यह **12,000 फीट से अधिक की ऊंचाई** पर स्थित है।
    - इसे **'तृतीय केदार'** भी कहा जाता है, क्योंकि यह **गढ़वाल हिमालय में मौजूद शिव मंदिरों के 'पंच केदार' समूह** का हिस्सा है। पंच केदार में **केदारनाथ, मद्महेश्वर, तुंगनाथ, रुद्रनाथ और कल्पनाथ** शामिल हैं

1.3.3. जागेश्वर मंदिर और पार्वती कुंड (Jageshwar Temple and Parvati Kund)

- **जागेश्वर मंदिर जटा गंगा नदी** के पास स्थित है। यहां स्थित **शिव मंदिर** अलग-अलग देवताओं के 100 से अधिक प्राचीन लघु मंदिरों से घिरा हुआ है।
    - ये मंदिर **गुप्तोत्तर और पूर्व-मध्यकाल** के हैं। यहां स्थित ज्यादातर मंदिरों का निर्माण और पुनर्निर्माण **कत्यूरी राजवंश के शासकों** ने कराया था।
    - **स्कंद पुराण और लिंग पुराण** के अनुसार, **शिवलिंग की पूजा सबसे पहले जागेश्वर** से आरंभ हुई थी।
    - यह क्षेत्र **भगवान शिव की पूजा करने वाले पुनरुत्थानवादी संप्रदाय 'लकुलीश शैववाद'** का भी केंद्र था।
- **पार्वती कुंड** वह स्थान माना जाता है, जहां **भगवान शिव और देवी पार्वती ने ध्यान** किया था। यह स्थान लगभग 5,338 फीट की ऊंचाई पर अवस्थित है।

1.3.4. श्री सीताराम स्वामी मंदिर, त्रिशूर, केरल (Sree Seetharama Swamy Temple, Thrissur, Kerala)

- **त्रिशूर पूरम को सभी पूरम (केरल के मंदिर उत्सव) की जननी माना** जाता है।
    - यह **त्रिशूर के वडक्कुनाथन मंदिर में हर साल मनाया** जाता है।
- यह मंदिर भगवान **श्री सीताराम, भगवान अयप्पा और भगवान शिव को समर्पित** है।
    - **त्रिशूर पूरम महोत्सव के अवसर पर** सीताराम स्वामी मंदिर में 55 फीट ऊंची **केरल की सबसे बड़ी हनुमान प्रतिमा का अनावरण** किया है।

 © Vision IAS

1.3.5. तिरुनेल्ली मंदिर, केरल (Thirunelly Temple, Kerala)

* यह मंदिर **पारंपरिक केरल स्थापत्य कला** शैली में निर्मित है। यह केरल के वायनाड में ब्रह्मगिरि पहाड़ियों के पास **पापनाशिनी नदी के तट पर अवस्थित है।**
* इस प्रकार, यह मंदिर **त्रिदेवों {शिव, विष्णु (मुख्य देवता) और ब्रह्मा} से धन्य है।**

VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION

करेंट अफेयर्स की बेहतर तैयारी कैसे करें?

करेंट अफेयर्स सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी की आधारशिला है, जो प्रीलिम्स, मेन्स और इंटरव्यू तीनों चरणों में जरूरी होता है। परीक्षा के प्रश्न डायनेमिक स्रोतों से तैयार किए जा रहे हैं। ये प्रश्न सीधे वर्तमान की घटनाओं से जुड़े होते हैं या स्टैटिक कंटेंट तथा वर्तमान की घटनाओं, दोनों से जुड़े होते हैं। इस संदर्भ में, करेंट अफेयर्स से अपडेट रहना अभ्यर्थी को सिविल सेवा परीक्षा के नए ट्रेंड को समझने में सक्षम बनाता है। सही रिसोर्सेज और एक रणनीतिक दृष्टिकोण के जरिए अभ्यर्थी इस विशाल सेक्शन को अपना सकारात्मक पक्ष बना सकते हैं।

करेंट अफेयर्स के लिए दोहरी स्तर वाली रणनीति

करेंट अफेयर्स के लिए दोहरी स्तर वाली रणनीति

अपनी फाउंडेशन को मजबूत करना

न्यूज़पेपर पढ़ना: फाउंडेशन

वैश्विक और राष्ट्रीय घटनाओं की व्यापक समझ हेतु न्यूज़पेपर पढ़ने के लिए प्रतिदिन एक घंटा समर्पित करना चाहिए।

न्यूज़ टुडे: संदर्भ की सरल प्रस्तुति

न्यूज़पेपर पढ़ने के साथ-साथ, न्यूज़ टुडे भी पढ़िए, जिसमें लगभग 200 या 90 शब्दों में करेंट अफेयर्स का सारांश प्रस्तुत किया जाता है। यह रिसोर्स अभ्यर्थियों को महत्वपूर्ण न्यूज की पहचान करने, तकनीकी शब्दों और घटनाओं को समझने में मदद करता है।

मासिक समसामयिकी मैगजीन: गहन विश्लेषण

व्यापक कवरेज और घटनाओं के विस्तृत विश्लेषण के लिए मासिक समसामयिकी मैगजीन आपकी जरूरत पूरी कर सकती है। इससे अलग-अलग क्षेत्रों में विभिन्न घटनाओं के संदर्भ, महत्त्व और निहितार्थ को समझने में सुविधा होती है।

तैयारी और रिविजन में महारत हासिल करना

वीकली फोकस: फाउंडेशन को मजबूत करना

किसी टॉपिक के बारे में अपनी समझ को मजबूत करने के लिए वीकली फोकस का संदर्भ लीजिए। इसमें किसी प्रमुख मुद्दे के विभिन्न पहलुओं और आयामों के साथ-साथ स्टैटिक तथा डायनेमिक घटकों को शामिल किया जाता है।

आर्थिक सर्वेक्षण और बजट के हाईलाइट्स तथा सारांश

इसमें आसानी से समझ के लिए जटिल जानकारी को एक कॉम्पैक्ट प्रारूप में प्रस्तुत किया जाता है। आर्थिक सर्वेक्षण और केंद्रीय बजट के सारांश डाक्यूमेंट्स से आप महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

PT 365 और Mains 365: परीक्षा में प्रदर्शन बढ़ाना

पूरे वर्ष के करेंट अफेयर्स की तैयारी के लिए PT 365 और Mains 365 का उपयोग कीजिए। इससे प्रीलिम्स और मेन्स, दोनों के लिए रिविजन में भी मदद मिलेगी।

Vision IAS का त्रैमासिक रिवीजन डॉक्यूमेंट उन छात्रों के लिए उपयोगी रिसोर्स है, जो 2-3 महीनों से मंथली अपडेट पढ़ने से चूक गए हैं। यह प्रमुख घटनाक्रमों का सारांश प्रदान करके लर्निंग में निरंतर सहायता प्रदान करता है।

ब्रोशर पढ़ने के लिए दिए गए QR कोड को स्कैन कीजिए

"याद रखिए, करेंट अफेयर्स को केवल याद ही नहीं रखना होता है, बल्कि घटनाओं के व्यापक निहितार्थों और अंतर्संबंधों को समझना भी होता है। जिज्ञासा के साथ आगे बढ़िए; समय के साथ, यह बोझ कम होता जाएगा और यह एक ज्ञानवर्धक अनुभव बन जाएगा।"

2. स्थापत्य एवं मूर्तिकला (Architecture and Sculpture)

2.1. मोहनजोदड़ो की नर्तकी की मूर्ति (Mohenjo-Daro's Dancing Girl)

सुर्ख़ियों में क्यों?

दिल्ली में आयोजित **इंटरनेशनल म्यूजियम एक्सपो 2023** का शुभंकर **मोहनजोदड़ो की नर्तकी की मूर्ति** से प्रेरित था।

अन्य संबंधित तथ्य

- 47वां अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय दिवस (IMD)[3] मनाने के लिए **'आजादी का अमृत महोत्सव' के हिस्से के रूप में इंटरनेशनल म्यूजियम एक्सपो** का आयोजन किया गया था।
  - 2023 के लिए **IMD की थीम** थी- **"संग्रहालय, संधारणीयता और कल्याण[4]"।**
- इसका शुभंकर **चन्नापटनम कला शैली में लकड़ी से बनी नर्तकी था, जो मोहनजोदड़ो की नर्तकी की मूर्ति** से प्रेरित था।

मोहनजोदड़ो की नर्तकी की मूर्ति के बारे में

- **नर्तकी की मूर्ति** सिंधु घाटी सभ्यता (IVC) के **मोहनजोदड़ो** पुरास्थल से प्राप्त हुई थी। यह मूर्ति लगभग 2500 ईसा पूर्व की है।
- ब्रिटिश पुरातत्वविद अर्नेस्ट मैके ने 1926 में **मोहनजोदड़ो** की खुदाई से **नर्तकी की मूर्ति** प्राप्त की थी।
- वर्तमान में, यह **राष्ट्रीय संग्रहालय (नई दिल्ली)** में सुरक्षित रखी है।
- इसे **'लॉस्ट वैक्स' विधि** का उपयोग करके बनाया गया था।
- इसे इसकी नृत्य मुद्रा के कारण 'डांसिंग गर्ल' (नर्तकी) नाम दिया गया।

चन्नापटनम कला शैली

- यह शैली **कर्नाटक के रामनगर जिले के चन्नापटना कस्बे** में प्रचलित है। इस कस्बे को **"खिलौनों का शहर"** भी कहा जाता है।
- **2005** में इस शैली को **भौगोलिक संकेतक (GI) टैग** के माध्यम से संरक्षण प्रदान किया गया था।
- इस शैली में **ज्यादातर आइवरी काष्ठ** का उपयोग किया जाता है। हालांकि, **शीशम व चंदन की लकड़ियों का भी कभी-कभी उपयोग** होता है।
- **वनस्पति रंगों का उपयोग करके काष्ठ कलाकारी** में रंग भरे जाते हैं। साथ ही, **चमकीला बनाने के लिए अत्यधिक अपघर्षक गुण वाली घास** का उपयोग किया जाता है।
- **टीपू सुल्तान ने स्थानीय कलाकारों को इस कला में प्रशिक्षित करने के लिए फ़ारसी कलाकारों** को आमंत्रित किया था।

2.2. नटराज की प्रतिमा (Nataraja Statue)

सुर्ख़ियों में क्यों?

दिल्ली में आयोजित G-20 शिखर सम्मेलन के आयोजन स्थल पर **भारत मंडपम परिसर में दुनिया की सबसे ऊंची नटराज की प्रतिमा स्थापित** की गई।

इस प्रतिमा के बारे में

- यह प्रतिमा **अष्टधातु (8 धातु)** से निर्मित है।
  - अष्टधातु को **ऑक्टो-अलॉय** भी कहा जाता है। इसमें आठ धातुओं, यथा- **सोना, चांदी, तांबा, सीसा, जस्ता, टिन, लोहा और पारा** का मिश्रण होता है।
- इसे **लॉस्ट वैक्स प्रॉसेस (लुप्त मोम प्रक्रिया विधि)** का उपयोग करके बनाया गया है।

[3] International Museum Day

[4] Museums, Sustainability and Well Being

नटराज (नृत्य का देवता) की प्रतिमा के बारे में

- इस प्रतिमा का स्वरूप **सृष्टि के चक्रीय रूप से सृजन और विनाश** को प्रदर्शित करता है।
  - यह नृत्य **'पंचकृत्य' या शिव की पांच क्रियाओं-** सृजन, संरक्षण, विनाश, तिरोभाव और अनुग्रह की अभिव्यक्ति है।
  - **चोल शासक** नटराज भगवान शिव को अपना कुल देवता मानते थे।

नटराज की मूर्ति की मुख्य विशेषताएं

- इसमें शिव अपने **ऊपरी दाहिने हाथ में डमरू (डमरू की ध्वनि सृष्टि के सृजन का प्रतीक है) धारण किए हुए हैं।**
- उनके **ऊपरी बाएं हाथ में शाश्वत अग्नि है (यह अग्नि सृष्टि के विनाश का प्रतीक है)।**
- उनका **निचला दाहिना हाथ 'अभयहस्त मुद्रा' में है। यह भय को दूर करने और सुरक्षित अस्तित्व का आश्वासन देने का प्रतीक है।**
- उनका निचला बायां हाथ **'दोलहस्त मुद्रा'** में है।
- इस **प्रतिमा में एक बौने जैसी आकृति को शिव के दाहिने पैर के नीचे दबा हुआ** दिखाया गया है। यह बौने जैसी आकृति **अज्ञानता व भ्रम का प्रतीक दैत्य 'अप्समार'** है। यह दैत्य मानव के पथभ्रष्ट होने का कारण है।
- शिव **भुजंगत्रासित मुद्रा** में अपना बांया पैर उठाए हुए हैं। यह मुद्रा **'तिरोभाव'** यानी भक्त के मन से माया या भ्रम का पर्दा हटा देने की द्योतक है।
- **वृत्ताकार ज्वाला की माला** नृत्यरत संपूर्ण आकृति को घेरे हुए है।

- **नटराज मूर्तिकला का विकास:**
  - साक्ष्यों के अनुसार, शिव की कांस्य प्रतिमाएं सर्वप्रथम **7वीं शताब्दी ईस्वी और 9वीं शताब्दी ईस्वी** के मध्य में **पल्लव** काल में सामने आई थीं।
  - इस प्रतिमा का विश्व-प्रसिद्ध वर्तमान स्वरूप **चोल शासकों के संरक्षण में विकसित** हुआ था।
  - दसवीं शताब्दी के दौरान इस कला की प्रतिष्ठित संरक्षक **विधवा चोल रानी, सेम्बियान महा देवी** थीं।
- **नटराज से संबंधित मंदिर:**
  - **तमिलनाडु के चिदंबरम** शहर में **तिल्लै नटराज मंदिर** है।
    - इस मंदिर का संबंध **चोल शासक परांतक प्रथम** से है।
    - यह मंदिर जिस जगह अवस्थित है, वह **विश्व की चुंबकीय भूमध्य रेखा का केंद्र बिंदु** है।
- नटराज की मूर्तियां कोनेरिराजपुरम के **उमा महेश्वर मंदिर** और तंजावुर के **बृहदेश्वर मंदिर** में भी मौजूद हैं।

चोल कालीन कला और स्थापत्य कला

शिल्पकला

- चोल कालीन **कांस्य मूर्तियों का निर्माण लॉस्ट वैक्स प्रॉसेस** के माध्यम से किया जाता था।
- इन मूर्तियों की एक विशेषता यह भी है कि उनमें नीचे छेद होते हैं।

चित्रकला

- **राजराजेश्वर मंदिर और गंगईकोंडचोलपुरम मंदिर** की आंतरिक दीवारें **पौराणिक आख्यानों** से चित्रित हैं।
- **बृहदेश्वर मंदिर** में एक चित्र उत्कीर्ण है, जिसका संबंध **मार्को पोलो** से बताया जाता है।

संगीत और नृत्य कला

- इस काल में **कुडामुला, वीणा और बांसुरी** जैसे वाद्य यंत्रों का इस्तेमाल किया जाता था। **देवदासियां** संगीत और गायन में निपुण थीं।
- ऐसा माना जाता है कि **भरतनाट्यम का शास्त्रीय रूप** चोल वंश के संरक्षण में ही विकसित हुआ था।

मंदिर

- चोल कालीन मंदिर **समूह को दो वर्गों में वर्गीकृत** किया जा सकता है-
  - आरंभिक मंदिर, **पल्लव स्थापत्य कला** से प्रभावित थे।
  - बाद के मंदिरों पर **चालुक्य स्थापत्य कला का प्रभाव** दिखाई देता है।
- **स्थापत्य शैली:** द्रविड़ शैली।
- **चोल कालीन मंदिरों की मुख्य विशेषताएं:**
  - मंदिर ऊंची चहारदीवारी से घिरे हुए हैं।
  - मंदिरों में **गर्भगृह** और **अंतराल** (वेस्टिबुल) नामक संरचनाएं मौजूद हैं।
  - मंदिर अत्यंत भव्य और विशाल हैं। **ऊंचे विमान** (आंतरिक गर्भगृह के ऊपर की संरचना) या **गोपुरम** (प्रवेश द्वार) मंदिरों की मुख्य विशेषताएं हैं।
  - मंदिर निर्माण में **नीस और ग्रेनाइट** का इस्तेमाल किया गया है।
  - **महत्वपूर्ण उदाहरण:**
    - आरम्भिक चोल कालीन मंदिर समूह- **विजयालय मंदिर।**
    - बाद के चोल कालीन मंदिर समूह- **तंजावुर का बृहदेश्वर मंदिर, गंगईकोंडचोलपुरम का बृहदेश्वर मंदिर।**

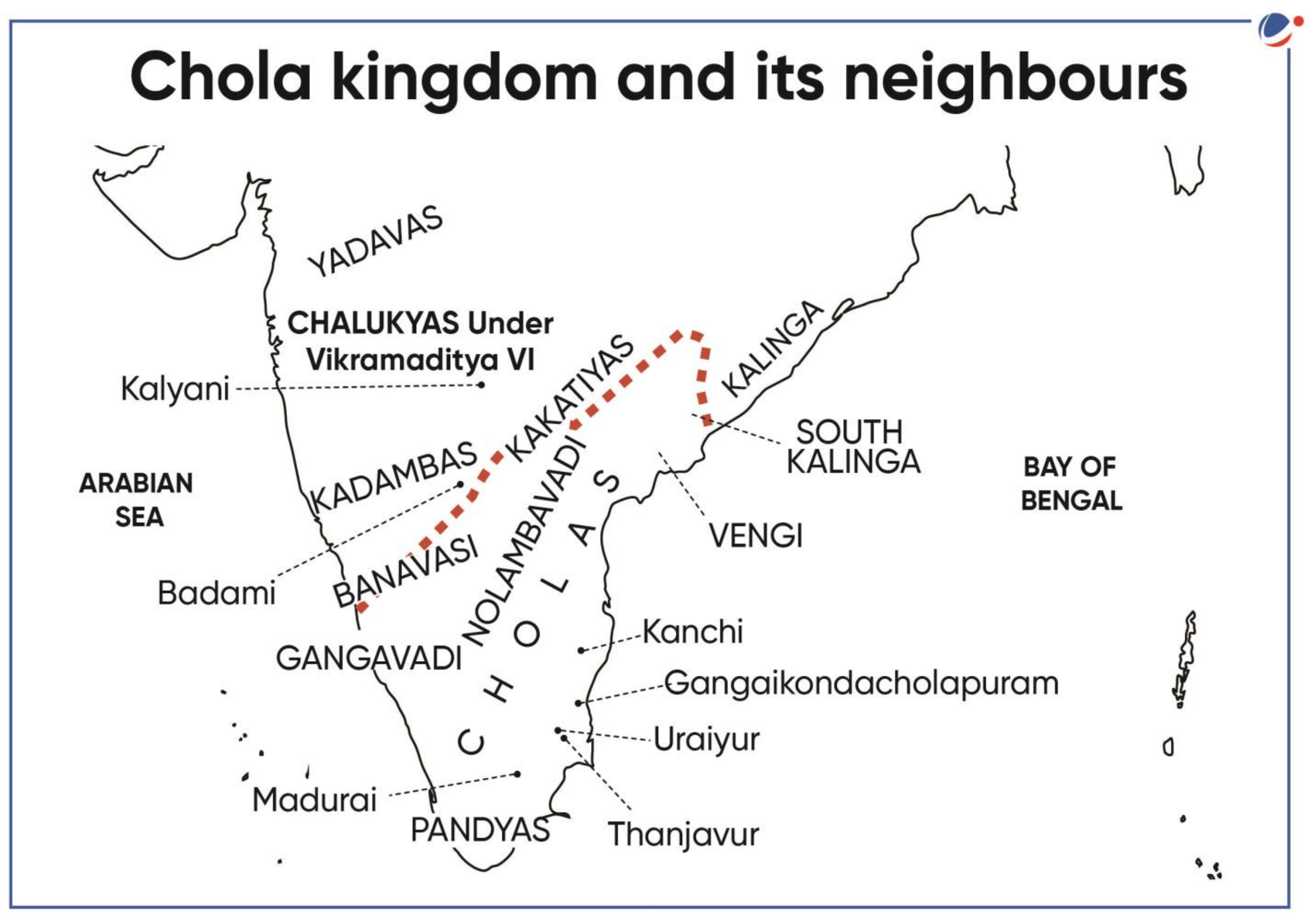

चोल राजवंश

संस्थापक	विजयालय
प्रमुख शासक	• **परांतक प्रथमः** इसे **मदुरै (पांड्यों की राजधानी) को नष्ट करने वाला** कहा जाता था। सिंहली आक्रमणकारियों को पराजित किया तथा पांड्य राज्य पर भी अधिकार कर लिया था। • **राजराज चोल (985–1014 ई.)**: इसने **उत्तरी श्रीलंका, लक्षद्वीप और मालदीव द्वीपों** पर अधिकार कर लिया था। • **राजेंद्र चोल-I (1014–1044 ई.)**: इसने **गंगैकोंडचोल** की उपाधि धारण की थी। इसने मलय **प्रायद्वीप और मलय द्वीपसमूह के कुछ भागों को विजित** कर लिया था। • **कुलोत्तुंग प्रथमः** पूर्वी तट को चोल साम्राज्य में मिला लिया था।
प्रमुख नगर	• **राजधानीः तंजावुर (तंजौर) और बाद में गंगैकोंडचोलपुरम।** • **क्षेत्रीय राजधानीः कांचीपुरम और मदुरै;** जिनमें कभी–कभी दरबार लगता था। • **वर्तमान क्षेत्रः** तमिलनाडु के पेरम्बलुर, अरियालुर, नागपट्टिनम, पुडुकोट्टई, वृद्धाचलम तथा पिचावरम जिले।
संस्कृति	• उन्होंने उत्कृष्ट **कांस्य मूर्तियों** की ढलाई की थी। मुख्य रूप से हिंदू देवताओं **(नटराज की कांस्य प्रतिमा)** की मूर्तियां बनाई जाती थी। • **भूमि कर** आय का सबसे बड़ा एकल स्रोत था। • **पुरावु–वरितिनैक–कटम** नामक भू–राजस्व की प्रणाली अस्तित्व में थी। • अधिकारियों को **जीविता** नाम से वेतन के रूप में भूखंड दिया जाता था।
भाषा	• राजभाषा **तमिल** थी। यह जनता के लिए शिक्षा का माध्यम भी थी। • **संस्कृत भाषा पूजा–पाठ के लिए प्रयोग** की जाने वाली भाषा थी।
प्रशासन	• चोलों ने एक कई वर्षों तक शासन किया था। • साम्राज्य को **प्रांतों** में विभाजित किया गया था, जिन्हें मंडलम के रूप में जाना जाता था। • प्रत्येक गाँव ने **स्वशासी इकाई** के रूप में कार्य किया था। • **राजा प्रमुख निर्णय लेने वाला केंद्रीय प्राधिकारी था।**
सामाजिक–धार्मिक परिस्थितियां	• चोल शासकों ने **बौद्ध धर्म, जैन धर्म, शैववाद और वैष्णववाद** सभी को संरक्षण प्रदान किया था। • समाज में उच्च स्तर की **साक्षरता और शिक्षा** की उपस्थिति थी। **संस्कृत शिक्षा ब्राह्मणों तक ही सीमित थी।** धार्मिक मठ (या गतिका) शिक्षा के केंद्र थे। • जाति का **'इडंगै'** और **'वलंगै'** में विभाजन था। शाही परिवारों में **सती व देवदासी प्रथा** जैसी प्रथाएं प्रचलित थीं।

चोल वंश को पांड्य वंश ने पराजित किया था।

2.2.1. सेंगोल (Sengol)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, **प्रधान मंत्री** ने **तिरुवावदुतुरै अधीनम (मठ)** के प्रमुख द्वारा प्रस्तुत **सेंगोल या राजदंड (Sceptre)** को नए संसद भवन में स्थापित किया।

अन्य संबंधित तथ्य

- **पंडित जवाहरलाल नेहरू ने 14 अगस्त, 1947 को तमिलनाडु के तिरुवावदुतुरै अधीनम (मठ) से आए कुछ आधीनमों (पुरोहितों) से सेंगोल ग्रहण** किया था। इसे **सत्ता हस्तांतरण के प्रतीक के रूप में** जाना जाता है।
- **'सेंगोल' तमिल शब्द 'सेम्मई'** से लिया गया है, जिसका अर्थ है **'नीतिपरायणता (Righteousness)'**। यह इस धारणा को दर्शाता है कि **हाथ से उत्कीर्ण और शीर्ष पर विराजमान नंदी अपनी निर्भीक दृष्टि से सब देख रहे हैं।**
    - सेंगोल को धारण करने वाले व्यक्ति को **न्यायपूर्ण और निष्पक्ष रूप से शासन करने का 'आदेश' (तमिल में 'आणई') होता है।**
- चोल साम्राज्य में 'सेंगोल' को **कर्तव्य पथ, सेवा पथ और राष्ट्र पथ का प्रतीक** माना जाता था।
    - इतिहासकारों का मत है **कि सत्ता के हस्तांतरण को दर्शाने के लिए राजदंड सौंपना संगम युग के बाद से प्रचलन में** है। **पुरनानूरू, कुरुंतोकाई, पेरुम्पानात्रुप्पदई और कलितोगै** जैसे ग्रंथों में इसका उल्लेख मिलता है।

तिरुवावदुतुरै अधीनम (मठ) के बारे में

- इस मठ को 16वीं शताब्दी में एक **शैव संत और विद्वान नमशिवाय मूर्ति ने स्थापित** किया था। प्रसिद्ध शैव संत और **तिरुमंत्रम् के लेखक तिरूमूलर ने तिरुवावदुतुरै में एक पीपल के वृक्ष के नीचे प्रबोधन** प्राप्त किया था। तिरूमूलर **'सिद्धर'** भी थे। आत्मज्ञान प्राप्त लोगों को **तमिल भाषा में "सिद्धर"** कहा जाता है।
- यह मठ **कावेरी नदी के दक्षिणी तट** पर स्थित है।

चोल प्रशासन के बारे में

- **चोल प्रशासन में राजा सबसे शक्तिशाली था।** हालांकि **उसे सलाह देने के लिए मंत्रियों की एक परिषद भी होती थी।**
    - **शीर्ष अधिकारियों को पेरुन्तरम के नाम से जाना जाता था,** जबकि निचले अधिकारियों को **सिरुन्तरम** के नाम से जाना जाता था।
- चोल साम्राज्य **मंडलम या प्रांतों** में विभाजित था और मंडलम **वलनाडुओं एवं नाडुओं** में बंटे हुए थे।
- चोल प्रशासन ने अपने सारे साम्राज्य के **गांवों में स्थानीय स्वशासन को प्रोत्साहित** किया था।
    - बहुत से अभिलेखों (उत्तरमेरूर शिलालेख सहित) में दो सभाओं का उल्लेख मिलता है। इनमें से एक **'उर' और दूसरी 'सभा या महासभा'** थी।
        - **उर:** यह गांव की एक **आम सभा** थी।
        - **महासभा:** यह **'अग्रहार'** कहे जाने वाले **ब्राह्मण गांवों के वयस्क सदस्यों की सभा थी।**
- भूमि कर के अलावा चोल शासकों के राजस्व के दूसरे स्रोत भी थे जैसे **व्यापारिक चुंगी, पेशों पर लगाए जाने वाले कर** आदि।
    - चोल राजाओं ने **कुछ समृद्ध भू-सामंतों को मुवेंदवेलन** (तीन राजाओं को अपनी सेवा प्रदान करने वाला एक वेलन या किसान), **अरइयार** (प्रधान) आदि जैसी उपाधियां प्रदान की थीं।

चोल साम्राज्य में भूमियों की अलग-अलग श्रेणियां:

- **वेल्लनवागाई:** गैर-ब्राह्मण किसान स्वामी की भूमि।
- **ब्रह्मदेय:** ब्राह्मणों को उपहार में दी गई भूमि।
- **शालाभोग:** किसी विद्यालय के रखरखाव के लिए भूमि।
- **देवदान, तिरुनमट्टक्कनी:** मंदिरों को उपहार में दी गई भूमि।
- **पल्लिच्चंदम:** जैन संस्थाओं को दान में दी गई भूमि।

2.3. G20 शिखर सम्मलेन में प्रदर्शित अन्य सांस्कृतिक पहलू (Other Cultural Aspects Showcased in G20)

VISIONIAS INSPIRING INNOVATION

G20 शिखर सम्मलेन में प्रदर्शित सांस्कृतिक पहलू

- G20 शिखर सम्मेलन की थीम थी **"वसुधैव कुटुम्बकम्"।** इस वाक्यांश को **महोपनिषद** से लिया गया है।

G20 शिखर सम्मेलन में प्रदर्शित जनजातीय कला और कलाकृतियां

- **"पिथोरा चित्रकारी"** गुजरात के **राठवा, भील, नायक और ताड़ी** जनजातियों द्वारा बनाई जाती है तथा **राजस्थान एवं मध्य प्रदेश** के कुछ हिस्सों में प्रचलित है।
- **"अंगोरा और पश्मीना शॉल" लेह-लद्दाख और हिमाचल प्रदेश के उत्पाद** हैं। इन्हें **बोध और भूटिया** जनजातियों द्वारा बुना जाता है।
- राजस्थान की मीणा जनजाति का **"अम्बाबाड़ी धातु शिल्प"।**
- **मध्य प्रदेश की गोंड पेंटिंग** (इसे हाल ही में भौगोलिक संकेत टैग प्राप्त हुआ) और **ओडिशा के कारीगरों द्वारा बनाई गई सौरा पेंटिंग।**
- **लोंगपी मृदभांड (मिट्टी के बर्तन),** जिसे मणिपुर की **तांगखुल नागा जनजातियां** बनाती हैं। लोंगपी मृदभांड को बनाने के लिए कुम्हार के चाक का उपयोग नहीं किया जाता है।

G20 में प्रत्येक देश ने दो प्रदर्शनियां प्रदर्शित कीं

भारत की ओर से प्रदर्शन किया गया गया-

- **शारदा लिपि में हस्तलिखित** ऋग्वेद पांडुलिपि।
  - मैक्स मुलर द्वारा संस्कृत से अंग्रेजी में अनुवादित ऋग्वेद।
  - **अन्य प्रमुख अनुवाद:**
    - विलियम जोन्स द्वारा अंग्रेजी में अनुवादित गीत गोविंद।
    - जॉर्ज बुहलर द्वारा अनुवादित पैयालच्छी (Paiyalachchhi)। यह प्राकृत का सबसे पुराना शब्दकोष है।
- **अष्टाध्यायी (पाणिनि)** के हस्तलिखित संस्करण का भी प्रदर्शन किया गया।
  - अष्टाध्यायी संस्कृत व्याकरण से संबंधित है।

भारतीय इतिहास में लोकतांत्रिक परंपरा

प्राचीन भारत में लोकतांत्रिक परंपरा

- **'अथर्ववेद'** में दो तरह की सभा, अर्थात्, **"सभा" और "समिति"** का उल्लेख में मिलता है।
- बौद्ध और जैन ग्रंथों में महाजनपद काल के कई गणतांत्रिक राज्यों की सूची दी गई है, उदाहरण के लिए- वैशाली का लिच्छवी गणराज्य।
- **बौद्ध सिद्धांत** में राजा और बौद्ध संघ के लीडर्स के चुनाव के मानदंडों का वर्णन है।

PT 365 - संस्कृति

 उत्तरमेरूर शिलालेख (उत्तरमेरूर के नाम से विख्यात)	▸ यह शिलालेख, **चोल शासक परांतक प्रथम (907-955 ई.)** के शासनकाल में 920 ई. के आसपास का है। ▸ **उत्तरमेरूर,** चोलकालीन एक **प्राचीन गाँव** है। इसे कभी **चतुर्वेदीमंगलम्** के नाम से जाना जाता था। यह तमिलनाडु में **चेन्नई** के निकट स्थित है। ▸ **चोल कुदावोलाई चुनाव प्रणाली पर उत्तरमेरूर शिलालेख** के अनुसार प्रत्येक गांव को **कुडुम्बु (वर्तमान में प्रचलित प्रशासन इकाई वार्ड)** के रूप में वर्गीकृत किया गया था। यहां **महासभा के प्रतिनिधि चुने** जाते थे। ▹ इस अभिलेख में **महासभा की संरचना एवं संगठन के बारे में विस्तार से वर्णन** किया गया है। ▸ **चुनाव लड़ने के लिए योग्यता:** जमीन होनी चाहिए, अपना घर होना चाहिए, वेदों का ज्ञान होना चाहिए तथा आयु 35 वर्ष से अधिक और 70 वर्ष से कम आयु होनी चाहिए। ▸ **अयोग्यता:** पिछले 3 वर्षों से समिति का सदस्य हो, कदाचार, रिश्वत लेना, दूसरे की संपत्ति का दुरूपयोग करना आदि।
 खालिमपुर तामपत्र शिलालेख	▸ यह ताम्र शिलालेख **पाल शासक धर्मपाल** से संबंधित है। ▸ इसमें बताया गया है कि कैसे **राजा गोपाल** को **एक अयोग्य शासक के स्थान पर लोगों द्वारा चुना गया था।**
 महास्थान अभिलेख	▸ यह मौर्यकालीन अभिलेख है। ▸ इसमें सम्राट अशोक के समय के अकाल का वर्णन मिलता है।

भगवान बसवेश्वर का अनुभव मंडप
	▸ इसकी स्थापना **भगवान बसवेश्वर ने दर्शनशास्त्र और अनुभव के लिए लोगों को एकत्रित** करने हेतु की थी।
	▸ **अनुभव मंडप, मानव जाति के इतिहास में सबसे शुरूआती संसदों** में से एक थी।
	  ▹ असाधारण उपलब्धि वाले एक महान योगी **प्रभुदेव इसके अध्यक्ष** थे। **भगवान बसव ने इसके प्रधान मंत्री** के रूप में कार्य किया था।
	  ▹ अनुभव मंडप के **सदस्यों को लोगों द्वारा निर्वाचित नहीं** किया जाता था। उन्हें **मंडप के उच्च अधिकारी चुनते या मनोनीत** करते थे।
	
	भगवान बसवेश्वर (1105-1167)
	▸ वे **12वीं शताब्दी के महान कवि** थे। उनका **जन्म वर्तमान कर्नाटक में** हुआ था।
	▸ वे दक्षिण भारत में **सामाजिक-धार्मिक सुधार, अनुभव मंडप, वचन साहित्य और लिंगायत आंदोलन** के लिए जाने जाते हैं।
	▸ 13वीं शताब्दी में **पलकुरिकी सोमनाथ ने बसव पुराण** की रचना की थी। इसमें बसवन्ना के जीवन और विचारों का पूरा विवरण मिलता है।

2.4. नया संसद भवन (New Parliament House)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, देश के नए संसद भवन का उद्घाटन किया गया।

अन्य संबंधित तथ्य

- इस भवन का निर्माण **सेंट्रल विस्टा विकास/ पुनर्विकास योजना** के तहत किया गया है।
    - सेंट्रल विस्टा योजना को **1931** में शुरू किया गया था। इस योजना में **राष्ट्रपति भवन, नॉर्थ और साउथ ब्लॉक, संसद भवन, अभिलेख कार्यालय** और **इंडिया गेट** के निर्माण को शामिल किया गया था। साथ ही, इसमें **राजपथ** (वर्तमान कर्तव्य पथ) के दोनों ओर के नागरिक उद्यान का विकास भी शामिल था। ध्यातव्य है कि अभिलेख कार्यालय (Record Office) को बाद में राष्ट्रीय अभिलेखागार (National Archives) का नाम दिया गया।
- **एक भारत श्रेष्ठ भारत की भावना:** नए संसद भवन का आकार **त्रिकोणीय** है। इसे पद्मश्री वास्तुकार **बिमल पटेल** द्वारा डिजाइन किया गया है। यह डिजाइन भारत की सांस्कृतिक विविधता से प्रेरित है। इसे अगले 150 वर्षों की जरूरतों को पूरा करने के लिए डिजाइन किया गया है।

एक भारत श्रेष्ठ भारत की भावना
- लोक सभा कक्ष **राष्ट्रीय पक्षी, मोर की थीम** पर आधारित है।
- राज्य सभा कक्ष **राष्ट्रीय पुष्प, कमल** की थीम पर आधारित है।
- नए संसद भवन के प्रांगण में **राष्ट्रीय वृक्ष, बरगद** लगाया गया है।
- संसद भवन में **सेंगोल या राजदंड (Sceptre)** को **अध्यक्ष (Speaker) की कुर्सी के बगल में स्थापित** किया गया है। ध्यातव्य है कि सेंगोल या राजदंड सत्ता-हस्तांतरण का प्रतीक है।
- **राष्ट्रीय प्रतीक को संसद भवन के शीर्ष पर स्थापित** किया गया है। **यह सारनाथ में अशोक स्तंभ के शीर्ष** पर बनी सिंह आकृतियों का अनुरूपण है।
- नए संसद भवन को **भदोही (उत्तर प्रदेश) के विश्व प्रसिद्ध हाथ से बुने कालीन** से सजाया गया है। भदोही हाथ से बुने खूबसूरत कालीन के लिए विख्यात है, इसलिए इसे **'कालीन शहर (Carpet city)'** के नाम से भी जाना जाता है।
- इसमें **जल, थल और नभ को समर्पित छह द्वार** बनाए गए हैं। ये भारतीय सभ्यता की अनुकूल प्रकृति के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हैं।
- नए भवन के **मुख्य द्वार पर अशोक चक्र** बना हुआ है और **सत्यमेव जयते** लिखा हुआ है।
- संसद भवन में लगी **सागौन की लकड़ियों को नागपुर से, संगमरमर को गुजरात से, बलुआ पत्थर (लाल और सफेद) को राजस्थान** से मंगवाया गया है। साथ ही, **त्रिपुरा से मंगवाई गई बांस की लकड़ी इसके फर्श** पर लगाई गई है।

नई संसद में 6 प्रवेश द्वार हैं और इनमें से प्रत्येक एक अलग भूमिका दर्शाता है-

औपचारिक प्रवेश द्वार और उनके संरक्षक

गज द्वार (उत्तरी द्वार)		• गज की प्रतिमा **ज्ञान, उन्नति, धन, बुद्धि और स्मृति का प्रतिनिधित्व** करती है। इसके साथ ही, यह लोकतंत्र के निर्वाचित प्रतिनिधियों की आकांक्षाओं का भी प्रतीक है। • यह प्रतिमा **कर्नाटक के बनवासी में स्थित मधुकेश्वर मंदिर में निर्मित एक समान प्रतिमा** से प्रेरित है।
गरुड़ द्वार (पूर्वी द्वार)		• पूर्वी प्रवेश द्वार पर **चील के समान गरुड़** की प्रतिमा स्थापित है। यह **देश के लोगों और प्रशासकों की आकांक्षाओं की प्रतीक है।** • यह **तमिलनाडु के कुंभकोणम में मौजूद नायक काल की एक मूर्ति** से प्रेरित है।
अश्व द्वार (दक्षिणी द्वार)		• इस द्वार पर सतर्क और तैयार **घोड़े की प्रतिमा है, जो धैर्य, शक्ति, क्षमता और गति** का प्रतीक है। इसके अलावा, अश्व **शासन की गुणवत्ता** का भी प्रतीक होता है। • यह प्रतिमा **ओडिशा के कोणार्क सूर्य मंदिर में स्थापित अश्व प्रतिमाओं** से प्रेरित है।

सार्वजनिक प्रवेश द्वार और उनके संरक्षक

शार्दुल द्वार (पश्चिमी द्वार)		● शार्दुल एक पौराणिक जीव है। इसे सबसे शक्तिशाली और सभी जीवित प्राणियों में अग्रणी माना गया है। यह द्वार **देश के लोगों की शक्ति का प्रतीक है।** ● यह **मध्य प्रदेश के मुरैना के सिहोनिया में स्थित शिव मंदिर में निर्मित समान प्रतिमा** से प्रेरित है।
हंस द्वार (उत्तर–पूर्व)		● हंस लोगों को लोकतंत्र के सबसे महत्वपूर्ण गुण **विवेक और आत्म–बोध की शक्ति का स्मरण** करता है। ● यह **कर्नाटक में हम्पी के विजय विट्ठल मंदिर में निर्मित समान प्रतिमा** से प्रेरित है।
मकर द्वार		● मकर एक पौराणिक जलीय जीव है। यह **देश के लोगों के बीच विविधता में एकता का प्रतिनिधित्व** करता है। ● यह **प्रतिमा कर्नाटक के हलेबिडु में होयसलेश्वर मंदिर में निर्मित समान प्रतिमा से** प्रेरित है।

संबंधित सुर्ख़ियां : चौसठ योगिनी मंदिर (Chausath Yogini Temple)

- ऐसा माना जाता है कि पुराने संसद भवन का डिज़ाइन **मध्य प्रदेश के मितौली गांव में स्थित चौसठ योगिनी मंदिर** से प्रेरित था।

अन्य संबंधित जानकारी

पुराने संसद भवन को वास्तुकार **एडविन लुटियंस और हर्बर्ट बेकर** ने डिजाइन किया था।

- भव्य **चौसठ योगिनी मंदिर गोलाकार** है। इसमें 64 योगिनियों के प्रति समर्पित 64 कक्ष हैं। इसके मध्य में एक मंदिर है, जो **भगवान शिव को समर्पित** है।
    - 64 योगिनियां **शक्तिशाली योद्धा थीं तथा तंत्र व योग-विद्या से संबंधित थीं।**
- इसका निर्माण **1323 ईस्वी के आस-पास कच्छपघात वंश के राजा देवपाल** ने करवाया था।

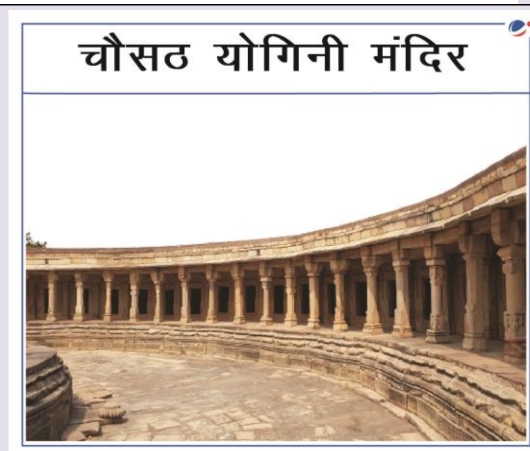

2.5. जंतर-मंतर (Jantar Mantar)

सुर्ख़ियों में क्यों?

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI)[5] ने **दिल्ली स्थित जंतर-मंतर वेधशाला के संरक्षण, परिरक्षण, पुनरुद्धार और उचित कार्यक्षमता के लिए एक नई विशेषज्ञ समिति का गठन** किया है।

जंतर-मंतर के बारे में

- **निर्माण:** महाराजा जयसिंह द्वितीय ने उत्तरी भारत में 5 खगोलीय वेधशालाओं का निर्माण करवाया था।
- **पर्यवेक्षण:** इसे निम्नलिखित में इस्तेमाल किया जाता था-
    - ग्रहों के बीच समय और अंतर का अध्ययन करने में,
    - ग्रहों की गति/ स्थिति और अलग-अलग स्थानों पर समय का पर्यवेक्षण करने में।

महाराजा सवाई जय सिंह द्वितीय (1686-1743)

- वे **आमेर (राजपूत राज्य) के शासक** थे।
- वह मुग़लों के जागीरदार थे, उन्हें सम्राट **औरंगजेब** द्वारा 'सवाई' (एक और उसका चौथाई) की उपाधि दी गई थी।
- **उन्होंने जयपुर शहर का निर्माण कराया था।** उनके समय के यूरोपीय यात्री जैसे फ्रांसीसी लुई रूसेल्ट और अंग्रेज बिशप, हेबर आदि शहरी योजना निर्माण में जय सिंह की अद्वितीय उत्कृष्टता से बहुत प्रभावित थे

---
[5] Archaeological Survey of India

- **अलग-अलग स्थानों पर वेधशालाओं का निर्माण करने का कारण:** इन वेधशालाओं का एक-दूसरे से अधिक दूरी पर निर्माण किया गया ताकि अलग-अलग निर्देशांकों से रीडिंग की तुलना करके सटीकता में सुधार किया जा सके।
- **निर्माण की टाइमलाइन:** 1724 ई. में **दिल्ली** में पहली वेधशाला का निर्माण किया गया था। 1738 ई. में **जयपुर** में अंतिम वेधशाला का निर्माण किया गया था।
- **वर्तमान परिस्थितियां:** पूरे उत्तर भारत में **पांच वेधशालाओं** का निर्माण किया गया था। ये हैं: दिल्ली, जयपुर, मथुरा, वाराणसी और उज्जैन। इनमें से **मथुरा वेधशाला** का अस्तित्व समाप्त हो गया है।
    - **जयपुर वेधशाला में सबसे अधिक और अलग-अलग प्रकार के उपकरण हैं।**
    - इन उपकरणों में ऐसे कई उपकरण शामिल हैं, जो अन्य स्थलों पर नहीं बनाए गए हैं, जैसे - कप्पल यंत्र, राशिवलय यंत्र और उन्नतांश यंत्र आदि।

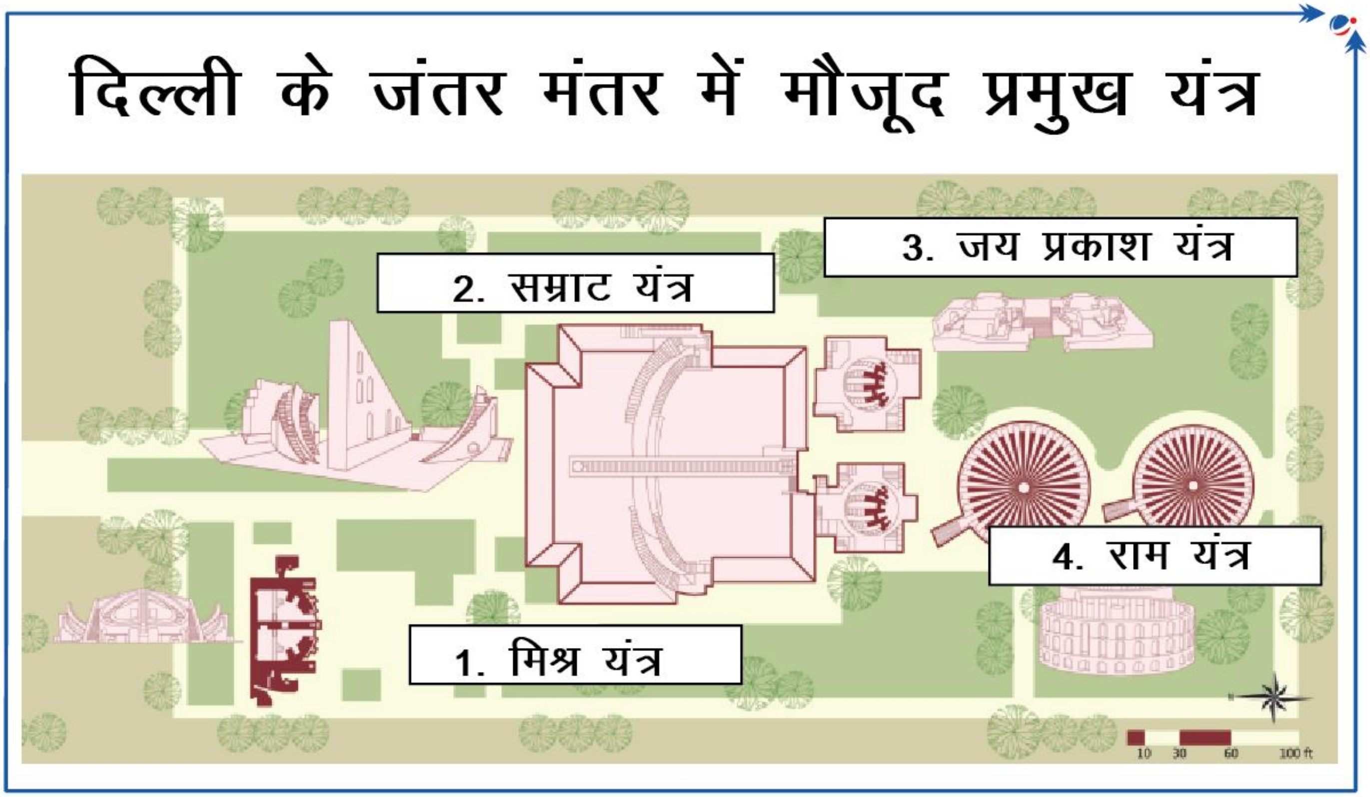

2.6. सुर्ख़ियों में रहे अन्य स्थापत्य (Other Architectural-Related News)

2.6.1. गोलकोंडा (गोलकुंडा) का किला (Golconda Fort)

- गोलकोंडा किले का इतिहास **13वीं शताब्दी की शुरुआत** से संबंधित है। तब इस क्षेत्र पर पर **काकतीय** राजवंश शासन करता था। उसके बाद 16वीं और 17वीं शताब्दी में इस पर **कुतुब शाही** सुल्तानों ने शासन किया।
    - गोलकोंडा किले की वर्तमान स्थापत्यकला कुतुब शाही सुल्तानों की देन है। यह किला एक **विशाल ग्रेनाइट निर्मित स्थापत्य** के रूप में विख्यात है।
    - गोलकोंडा **कुतुब शाही सुल्तानों की प्रधान राजधानी** थी।
    - फतेह दरवाजा (विजय द्वार) पर **ध्वनिक प्रभाव (Acoustical effects)** गोलकोंडा की इंजीनियरिंग के कई प्रसिद्ध आश्चर्यों में से एक है।

2.6.2. सिरी किला (Siri Fort)

- सिरी किले का निर्माण **13वीं शताब्दी में अलाउद्दीन खिलजी** ने करवाया था।
    - सिरी को **दिल्ली के आठ शहरों में से एक** माना जाता है।
    - अलाउद्दीन खिलजी ने **1303 ईस्वी में अपनी राजधानी सिरी की नींव** रखी थी।
    - उसने सिरी कस्बे की जल आवश्यकता को पूरा करने के लिए **हौज खास नामक एक जलाशय की भी खुदाई** करवाई थी।

- उसने एक **अर्ध-गोलाकार प्रवेश द्वार** का भी निर्माण कराया था। इसे **अलाई दरवाजा** के नाम से जाना जाता है। इसमें **घोड़े की नाल की आकार का मेहराब है, जिसमें कमल की आकृतियां** उकेरी गई हैं।

2.6.3. एकात्मता की मूर्ति (Statue of Oneness)

- **आदि शंकराचार्य** को **जगद्गुरु** भी कहा जाता है। उन्होंने 8वीं शताब्दी में **अद्वैत वेदांत (द्वैत को न मानना) दर्शन का प्रतिपादन** किया था।
  - उनका **जन्म केरल के कलाडी** में हुआ था।
  - **ओंकारेश्वर में आदि शंकराचार्य** की 108 फुट ऊंची मूर्ति का अनावरण किया है। इसे **एकात्मता की मूर्ति** नाम दिया गया है।

भारत की अन्य प्रसिद्ध प्रतिमाएं

नाम	समर्पित	स्थान
स्टैच्यू ऑफ **यूनिटी**	**सरदार वल्लभभाई पटेल**	गुजरात के केवडिया
स्टैच्यू ऑफ **इक्वैलिटी**	**संत श्री रामानुजाचार्य**	हैदराबाद
स्टैच्यू ऑफ **पीस**	जैन भिक्षु **आचार्य श्री विजय वल्लभ सूरीश्वर**	राजस्थान
स्टैच्यू ऑफ **प्रोस्पेरिटी**	**नादप्रभु केंपेगौड़ा**	बेंगलुरु

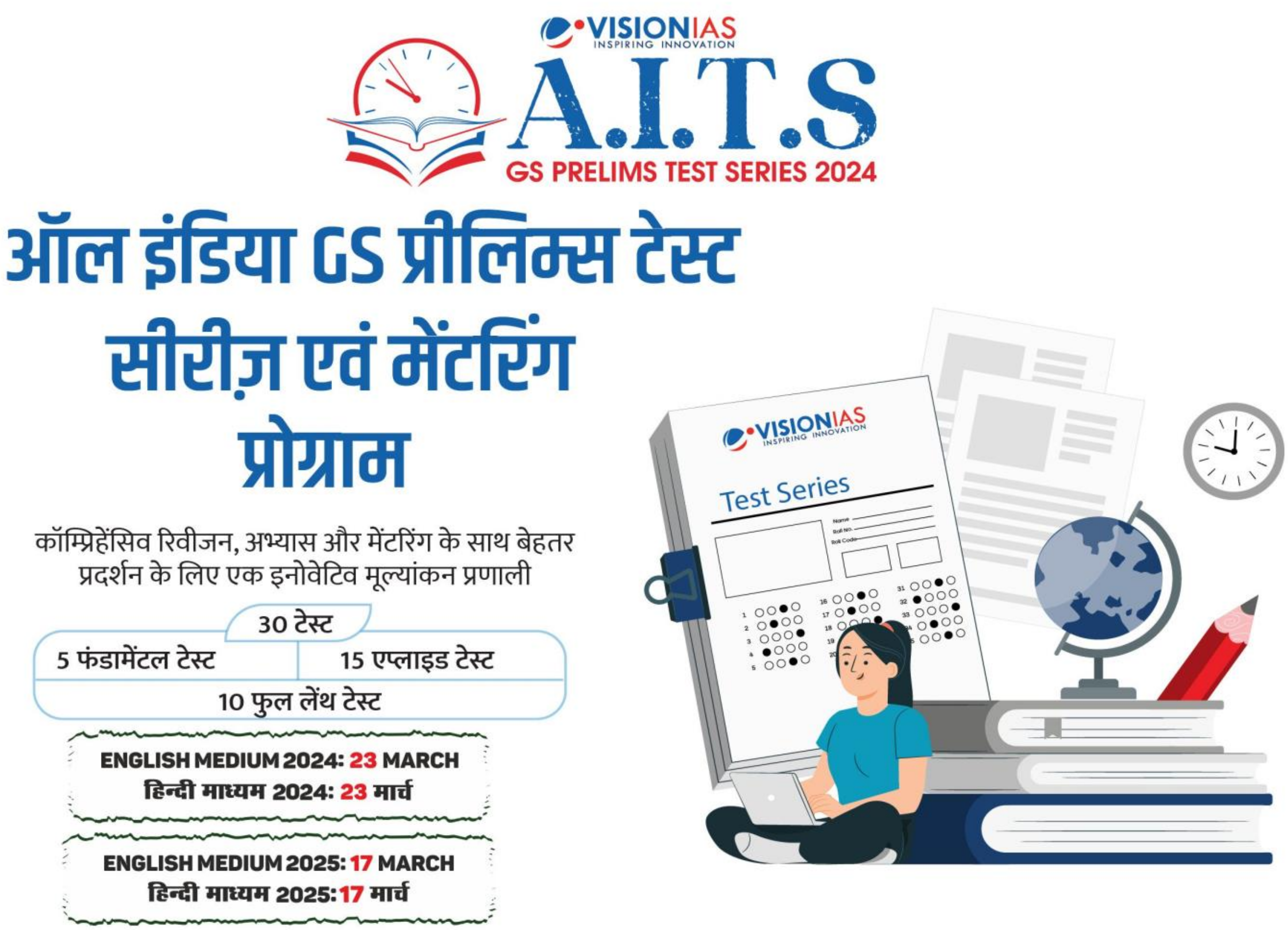

PT 365 - संस्कृति

VISION IAS
INSPIRING INNOVATION

न्यूज़ टुडे

"न्यूज टुडे" डेली करेंट अफेयर्स की एक संक्षिप्त प्रस्तुति है। इस डॉक्यूमेंट की मदद से न्यूज-पेपर को पढ़ना काफी आसान हो जाता है और इससे अभ्यर्थी दैनिक घटनाक्रमों के बारे में अपडेट भी रहते हैं। इससे अभ्यर्थियों को कई अन्य तरह के लाभ भी मिलते हैं, जैसे:

- किसी भी न्यूज़ से जुड़े घटनाक्रमों के बारे मे बेहतर समझ विकसित करने के लिए
- न्यूज पढ़ने का एक ऐसा नजरिया विकसित करने के लिए, जिससे अभ्यर्थी आसानी से समझ सकें हैं कि न्यूज पेपर्स में से कौन-सी न्यूज पढ़नी है
- टेक्निकल टर्म्स और न्यूज़ से जुड़े जटिल कॉन्सेप्ट्स के बारे में सरल समझ विकसित करने के लिए

न्यूज़ टुडे डॉक्यूमेंट की मुख्य विशेषताएं

- स्रोत: इसमें द हिंदू, इंडियन एक्सप्रेस, PIB, न्यूज़ ऑन ए.आई.आर., इकोनॉमिक टाइम्स, हिंदुस्तान टाइम्स, द मिंट जैसे कई स्रोतों से न्यूज को कवर किया जाता है।
- भाग: इसके तहत 4 पेज में दिन-भर की प्रमुख सुर्ख़ियों, अन्य सुर्ख़ियों और सुर्ख़ियों में रहे स्थल एवं व्यक्तित्व को कवर किया जाता है।
- प्रमुख सुर्ख़ियां: इसके तहत लगभग 200 शब्दों में पूरे दिन की प्रमुख सुर्ख़ियों को प्रस्तुत किया जाता है। इसमें हालिया घटनाक्रम को विस्तार से कवर किया जाता है।
- अन्य सुर्ख़ियां और सुर्ख़ियों में रहे स्थल/ व्यक्तित्व: इस भाग के तहत सुर्ख़ियों में रहे व्यक्तित्व, महत्वपूर्ण टर्म, संरक्षित क्षेत्र और प्रजातियों आदि को लगभग 90 शब्दों में प्रस्तुत किया जाता है।

न्यूज़ टुडे वीडियो की मुख्य विशेषताएं

- प्रमुख सुर्ख़ियां: इसमें दिन की छह सबसे महत्वपूर्ण सुर्ख़ियों को संक्षेप में प्रस्तुत किया जाता है। इससे आप एग्जाम के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण न्यूज को खोजने में आपना कीमती समय बर्बाद किए बिना मुख्य घटनाक्रमों को बेहतर तरीके से समझ सकते हैं।
- सुर्ख़ियों में रहे स्थल/ व्यक्तित्व: इसमें सुर्ख़ियों में रहे एक महत्वपूर्ण स्थल या मशहूर व्यक्तित्व के बारे में बताया जाता है।
- स्मरणीय तथ्य: इस भाग में चर्चित विषयों को संक्षेप में कवर किया जाता है, जिससे आपको दुनिया भर के मौजूदा घटनाक्रमों की जानकारी मिलती रहती है।
- प्रश्नोत्तरी: प्रत्येक न्यूज टुडे वीडियो बुलेटिन के अंत में MCQs भी दिए जाते हैं। इसके जरिए हम न्यूज पर आपकी पकड़ का परीक्षण करते हैं। यह इंटरैक्टिव चरण आपकी लर्निंग को ज्ञानवर्धक के साथ-साथ मज़ेदार भी बनाता है। इससे आप घटनाक्रमों से जुड़े तथ्यों आदि को बेहतर तरीके से याद रख सकते हैं।
- रिसोर्सेज: वीडियो के नीचे डिस्क्रिप्शन में "न्यूज़ टुडे" के PDF का लिंक दिया जाता है। न्यूज़ टुडे का PDF डॉक्यूमेंट, न्यूज टुडे वीडियो के आपके अनुभव को और बेहतर बनाता है। साथ ही, MCQs आधारित प्रश्नोत्तरी आपकी लर्निंग को और मजबूत बनाती है।

रोजाना 9 PM पर न्यूज टुडे वीडियो बुलेटिन देखिए

न्यूज टुडे डॉक्यूमेंट को डाउनलोड करने के लिए QR कोड को स्कैन कीजिए

न्यूज़ टुडे क्विज़ के लिए दिए गए QR कोड को स्कैन कीजिए

अहमदाबाद | बेंगलूरु | भोपाल | चंडीगढ़ | दिल्ली | गुवाहाटी | हैदराबाद | जयपुर | जोधपुर | लखनऊ | प्रयागराज | पुणे | रांची

3. चित्रकला और अन्य कला शैलियां (Painting and other Forms of Art)

3.1. इतिहास के स्रोतों के रूप में अभिलेख (Inscriptions as Sources of History)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, पुणे स्थित भंडारकर ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट (BORI) के शोधकर्ताओं ने **प्राचीन ताम्रपत्र पांडुलिपियों** को पढ़ने में सफलता प्राप्त की है। ये पांडुलिपियां प्राचीन संस्कृत कवयित्री **शिलाभट्टारिका** के संबंध में जानकारी प्रदान करती हैं।

अन्य संबंधित तथ्य

- **इन ताम्रपत्रों के बारे में:** इनमें पांच ताम्रपत्र हैं। इनकी तिथि **बादामी के चालुक्य शासक विजयादित्य (696-733 ईस्वी) के शासनकाल** की मानी जा रही है।
    - इन ताम्रपत्रों को **वराह (जंगली सूअर)** मुहर वाले एक तांबे के वलय द्वारा संकलित किया गया है।
    - वराह मुहर **बादामी चालुक्यों** का व्यापार-चिह्न था।
- **शिलाभट्टारिका के बारे में:** वह एक चालुक्य राजकुमारी थी और संभवत: **पुलकेशिन द्वितीय** की पुत्री थी।
- **शिलाभट्टारिका की रचनाएं:**
    - शिलाभट्टारिका की रचनाएं **पांचाली शैली का अनुसरण** करती हैं। यह शैली शब्द और उसके अर्थ के बीच संतुलन पर आधारित है।
- **संस्कृत कवि-टिप्पणीकार राजशेखर** ने भी शिलाभट्टारिका की महान और सुंदर रचनाओं की प्रशंसा की है। राजशेखर का संबंध 9वीं-10वीं शताब्दी ईस्वी से था। वे **गुर्जर-प्रतिहार शासकों** के दरबारी कवि थे।
- **अभिलेखों का महत्त्व**
    - **घटनाओं का सही क्रम: जेम्स प्रिंसेप** द्वारा मौर्य सम्राट अशोक के अभिलेखों को समझने के बाद, घटनाओं का उचित कालनिर्धारण आसान हो गया था।
    - **सामाजिक जीवन के बारे में जानकारी:** उदाहरण के लिए- **ब्रह्मदेशम अभिलेख में एक रानी के सती होने के बारे** में बताया गया है।
    - **कला शैलियों के बारे में जानना:** नर्तकी का सबसे पहला उल्लेख तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व की **जोगीमारा गुफा** में पाया गया है। **तमिलनाडु का कुडिम्मियानमलाई अभिलेख संगीत पर सबसे शुरुआती अभिलेखों** में से एक है।

अन्य प्रमुख प्राचीन भारतीय कवयित्रियां

- **गार्गी:** इनका संबंध लगभग **8वीं शताब्दी ईसा पूर्व** से है। इन्होंने आत्मा (Soul) के मुद्दे पर ऋषि **याज्ञवल्क्य** को चुनौती दी थी। ऋषि **याज्ञवल्क्य, बृहदारण्यक उपनिषद** के रचयिता हैं।
- **मैत्रेयी (लगभग 8वीं शताब्दी ईसा पूर्व):** वह **वेदों की व्याख्याता** थीं।
- **नयनारों में प्रमुख महिलाएं (लगभग 7वीं और 8वीं शताब्दी ईस्वी):** करैक्कल अम्मैयार, मंगैयारक्करसि और इसैगनानियार। इसैगनानियार को सुंदरार की माता के रूप में भी जाना जाता है।
- **अंडाल (लगभग 10वीं शताब्दी ईस्वी):** वह **12 अलवारों** में एकमात्र महिला थीं। अंडाल ने दो कृतियों (दोनों तमिल भाषा में) की रचना की थी। ये रचनाएं हैं- **तिरुप्पवाई और नचियार तिरुमोली।**
- **अक्का महादेवी (लगभग 12वीं शताब्दी ईस्वी):** उन्होंने कन्नड़ भाषा में अपनी रचनाएं लिखी थीं। उनकी कविताएं **वचन** रूप में हैं।
- **अतुकुरी मोल्ला (लगभग 1440 ईस्वी):** वह एक कुम्हार की पुत्री थी और **प्रथम तेलुगु रामायण की लेखिका थीं।**

संबंधित सुर्ख़ियां

सोमेश्वर अभिलेख

- पुरातत्वविदों ने सोमेश्वर (कर्नाटक) में राजा कुलशेखर अलुपेंद्र प्रथम की मृत्यु का उल्लेख करने वाले अभिलेख की खोज की है।
- यह **अलुप राजवंश से जुड़ा ऐसा पहला अभिलेखीय साक्ष्य** है, जिसमें किसी राजा की मृत्यु के बारे में जानकारी मिलती है।
    - यह अभिलेख **तुलुव राजवंश के इतिहास और संस्कृति के अध्ययन** में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।
- अलुप राजवंश **तुलु नाडु (वर्तमान कर्नाटक) पर सबसे लंबे समय तक शासन करने वाले राजवंशों** में से एक था।

© Vision IAS

- ○ **बरकुर** इस राजवंश की राजधानी थी।
- ○ अलुप शासकों की पहली राजधानी **उदयवारा** थी। बाद में इसके स्थान पर **बरकुर** को नई राजधानी बनाया गया था।
- ○ तुलु में एक **समृद्ध मौखिक साहित्य परंपरा** प्रचलित थी। इस परंपरा में **पैद्दन जैसे लोक-गीत और यक्षगान जैसे पारंपरिक लोक नाट्य** शामिल हैं।
- ○ **हल्मिडी अभिलेख (हासन, कर्नाटक) में अलुप के राजा पशुपति और कदंब सेना के मुख्य सेनापति द्वारा अनुदान की सिफारिश** का उल्लेख मिलता है।

3.2. यूनेस्को क्रिएटिव सिटीज़ नेटवर्क (UNESCO Creative Cities Network: UCCN)

सुर्ख़ियों में क्यों?

ग्वालियर और कोझिकोड "यूनेस्को क्रिएटिव सिटीज़ नेटवर्क (UCCN)" में शामिल हुए।

अन्य संबंधित तथ्य

- ये शहर **अपनी विकास रणनीतियों के हिस्से के रूप में अपनी संस्कृति और रचनात्मकता का मजबूत प्रतिबद्धता के साथ उपयोग** कर रहे हैं।
- **कोझिकोड (साहित्य का शहर)**
- **ग्वालियर (संगीत का शहर)**
  - इस शहर का एक समृद्ध **संगीत संबंधी इतिहास** है। **तानसेन** (तानसेन की उपाधि ग्वालियर के राजा विक्रमजीत ने दी थी) **और बैजू बावरा जैसे दिग्गज** संगीतज्ञ इसी शहर से थे।
  - इसे **'ग्वालियर घराने' का उत्पत्ति स्थान** भी माना जाता है। यह हिंदुस्तानी संगीत का सबसे पुराना घराना है।
- **UCCN में शामिल अन्य भारतीय शहर:** मुंबई (फिल्म), चेन्नई (संगीत), हैदराबाद {पाक-कला (Gastronomy)}, वाराणसी (संगीत), जयपुर (शिल्प व लोक कला) और श्रीनगर (शिल्प एवं लोक कला)।
- **UCCN के बारे में:**
  - इसका गठन **2004** में किया गया था।
  - UCCN में शामिल होने से शहरों को **वैश्विक पहचान मिलती है। साथ ही, उनमें पर्यटन को बढ़ावा** भी मिलता है।
  - UCCN नेटवर्क में **100 से अधिक देशों के 350 रचनात्मक शहर (Creative cities)** शामिल हैं। ये शहर निम्नलिखित 7 रचनात्मक क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं-
    - शिल्प और लोक कला, डिजाइन, फिल्म, पाक-कला, साहित्य, मीडिया कला तथा संगीत।
- **संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (UNESCO)[6] के बारे में:**
  - **उत्पत्ति:** इसकी स्थापना 1945 में की गई थी और इसका मुख्यालय पेरिस है।
  - **उद्देश्य:** सभी के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और आजीवन सीखने के अवसर उपलब्ध कराना; शिक्षा, विज्ञान, संस्कृति, संचार व सूचना के माध्यम से विश्व शांति और सुरक्षा को बढ़ावा देना; सामाजिक और नैतिक चुनौतियों का समाधान करना; सतत विकास और अंतर-सांस्कृतिक संवाद में योगदान देना आदि।
  - **सदस्यता:** भारत सहित 194 देश और 12 एसोसिएट सदस्य
  - **अन्य पहलें:**
    - यूनिवर्सल कॉपीराइट कन्वेंशन (1952);
    - मैन एंड बायोस्फियर प्रोग्राम (1971);
    - विश्व विरासत कन्वेंशन (1972);
    - अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सुरक्षा के लिए अभिसमय (2003); आदि

[6] United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization

© Vision IAS

3.3. जहाज निर्माण की प्राचीन सिलाई विधि (टंकाई पद्धति) {Ancient Stitched Shipbuilding Method (Tankai Method)}

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, **केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय और भारतीय नौसेना** ने सामूहिक रूप से जहाज निर्माण की पुरानी तकनीक को पुनर्विकसित किया।

अन्य संबंधित तथ्य

- इस परियोजना को **केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय** ने पूरी तरह से फंडिंग प्रदान किया है।
- भारतीय नौसेना **जहाज के डिजाइन और निर्माण** का कार्य देख रही है।
- इस तकनीक में रस्सियों, डोरियों, नारियल के रेशों, प्राकृतिक रेजिन और तेलों का उपयोग करके **लकड़ी के तख्तों को एक साथ जोड़कर** जहाज का निर्माण किया जाता है।
  - इस पद्धति से जहाज बनाने का विचार **अजंता के एक टंकण विधि से निर्मित जहाज के चित्र** से लिया गया था।
  - यह पहल **संस्कृति मंत्रालय के 'प्रोजेक्ट मौसम'** के अनुरूप है।
    - **प्रोजेक्ट मौसम** का उद्देश्य हिंद महासागर से सटे देशों के बीच संचार को फिर से जोड़ना और पुनः स्थापित करना है। इससे इन देशों के बीच सांस्कृतिक मूल्यों और सरोकारों की समझ बढ़ेगी;
    - प्रोजेक्ट मौसम का लक्ष्य **हिंद महासागर की सीमा से लगे 39 देशों के साथ समुद्री सांस्कृतिक संबंधों का पुनर्निर्माण** करना है।
- **प्राचीन व्यापारिक मार्ग:** हिंद महासागर का व्यापार मार्ग **दक्षिण-पूर्वी एशिया, भारत, अरब और पूर्वी अफ्रीका** से जुड़ा हुआ था। इस मार्ग का प्रचलन कम-से-कम **तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व** में आरंभ हुआ था।
  - **प्रमुख प्राचीन बंदरगाह:**
    - **पश्चिमी तट के बंदरगाह:** बरगाया, सुप्पारा, कैलीना, सेमाइला, मांडागोर, पलेपटमे, मालीजीगारा, औरानोब्बास, बीजान्टिन, नौरा, टिंडिस, मुजिरिस और नेल्सिंडा।
    - **पूर्वी तट के बंदरगाह:** ताम्रलिप्ति, चरित्रपुर, पलुरु, दंतपुर, कलिंगपट्टनम, पिथुंडा, सोपतमा, घंटसाला, पोडुका, पुहार, कोरकाई, कामरा आदि।
- **अन्य महत्वपूर्ण व्यापारिक मार्ग:**
  - **दक्षिण और दक्षिण-पूर्वी एशियाई क्षेत्रों के साथ प्राचीन समुद्री एवं सांस्कृतिक संबंध:** यहां के स्थानीय व्यापारी **साधव (Sadhavs)** नाम से जाने जाते थे। ये व्यापारी दक्षिण और दक्षिण-पूर्वी एशियाई क्षेत्रों जैसे- **बाली, सुमात्रा, सीलोन (श्रीलंका)** आदि से यात्रा करते थे।
  - **लाल सागर व्यापार मार्ग:** यह समुद्री जलमार्ग **लाल सागर के माध्यम से रोमन साम्राज्य को भारत से जोड़ता था।**
  - **रेशम मार्ग:** यह एक **स्थलीय व्यापार मार्ग** था। यह संभवतः **एशिया में चीन के जियान से लेकर तुर्की के एंटिओक** तक विस्तारित था।

3.4. मेवाड़ चित्रकला शैली (Mewar School of Painting)

सुर्ख़ियों में क्यों?

महाराजा जयसिंह के दरबारी चित्रकार अल्लाह बख्श की बनाई हुई लगभग 4,000 मेवाड़ी मिनिएचर पेंटिंग प्रदर्शित की गईं।

- **मेवाड़ी लघु चित्रकला (17वीं-18वीं शताब्दी) के बारे में:**
  - यह **राजस्थानी चित्रकला की एक शैली** है। इसका विकास मेवाड़ क्षेत्र (राजस्थान) में हुआ था।
  - लघु चित्रकला की मेवाड़ शैली की उत्पत्ति सामान्यतः 1605 ई. में **निसारदीन नामक कलाकार द्वारा चुनार में चित्रित रागमाला चित्रों से मानी जाती है।**
  - 18वीं शताब्दी में, मेवाड़ चित्रकला में विषयगत बदलाव आया। इस शताब्दी में चित्रकला का स्वरूप **लौकिक एवं दरबारी होने लगा और विषयों की प्रधानता** बढ़ गई। अब न केवल छवि चित्रण में चित्रकला का अतिशय उदय हुआ, बल्कि बड़े आकार एवं आकर्षक दरबारी दृश्यों, शिकार के अभियान, उत्सव, अंतःपुर के दृश्य, खेल जैसे विषय विशेष रूप से लोकप्रिय हुए।
  - **नाथद्वारा शैली** मेवाड़ चित्रकला शैली की उपशैली है।

* **विशेषताएं:**
    * इसमें चित्रों को **साधारण चमकीले रंग** में चित्रित किया जाता है। साथ ही, इस शैली के चित्रों में **भावनाओं को प्रमुखता** से दर्शाया जाता है।
    * "लघु चित्रकला" के तहत चर्मपत्र, पहले से तैयार कार्ड, तांबे या हाथी दांत पर **लघु आकार के चित्र** बहुत बारीकी से बनाए जाते हैं।
* **मेवाड़ शैली के प्रमुख कलाकार:** साहिबदीन (रागमाला), मनोहर (रामायण का बालकांड) और जगन्नाथ (बिहारी सतसई)।
* **राजस्थानी चित्रकला के बारे में:**
    * यह चमकदार रंगों के उपयोग, मानव आकृति की एक अमूर्त और पारंपरिक अवधारणा और परिदृश्य के अलंकारिक निरूपण में मुगल चित्रकला से भिन्न थी।
    * **राजस्थानी चित्रकला के विकास में दो मुख्य कारकों का योगदान रहा:**
        * समृद्ध राजपूत शासकों द्वारा संरक्षण; तथा
        * वैष्णववाद का पुनः प्रवर्तन और भक्ति पंथ का विकास।

संबंधित सुर्ख़ियां

बशोली चित्रकला

* यह **कठुआ जिले (जम्मू) की स्थानीय लघु चित्रकला** शैली है। इसे भौगोलिक संकेतक (GI) टैग प्रदान किया गया है।
    * **यह जम्मू क्षेत्र का पहला स्वतंत्र GI-टैग वाला उत्पाद है।**
* इसे पहाड़ी चित्रकला की प्रथम शैली माना जाता है।
* इस शैली में चित्रों को **कागज, कपड़े या लकड़ी पर चित्रित** किया जाता है। इसमें **प्राकृतिक रंजकों और रंगों का उपयोग** किया जाता है।

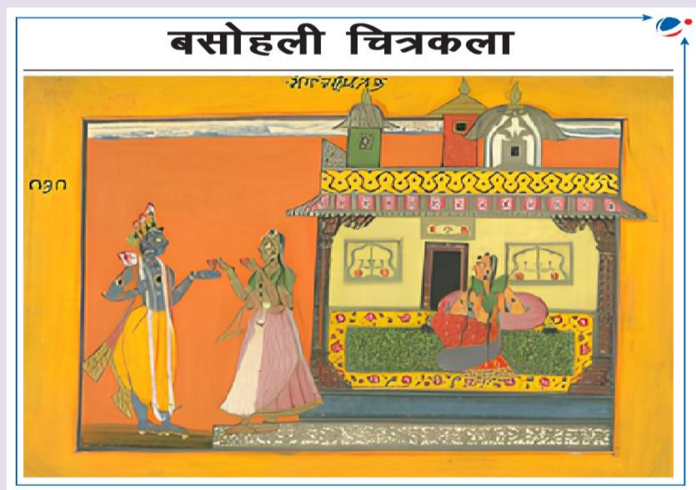

3.5. सुर्ख़ियों में रही अन्य चित्रकारियां (Other Painting in news)

3.5.1. बाग प्रिंट (छपाई) (Bagh print)

* **मध्य प्रदेश टूरिज्म बोर्ड ने धार जिला प्रशासन के सहयोग** से बाग प्रिंट पर आधारित टिकाऊ बैग बनाने के लिए एक **प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ** किया है।
* इसका नाम **बाघिनी नदी के तट पर स्थित 'बाग' गांव के नाम पर रखा** गया है।
* इस प्रिंट में **सफेद पृष्ठभूमि पर लाल और काले रंग के वनस्पति रंगों का उपयोग** किया जाता है।
* इसे **भौगोलिक संकेतक (GI) दर्जा** प्रदान किया गया है।
* **मध्यपाषाण काल की शैल चित्रकला।**

3.5.2. पनामलै चित्रकला (तमिलनाडु) {Panamalai Paintings (Tamil Nadu)}

* एक रिपोर्ट के अनुसार, **तालागिरीश्वर मंदिर में मौजूद 1,300 साल पुराने चित्र धूमिल** हो रहे हैं।

© Vision IAS

- एक मुख्य चित्र में **अष्टभुजा वाले भगवान शिव को नृत्य करते** हुए दिखाया गया है। इसे **लतातिलागभनी (Latathilagabhani)** नाम से जाना जाता है। शिव के इस नृत्य को देवी पार्वती द्वारा देखते हुए चित्रित किया गया है।
- ये **भित्ति-चित्र (Mural)** पत्थर की दीवारों पर चूना-पत्थर और रेत के पलस्तर के ऊपर बनाए गए हैं।
- ये भित्ति-चित्र **अजंता और सित्तनवासल के चित्रों से काफी समानता** रखते हैं।
- मंदिर का निर्माण **पल्लव राजा नरसिंहवर्मन द्वितीय** ने करवाया था। वे **"राजसिंह"** के नाम से प्रसिद्ध थे।

3.5.3. चेरियल स्क्रॉल पेंटिंग (Cheriyal Scroll painting)

- **चेरियल स्क्रॉल पेंटिंग तेलंगाना** की विशिष्ट चित्रकला है। इस पेंटिंग को भौगोलिक संकेतक (GI) का दर्जा प्राप्त है।
  - यह **नकाशी कला** का एक **लोकप्रिय और संशोधित संस्करण** है। यह स्थानीय रूपांकनों से अत्यधिक समृद्ध है।
  - **विशेषताएं:**
    - यह **कथात्मक-प्रारूप में चित्रित** होती है। इसमें **भारतीय पौराणिक कथाओं के साथ-साथ पुराणों और महाकाव्यों** से संबंधित लघु कथाओं को भी चित्रित किया जाता है।
    - गाथागीत गाने वाले लोक गायक समुदाय **काकी पडागोलु द्वारा कथा-वाचन में इसका उपयोग** किया जाता है।
    - इसे **ज्यादातर प्राथमिक रंगों** में चित्रित किया जाता है, इसकी पृष्ठभूमि में **लाल रंग** की प्रधानता होती है।

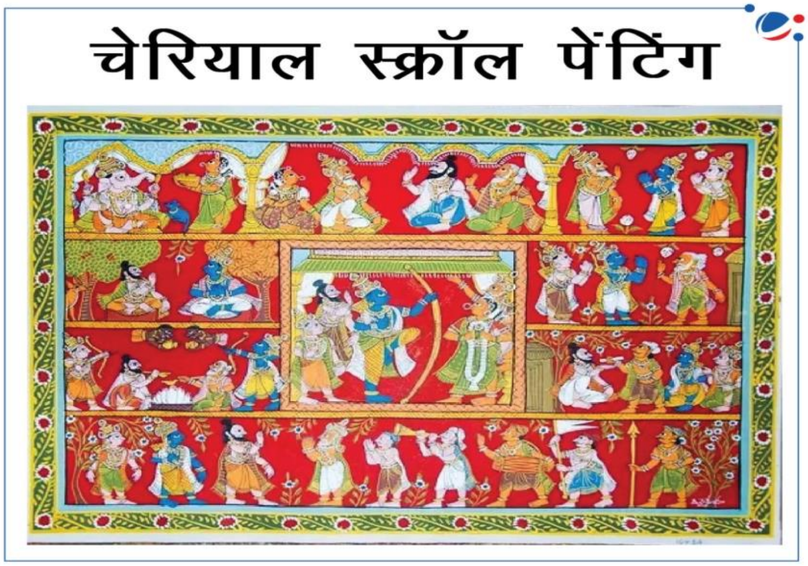

3.5.4. पिछवाई चित्रकला {Pichwai (Pichvai) Painting}

- **चेन्नई** में एक कला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया था। इसमें **पिछवाई चित्रकला** का प्रदर्शन किया गया था। इसमें प्रदर्शित कृतियों में से कुछ लगभग 350 वर्ष पुरानी थीं।
- **पिछवाई चित्रकला के बारे में:**
  - चित्रकला की इस शैली का **उद्भव 400 वर्ष पहले नाथद्वारा** नामक नगर में हुआ था। यह नगर **राजस्थान में उदयपुर के निकट** अवस्थित है।
  - पिछवाई शब्द की उत्पत्ति **'पिछ' (अर्थ- पीछे) और 'वाई' (अर्थ- कपड़ा लटकाना)** से मिलकर हुई है।
  - इस शैली के अंतर्गत **कपड़े पर भगवान कृष्ण के जीवन पर आधारित कहानियों** का चित्रण किया जाता है।
    - इस शैली के चित्रों के अन्य विषय हैं- **राधा, गोपियां, शरद पूर्णिमा, रास लीला, दिवाली और होली जैसे त्यौहार आदि।**
    - पिछवाई चित्रकला शैली के अधिकतर चित्रों का चित्रण **पुष्टिमार्ग संप्रदाय** के अनुयायियों ने किया था। इस संप्रदाय की स्थापना **श्री वल्लभाचार्य ने 16वीं शताब्दी** में की थी।

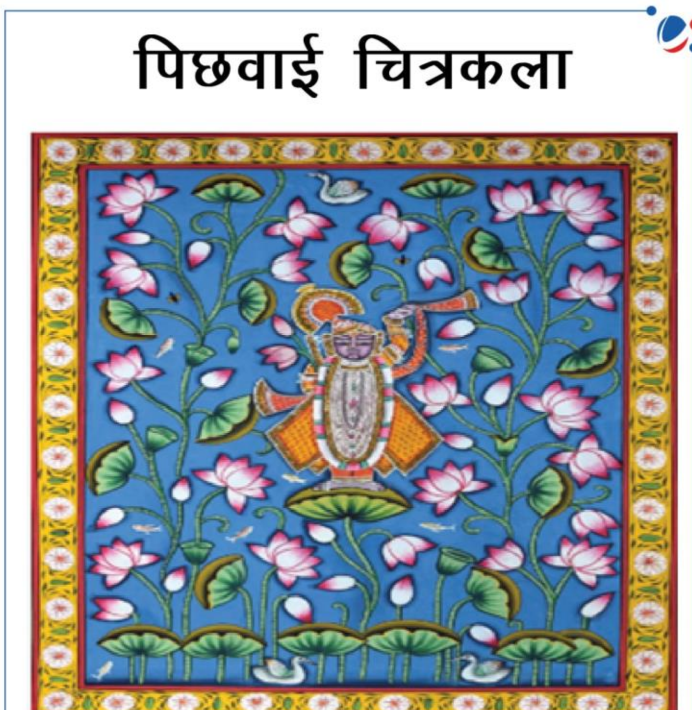

PT 365 - संस्कृति

3.6. गरबा नृत्य (Garba)

सुर्ख़ियों में क्यों?

यूनेस्को (UNESCO)[7] ने **गुजरात के 'गरबा नृत्य' को मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत (ICH)[8] की प्रतिनिधि सूची** में शामिल किया है।

अन्य संबंधित तथ्य

- गरबा लोक नृत्य को **'अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण पर अभिसमय, 2003'** के प्रावधानों के तहत ICH सूची में शामिल किया गया है।
- गरबा ICH सूची में शामिल होने वाली भारत की **15वीं अमूर्त सांस्कृतिक विरासत** है।

गरबा नृत्य के बारे में

- यह एक **आनुष्ठानिक और भक्तिपूर्ण लोक नृत्य** है। इसका आयोजन हिंदू त्योहार **नवरात्रि** के दौरान किया जाता है। गौरतलब है कि **नवरात्रि** उत्सव के दौरान **'शक्ति' की उपासना** की जाती है।
- **"गरबा"** नृत्य का नाम संस्कृत शब्द **"गर्भ"** से लिया गया है।
- **गरबा नृत्य की प्रमुख विशेषताएं:**
  - नवरात्रि के अवसर पर **मिट्टी के घड़े** में कई छिद्र किए जाते हैं। इसके बाद एक दीप प्रज्वलित करके इसके अंदर रखा जाता है। इस दीपक को ही **गर्भ-दीप** कहा जाता है, जिसके आस-पास लोग गरबा करते हैं। यह नृत्य **देवी अंबे मां** के चित्र के आस-पास भी किया जाता है।
  - इस दौरान नर्तक **वामावर्त दिशा (एंटी-क्लॉकवाइज)** में घड़े के चारों ओर चक्कर लगाकर नृत्य करते हैं।
  - इसमें **पारंपरिक ढोल/ ड्रम** तथा अन्य संगीत वाद्ययंत्र बजाए जाते हैं।

यूनेस्को के 'अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण पर अभिसमय, 2003' के बारे में

- यह अभिसमय (कन्वेंशन) यूनेस्को की **2003** में **पेरिस** में आयोजित बैठक में अपनाया गया था। इस अभिसमय का उद्देश्य अमूर्त सांस्कृतिक विरासतों का संरक्षण करना है।
- ICH के संरक्षण के लिए यूनेस्को के अधीन **अंतर-सरकारी समिति (IGC)** का गठन किया गया है। यह समिति देशों द्वारा ICH **सूची में अपनी किसी अमूर्त विरासत को शामिल करने के लिए सौंपे गए प्रस्तावों/ अनुरोधों की जांच करती** है।
  - IGC में **24 सदस्य** होते हैं। इन सदस्यों का चुनाव कन्वेंशन की महासभा द्वारा किया जाता है।
  - **भारत** को वर्ष 2022 में **IGC** में **4 वर्षों के कार्यकाल** के लिए चुना गया था।
- **अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के बारे में:**
  - ICH अभिसमय के **अनुच्छेद 2** में, "अमूर्त सांस्कृतिक विरासत" को परिभाषित करता है।
  - **अमूर्त सांस्कृतिक विरासत निम्नलिखित रूपों में प्रदर्शित/ व्यक्त होते हैं:**
    - मौखिक परंपराएं और अभिव्यक्तियां;
    - निष्पादन कला (परफॉर्मिंग आर्ट्स);
    - सामाजिक प्रथाएं, अनुष्ठान व उत्सव आयोजन;
    - प्रकृति और ब्रह्मांड से संबंधित ज्ञान एवं परंपराएं;
    - पारंपरिक शिल्प कौशल (दस्तकारी)।

[7] United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization/ संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन

[8] Intangible Cultural Heritage

© Vision IAS

भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासतों की सूची	
कुटियाट्टम: संस्कृत रंगमंच	लद्दाख का बौद्ध जप/ मंत्रोच्चार
वैदिक मंत्रोच्चार की परंपरा	संकीर्तन: मणिपुर में एक प्रकार का अनुष्ठान गायन जिसमें लोग ढोल बजाते हैं और नृत्य करते हैं,
रामलीला: रामायण का पारंपरिक प्रदर्शन	पंजाब के जंडियाला गुरु में ठठेरों द्वारा निर्मित पारंपरिक पीतल और तांबे के बर्तन
रम्माण: गढ़वाल हिमालय का धार्मिक उत्सव और आनुष्ठानिक रंगमंच	नवरोज़
छऊ नृत्य	योग
कालबेलिया: राजस्थान का लोक गीत और नृत्य	कुंभ मेला
मुडियेट्टू: केरल का आनुष्ठानिक रंगमंच और नृत्य नाटक	कोलकाता में दुर्गा पूजा

3.7. सुर्ख़ियों में रही अन्य नृत्य शैलियां (Other Dance Forms in News)

3.7.1. चाम लामा नृत्य (Cham Lama Dance)

- तिब्बती बौद्धों ने **गुरु पद्मसंभव का जन्म दिवस मनाने के लिए लामा नृत्य** का प्रदर्शन किया।
- यह **तिब्बती बौद्ध धर्म का अनोखा मुखौटा नृत्य** है।
- इस नृत्य को **अपने आप में ध्यान का एक रूप** माना जाता है। ज्यादातर बौद्ध मठों में **लोसर** जैसे त्योहारों के दौरान इसका आयोजन किया जाता है।
- ऐसा माना जाता है कि **न्यिंगमापा के संस्थापक पद्मसंभव (गुरु रिणपोछे) ने चाम नृत्य परंपरा की शुरुआत** की थी।
- इस नृत्य में **सामान्यतः पद्मसंभव के जीवन के दृश्यों और उनके 8 विश्वरूपों को दर्शाया** जाता है।

चाम लामा नृत्य

3.7.2. कोलकली नृत्य (Kolkali Dance)

- हाल ही में, **सेंट थॉमस के भारत आगमन** की स्मृति में **केरल के त्रिशूर** में कोलकली नृत्य का प्रदर्शन किया गया।
- **कोलकली नृत्य के बारे में**
  - यह केरल के **उत्तरी मालाबार क्षेत्र में प्रचलित एक लोक-कला** है।
    - **तमिलनाडु में इस कला को 'कोलाट्टम' और आंध्र प्रदेश में 'कोलामू'** के रूप में जाना जाता है।
  - इसने **कलारीपयट्टू के तत्वों को भी अपनाया** है। कलारीपयट्टू, **केरल और तमिलनाडु** में प्रचलित एक मार्शल आर्ट है।
  - इसका प्रदर्शन **धान की फसल कटाई मौसम के दौरान** किया जाता है।

3.7.3. पुलिकली (बाघ नृत्य) {Pulikkali (Tiger Dance)}

- **त्रिशूर** में ओणम त्यौहार को कार्निवाल जैसा समापन देने के लिए **250 से अधिक पुलिकली** नर्तकों ने भाग लिया।
- पुलिकली **केरल का एक लोक नृत्य** है।
- यह **ओणम त्यौहार** के दौरान निष्पादित किया जाता है। इसमें **कलाकार अपने शरीर को बाघ की त्वचा की भांति पीली, लाल और काली धारियों से रंग** लेते हैं।
- वे **तकिल, उडुक्कू और चेंदा जैसे पारंपरिक आघात वाद्य यंत्रों की ताल पर नृत्य** करते हैं।
- नृत्य का मुख्य विषय **बाघ का शिकार है**। इसमें प्रतिभागी बाघ और शिकारी की भूमिका निभाते हैं।

3.8. सुर्ख़ियों में रही अन्य कला शैलियां (Other News related to art forms)

3.8.1. गिलगित पांडुलिपियां (Gilgit Manuscripts)

- यूनेस्को के अनुसार, **बर्च की छाल और मिट्टी लेपित गिलगित पांडुलिपियां** भारत की सबसे पुरानी अस्तित्वमान पांडुलिपियां हैं। इन्हें **पांचवी से छठी शताब्दी ईस्वी.** के बीच लिखा गया था।
- इन पांडुलिपियों में **विहित (canonical) और गैर-विहित दोनों बौद्ध कृतियाँ** शामिल हैं। ये कृतियां **संस्कृत, चीनी आदि** जैसी अन्य भाषाओं के विकास पर भी प्रकाश डालती हैं।
- इन पांडुलिपियों में **समाधिराजसूत्र और सद्धर्मपुंडरीकसूत्र (कमल सूत्र) सहित अन्य बौद्ध सूत्र** शामिल हैं।
- इन पांडुलिपियों को **पहली बार 1931 में कश्मीर के गिलगित में नौपुर गांव में एक प्राचीन स्तूप जैसी संरचना के अवशेषों** में खोजा गया था।

3.8.2. ओल चिकी लिपि (Ol Chiki Script)

- प्रधान मंत्री ने **संथाली भाषा की ओल चिकी लिपि का उपयोग करके संथाल जनजाति के लोगों को हूल दिवस** की शुभकामनाएं दी।
- ओल चिकी लिपि का **विकास 1925 में रघुनाथ मुर्मू** ने किया था।
  - **संथाली एक मुंडा भाषा है।** यह भाषा मुख्य रूप से **झारखंड, पश्चिम बंगाल, ओडिशा, बांग्लादेश, पूर्वी नेपाल और भूटान** में बोली जाती है।
  - वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में संथाली बोलने वालों की संख्या लगभग **7.3 मिलियन** है।
- इस विद्रोह का मुख्य **कारण 1793 का स्थायी बंदोबस्त अधिनियम** था। इसके कारण **बीरभूम और मानभूम क्षेत्रों** (वर्तमान बंगाल) से इनका विस्थापन हो गया था।
  - यह विद्रोह **झारखंड की राजमहल पहाड़ियों में दामिन-ए-कोह क्षेत्र** में हुआ था।
  - इस विद्रोह का नेतृत्व **दो भाइयों- सिद्धू और कान्हू मुर्मू** ने किया था।
  - **संथाल विद्रोह को शांत करने के बाद औपनिवेशिक शासन ने निम्नलिखित कदम उठाए:**
    - **'संथाल परगना'** का गठन किया गया।
    - एक संथाल द्वारा किसी गैर-संथाल को भूमि हस्तांतरित करना अवैध घोषित किया गया।

 © Vision IAS

3.8.3. फणीगिरी कलाकृतियां (Phanigiri artefacts)

- ये कलाकृतियां **200 ईसा पूर्व से 400 ईस्वी तक की अवधि** से संबंधित हैं।
- ये कलाकृतियां **पहली बार 1942 में खोजी गई** थीं और 2003 में इनकी फिर से खोज की गई थी।
- फणीगिरी (सांप के फन के आकार की पहाड़ी) **तेलंगाना राज्य का एक छोटा सा गांव** है।
- **मुख्य तथ्य**
    - ये कलाकृतियां **बौद्ध धर्म के इतिहास में एक युगांतरकारी परिवर्तन** को दर्शाती हैं।
    - ये **बुद्ध के दैवीकरण, बौद्ध प्रथाओं में संत घोषित करने और अनुष्ठानों का प्रचलन शुरू होने का प्रमाण** प्रस्तुत करती हैं।
    - यहां से प्राप्त एक कलाकृति में **बुद्ध को सलवट पड़े हुए रोमन टोगा (विशेष सफेद परिधान) पहने** दर्शाया गया है। यह कलाकृति **चूना पत्थर** से बनी हुई है।
    - यहां से प्राप्त **तोरणों से महायान और हीनयान, दोनों संप्रदायों की उपस्थिति का पता** चलता है।

3.8.4. वज्र मुष्टि कलागा (Vajra Mushti Kalaga)

- “वज्र मुष्टि कलागा” **कुश्ती का एक अनूठा** रूप है। यह **पारंपरिक कुश्ती से अलग** होता है। इसमें दो **जट्टी (लड़ाकू)** शामिल होते हैं।
- इसमें प्रतिद्वंद्वी कुश्ती में शामिल होने के लिए **'वज्रमुष्टि'** नामक एक हथियार का उपयोग करते हैं। 'वज्रमुष्टि' को **नक्कल-डस्टर (भुज)** भी कहा जाता है।
- इस खेल में जो भी पहलवान **पहले अपने प्रतिद्वंद्वी के सिर से खून निकालता** है, उसे विजेता घोषित किया जाता है।
- इसका आयोजन **नवरात्रि के नौवें दिन मैसूरु पैलेस** (मैसूर, कर्नाटक) में किया जाता है।
- इसका पहली बार उल्लेख **चालुक्य वंश (1124-1138) के राजा सोमेश्वर तृतीय की कृति ‘मनसोल्लास’** से प्राप्त हुआ था।
- पुर्तगाली यात्री **फ़र्नानो नूनिज ने भी कुश्ती के इस रूप का उल्लेख** किया है। उसके अनुसार यह खेल **विजयनगर साम्राज्य में प्रचलित था।**

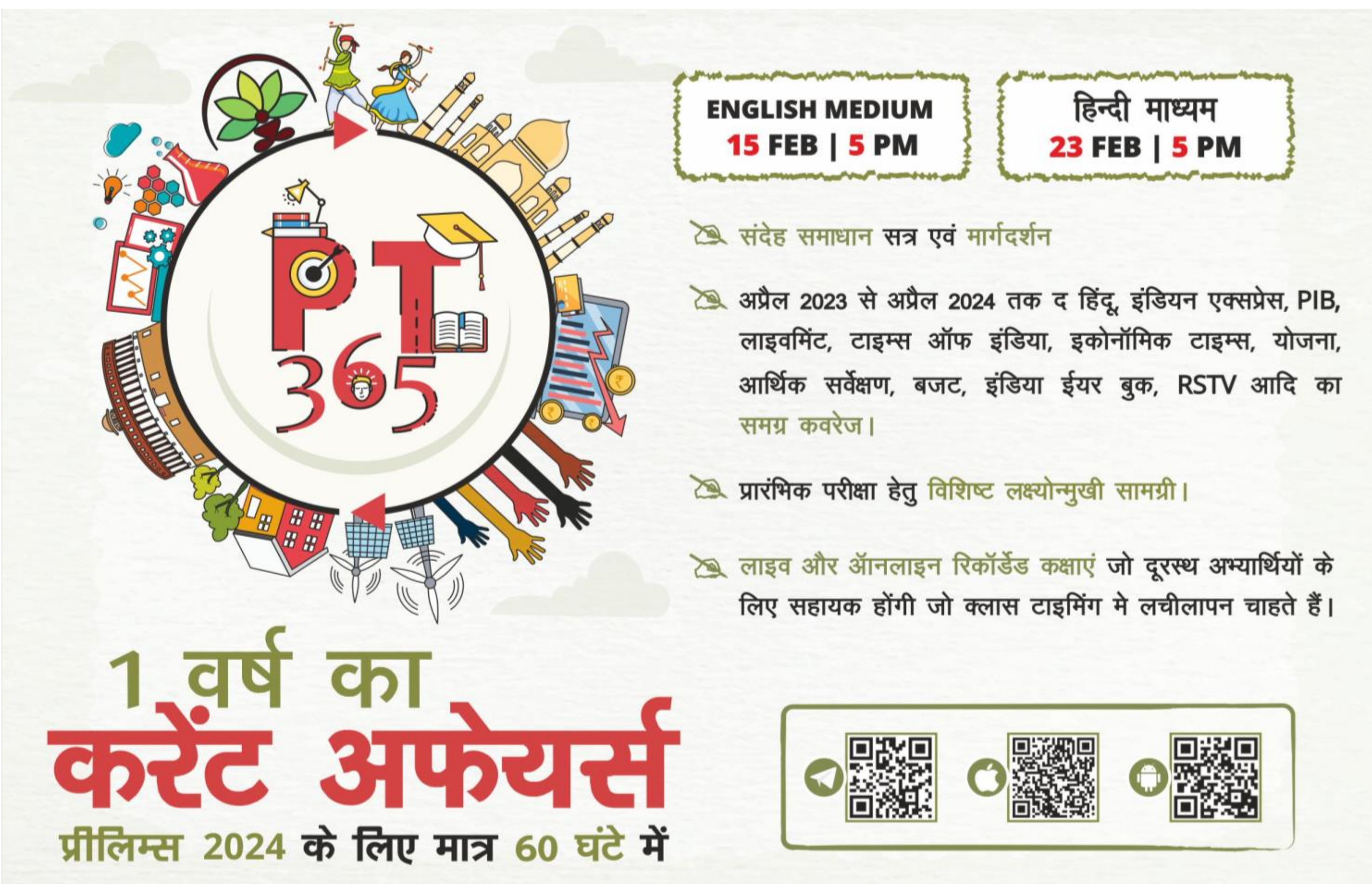

VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION

समसामयिकी त्रैमासिक रिवीजन

सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी करने वाले अभ्यर्थियों की **पृष्ठभूमि, आयु, वर्किंग शेड्यूल और पारिवारिक जिम्मेदारियां अलग-अलग होती हैं।**

इसे ध्यान में रखते हुए हमने **समसामयिकी: त्रैमासिक रिवीजन** डॉक्यूमेंट को तैयार किया है। इससे उन अभ्यर्थियों को तैयारी में काफी सहायता मिलेगी, जिनका शेड्यूल अधिक व्यस्त होता है, जिन्हें मासिक समसामयिकी मैगजीन को पढ़ने व रिवीजन करने के लिए कम समय मिलता है और सिलेबस के बारे में बुनियादी एवं थोड़ी बहुत समझ होती है।

त्रैमासिक रिवीजन डॉक्यूमेंट को काफी सावधानीपूर्वक और बारीकी से तैयार किया गया है। इससे आपको **सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी के लिए आवश्यक लर्निंग एवं रिवीजन के लिए मजबूत आधार मिलेगा।**

इस डॉक्यूमेंट में हमने विगत तीन माह की मासिक समसामयिकी मैगजीन से सभी महत्वपूर्ण आर्टिकल्स को कवर किया है। इससे महत्वपूर्ण टॉपिक्स का रिवीजन करने के लिए आपको एक समग्र और सटीक रिसोर्स मिलेगा।

डॉक्यूमेंट को पढ़ने के लिए QR कोड को स्कैन कीजिए

त्रैमासिक रिवीजन डॉक्यूमेंट की कुछ मुख्य विशेषताओं पर एक नज़र

कम समय में रिवीजन करने के लिए: इसे पिछले तीन महीने के करेंट अफेयर्स को कवर करने के लिए डिज़ाइन किया गया है, ताकि कम समय में भी रिवीजन किया जा सके।

और अधिक जानकारी के लिए अवश्य पढ़ें: इससे आपको करेंट अफेयर्स को स्टैटिक मटेरियल से जोड़कर समझने तथा टॉपिक के बारे में अपनी समझ को और बेहतर बनाने में मदद मिलेगी। इसमें NCERTs सहित बेसिक रीडिंग मटेरियल से संबंधित अध्याय के बारे में बताया गया है।

प्रश्नोत्तरी: हर भाग के अंत में 5 MCQs और मुख्य परीक्षा के लिए प्रैक्टिस हेतु 2 प्रश्न दिए गए हैं। ये प्रश्न आपको अपनी समझ का आकलन करने और प्रमुख अवधारणाओं/तथ्यों को प्रभावी ढंग से याद रखने में मदद करेंगे।

संक्षिप्त पृष्ठभूमि: प्रत्येक आर्टिकल से संबंधित एक संक्षिप्त पृष्ठभूमि दी गई है, जिससे आपको संबंधित आर्टिकल को समझने और उसका विश्लेषण करने के लिए एक मजबूत आधार मिलेगा।

विश्लेषण और महत्वपूर्ण तथ्य: इससे आपको महत्वपूर्ण नज़रिए और अलग-अलग पहलुओं से जुड़ी जानकारी तथा तथ्यों के बारे में पता चलेगा।

स्पष्ट एवं संक्षिप्त जानकारी: इसमें इन्फॉर्मेशन को सुव्यवस्थित तरीके से प्रस्तुत किया गया है, जिससे क्विक और इफेक्टिव रिवीजन में मदद मिलेगी।

हमें पूरी उम्मीद है कि यह त्रैमासिक रिवीजन डॉक्यूमेंट समसामयिकी घटनाक्रमों के लिए काफी फायदेमंद होगा। PT 365 और Mains 365 डाक्यूमेंट्स के साथ-साथ इसे पढ़कर UPSC CSE की तैयारी की राह में आपका आत्मविश्वास काफी बढ़ जाएगा।

स्मार्ट तरीके से तैयारी कीजिए। "त्रैमासिक रिवीजन डॉक्यूमेंट" कुशल, टार्गेटेड और प्रभावी रिवीजन के लिए सबसे बेहतर साथी है। इसकी मदद से अपनी सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी की राह में आगे बढ़िए।

अहमदाबाद | बेंगलूरु | भोपाल | चंडीगढ़ | दिल्ली | गुवाहाटी | हैदराबाद | जयपुर | जोधपुर | लखनऊ | प्रयागराज | पुणे | रांची

4. सुर्ख़ियों में रहे महत्वपूर्ण स्थल (Important Sites in the News)

4.1. कीलाडी उत्खनन (Keeladi Excavation)

सुर्ख़ियों में क्यों

हाल ही में, **तमिलनाडु के कीलाडी में पुरातत्ववेत्ताओं ने संगम युग की क्रिस्टल क्वाट्र्ज से बनी एक भार मापक इकाई** की खोज की है।

कीलाडी या कीलड़ी उत्खनन स्थल के बारे में

- कीलाडी **तमिलनाडु में वैगई नदी** के तट पर स्थित एक छोटा सा गाँव है।
- भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) और तमिलनाडु पुरातत्व विभाग द्वारा इसका उत्खनन किया जा रहा है।

कीलाडी उत्खनन का महत्त्व

- **ऐतिहासिक सटीकता की पुष्टि करता है:** प्रारंभिक ऐतिहासिक काल **(छठी शताब्दी ईसा पूर्व से चौथी शताब्दी ईसा पूर्व) के साथ लौह युग (बारहवीं शताब्दी ईसा पूर्व से छठी शताब्दी ईसा पूर्व)** के लुप्त संबंधों को समझने के लिए महत्वपूर्ण है।
- **नगरीय बस्ती:** कीलाडी पुरास्थल में नगरीय सभ्यता की सभी विशेषताएं मौजूद हैं।
- **उद्योगों का अस्तित्व:** उत्खनन से **बुनाई उद्योग** के विविध चरणों का पता चला है। वहां से **रंगाई उद्योग** और **कांच के मनकों के उद्योग** के साक्ष्य मिले हैं।
- **तमिल ब्राह्मी लिपि:** पाए गए मृदभांडों के कुछ टुकड़ों पर तमिल ब्राह्मी लिपि में लेख मिले हैं।
- यह **संगम युग** से संबद्ध है।

संगम युग के बारे में (लगभग छठी शताब्दी ईसा पूर्व से तीसरी शताब्दी ईस्वी तक प्राचीन तमिलनाडु व केरल का काल)

- संगम का तात्पर्य **कवियों और विद्वानों की सभाओं** से है।
- संगम कवियों को **वर्ण के सामाजिक वर्गीकरण** की जानकारी थी।
- ऐसा माना जाता है कि **तीन संगम आयोजित** हुए थे। पहला और तीसरा **मदुरै** में तथा दूसरा संगम **कपाडपुरम** में आयोजित हुआ था।
- **वट्टाकिरुतल** आमरण व्रत करने की एक तमिल प्रथा थी, जो संगम युग के दौरान व्यापक रूप से प्रचलित थी।
- **संगम** साहित्य में मुख्य रूप से **तोलकाप्पियम (सबसे पहला संगमयुगीन साहित्य), एत्तुतोकै और पत्तुपत्तु** शामिल हैं
  - **जुड़वां महाकाव्य-** शिलप्पादिकारम और मणिमेखलै।

4.2. सुर्ख़ियों में रहे अन्य संगमकालीन स्थल (Other Sangam Age Sites Related News)

4.2.1. पोर्पनैकोट्टई स्थल (Porpanaikottai Site)

- **तमिलनाडु के पुदुकोट्टई जिले** में अवस्थित पोर्पनैकोट्टई स्थल पर की गई खुदाई से **संगम युग से संबंधित सोने का स्टड, हड्डी से बना एक नुकीला औजार तथा एक कार्नेलियन मनका** प्राप्त हुआ है।
- उत्खनन स्थल से **शवाधान स्थल का संकेत मिला है तथा दुर्ग क्षेत्र में स्थल के अंदर जल निकायों के प्रमाण** मिले हैं।
- हड्डी के नुकीले औजारों की खोज से संकेत मिलता है कि **पोर्पनैकोट्टई बुनाई उद्योग का स्थल** था।

4.2.2. आदिचनल्लूर (Adichanallur)

- **आदिचनल्लूर में एक पुरातत्व संग्रहालय की स्थापना** के लिए आधारशिला रखी गई। आदिचनल्लूर, उन **पांच** स्थलों में से एक है, जिन्हें **प्रतिष्ठित स्थलों (Iconic Sites) के रूप में** विकसित किए जाने की घोषणा केंद्रीय बजट 2020-21 में की गई थी।
  - **अन्य चार स्थल हैं:** राखीगढ़ी (हरियाणा), हस्तिनापुर (उत्तर प्रदेश), धोलावीरा (गुजरात) और शिवसागर (असम)।
- आदिचनल्लूर **लौह युग का एक शवाधान स्थल है। यह तमिलनाडु के तूत्तुक्कुडि जिले में तामिरबरणी नदी के तट** पर स्थित है।
  - आदिचनल्लूर **महापाषाण संस्कृति** को भी प्रदर्शित करता है।

- यहां पर खुदाई से **467 ईसा पूर्व की अलग-अलग पुरावस्तुएं तथा 665 ईसा पूर्व के मिलेट्स और धान जैसे खाद्यान्न** के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- संगम साहित्य में वर्णित **प्राचीन समुद्री बंदरगाह कोरकाई, आदिचनल्लूर के पास अवस्थित था।**

4.3. सुर्ख़ियों में रहे अन्य महत्वपूर्ण स्थल (Other Important Sites in News)

4.3.1. जूना खटिया स्थल (Juna Khatiya Site)

- पुरातत्वविदों ने 2018 के बाद से **इस जगह पर 500 समाधियों (कब्र/ शवाधान) की खोज की है।**
- जूना खटिया पूर्व हड़प्पा समाधि स्थल है। यह **गुजरात के कच्छ जिले के लखपत तालुका** में स्थित है।
  - यह **भारत में अब तक दर्ज सबसे बड़ा पूर्व हड़प्पा समाधि स्थल** है।
  - **गुजरात में अन्य हड़प्पा स्थल हैं:** लोथल, सुरकोटदा, धोलावीरा आदि।
- **प्रमुख निष्कर्ष:**
  - **समाधि संरचनाएं मानव द्वारा परिष्कृत बलुआ पत्थर से बनी** हैं। अधिकतर संरचनाओं की **योजना आयताकार है तथा कुछ संरचनाएं अंडाकार या गोलाकार योजना में भी निर्मित** हैं।
  - **रिजर्व्ड स्लिप वेयर जार पर चित्रकारी** की विशिष्टता देखी गई है।

4.3.2. चेब्रोलू (Chebrolu)

- चेब्रोलू **आंध्र प्रदेश के गुंटूर** जिले में स्थित एक कस्बा है। इस कस्बे में कई मंदिर निर्मित हैं।
  - इस स्थान पर **पूर्वी चालुक्य, वेलनती चोड, काकतीय, पोटा राजुलु, पेरिस्वेदी** आदि राजवंशों ने शासन किया है।
- **मुख्य मंदिर**
  - **चतुर्मुख ब्रह्मेश्वर:** यह मंदिर एक तालाब के बीच में स्थित है। मंदिर **भगवान ब्रह्मा को समर्पित** है।
  - **भीमेश्वर:** इसका निर्माण **पूर्वी चालुक्य राजा चालुक्य भीम (9वीं शताब्दी ईस्वी)** ने कराया था। यह **दो मंजिला मंदिर** है और इसमें एक विशाल **शिवलिंग** विद्यमान है।
  - **नागेश्वर स्वामी:** शिव मंदिर, 11वीं सदी का है।
  - **आदिकेशव मंदिर:** यह स्थापत्य कला की **चोल शैली** में निर्मित है। मंदिर **भगवान विष्णु को समर्पित** है। मंदिर परिसर में **स्तंभ हैं, जिनके बाहर की ओर सिंह की खड़ी मुद्रा में आकृतियां** निर्मित हैं।

4.3.3. मेन्हीर (Menhirs)

- तेलंगाना की विरासत संरक्षण के उत्साही समर्थक तेलंगाना के **मुदुमल गांव में मेन्हीर** के लिए यूनेस्को दर्जे की मांग कर रहे हैं।
  - मेन्हीर महापाषाण काल के **बड़े व सीधे खड़े पत्थर** हैं। आम तौर पर, इन्हें किसी समाधि स्थल के ऊपर या किसी समाधि स्थल के करीब स्मारक के रूप में स्थापित किया गया है।
  - पुरातत्वविदों के अनुसार, मेन्हीर को इस तरह से स्थापित किया गया है वे विषुव और संक्रांति जैसे विशिष्ट दिनों में एक सीधी रेखा में छाया बन सके। इस प्रकार, मेन्हीर की मदद से आरंभिक कृषक समुदाय **सूर्य की बदलती स्थिति का चार्ट** बना सकते थे। ऐसे अवलोकनों से ही उन्हें ऋतुओं को समझने में मदद मिली होगी।
- इनका उपयोग **घड़ियों और कैलेंडर के रूप में भी किया** जाता था।

मेन्हीर

- **मुदुमल स्थित मेन्हीर के बारे में**
  - मुदुमल गांव **दक्षिण-पूर्वी एशिया में मेन्हीर के सबसे बड़े समूह का केंद्र** है। ये 3,500 साल पुराने हैं।
  - स्थानीय लोग इन्हें **'नीलुवु रल्लू' कहते हैं- जिसका अर्थ है खड़े पत्थर।**

4.3.4. तोप्पिकल्लु या हैट स्टोन्स (Thoppikkallu or Hat Stones)

- **केरल के मलप्पुरम जिले में तिरुनावाया के निकट नागापारम्बा** में बड़ी संख्या में **महापाषाणकालीन (megalithic) हैट स्टोन्स** पाए गए हैं।
  - तिरुनावाया **भरतपुझा नदी के तट पर स्थित है और इसे प्राचीन मन्नकम् (Mamnkam) की भूमि** माना जाता है। मन्नकम्, 12 वर्षों में एक बार आयोजित होने वाली शासकों की भव्य सभा को कहते थे।
  - हैट स्टोन्स को **मलयालम** में तोप्पिकल्लु कहा जाता है। ये **अर्धगोलाकार लेटराइट पत्थर हैं।** इनका उपयोग **महापाषाण काल के दौरान शवाधान कलशों को ढकने** के लिए किया जाता था।

4.3.5. सुंदरगढ़ प्राकृतिक मेहराब (Sundargarh Natural Arch)

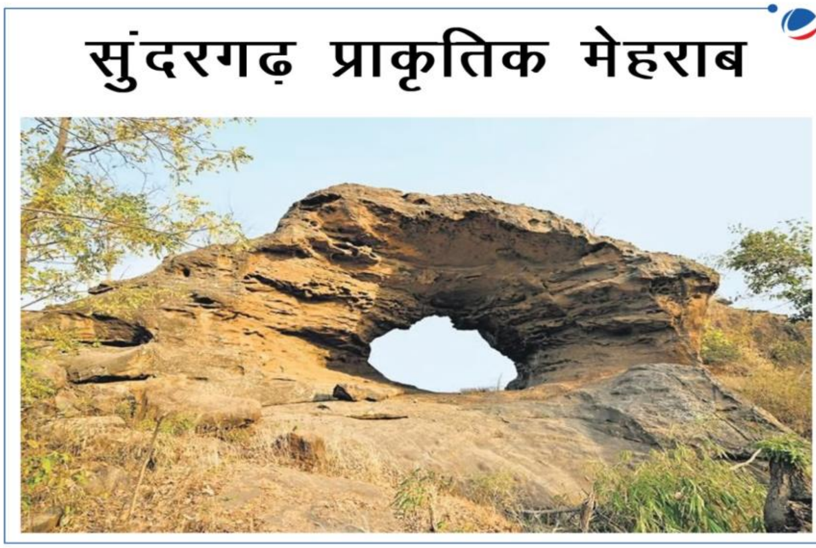

- भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (GSI) ने **'सुंदरगढ़ प्राकृतिक मेहराब' को भू-विरासत स्थल के रूप में घोषित** करने का प्रस्ताव प्रस्तुत किया है। यह **ओडिशा के सुंदरगढ़ वन प्रभाग की कनिका रेंज** में अवस्थित है।
- यह **मेहराब आकार में अंडाकार है और लगभग 12 मीटर ऊंची है।** यह **निम्न-मध्य जुरासिक काल** की है।
- इसे **भारत का सबसे बड़ा प्राकृतिक मेहराब माना** जाता है। इसके अतिरिक्त, अन्य दो प्राकृतिक मेहराब **तिरुमाला पहाड़ियों (तिरुपति) में तथा अंडमान और निकोबार द्वीप** में मौजूद हैं।

4.3.6. शिशुपालगढ़ (Sisupalgarh)

हाल ही में, भू-माफियाओं ने दुर्गीकृत प्राचीन नगर शिशुपालगढ़ की दीवार के एक हिस्से को नष्ट कर दिया।

शिशुपालगढ़ के बारे में:

- यह **भुवनेश्वर** के निकट स्थित है। इसका निर्माण **7वीं से 6ठी शताब्दी ईस्वी पूर्व** में किया गया था। यह **कलिंग राजवंश की राजधानी** थी।
- इसका दुर्गीकरण **तीसरी शताब्दी ईस्वी पूर्व** के आस-पास तब किया गया था, जब राजा खारवेल ने इस नगर की मरम्मत करवाई थी।
- इसकी योजना व संरचना पूर्णतया **वर्गाकार** रूप में है। यह चारों ओर से **सुरक्षात्मक प्राचीरों (दीवारों) से घिरा** हुआ है।
- यह नगर प्राचीन समय में **व्यापार व वाणिज्य का महत्वपूर्ण केंद्र** था।
- इसे **प्राचीन स्मारक संरक्षण अधिनियम, 1904** के प्रावधानों के तहत **केंद्रीय स्तर पर संरक्षित स्मारक** घोषित किया गया है।

4.3.7. भायखला रेलवे स्टेशन, मुंबई (Byculla Railway Station of Mumbai)

- इस रेलवे स्टेशन को **सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के लिए यूनेस्को एशिया-प्रशांत पुरस्कार** प्राप्त हुआ है।
  - यह रेलवे स्टेशन 169 साल पुराना है तथा एशिया का सबसे पुराना रेलवे स्टेशन है।
  - भायखला रेलवे स्टेशन के अतिरिक्त, **छत्रपति शिवजी महाराज वास्तु संग्राहलय म्यूज़ियम (मुंबई), गोलकुंडा किले की बावड़ियां (हैदराबाद) तथा डोमकोंडा किला (कामारेड्डी, तेलंगाना)** भी 2022 में अलग-अलग श्रेणियों में इस पुरस्कार के विजेता थे।

© Vision IAS

- वर्ष 2000 से इस पुरस्कार का उद्देश्य **सांस्कृतिक विरासत वाले क्षेत्रों के संरक्षण या उनकी पुनर्बहाली के प्रयास में लगे व्यक्ति या संस्था तथा सार्वजनिक-निजी भागीदारी को सम्मानित** करना है।

4.3.8. व्हिसलिंग विलेज (कोंगथोंग गांव) {Whistling village (Kongthong Village)}

- एक सांसद ने प्रधान मंत्री के समक्ष **मेघालय के कोंगथोंग गांव** की विकास रिपोर्ट प्रस्तुत की है। यह भारत का एकमात्र व्हिसलिंग गांव (लोगों द्वारा नाम की बजाय सीटी बजाकर एक-दूसरे को बुलाना) है।
- **कोंगथोंग गांव के बारे में:**
  - कोंगथोंग मेघालय की **पूर्वी खासी पहाड़ियों** में अवस्थित है।
  - यह अपनी अनूठी परंपरा **'जिंगरवाई लवबी'** के कारण 'व्हिसलिंग विलेज' के रूप में लोकप्रिय है। जिंगरवाई लवबी का अर्थ है **वंश की प्रथम महिला का गीत।**
  - यह एक ऐसी परंपरा है, जिसके तहत **एक माता अपने शिशु को जन्म के समय उसे नाम की बजाए एक धुन या लोरी से पुकारती है।**
  - कोंगथोंग लोगों का **संबंध सेंग खासी जनजाति** से है। यह समुदाय **खासी भाषा** बोलता है।

सरकारी योजनाएं

त्रैमासिक रिवीजन

सिविल सेवा परीक्षा में आपके ज्ञान, एनालिटिकल स्किल और सरकारी नीतियों तथा पहलों की गतिशील प्रकृति के साथ अपडेटेड रहने की क्षमता को जांचा जाता है। इसलिए इस चुनौतीपूर्ण परीक्षा के लिए एक व्यापक और सुनियोजित दृष्टिकोण काफी आवश्यक हो जाता है।

"सरकारी योजनाएं त्रैमासिक रिविजन" डॉक्यूमेंट के साथ सिविल सेवा परीक्षा में सफलता की अपनी यात्रा शुरू कीजिए। यह विशेष पेशकश आपको परीक्षा की तैयारी में एक परिवर्तनकारी अनुभव प्रदान करेगी। सावधानीपूर्वक तैयार किया गया हमारा यह डॉक्यूमेंट न केवल आपकी सीखने की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के लिए बल्कि टाइम मैनेजमेंट और याद रखने की क्षमता को बढ़ाने के लिए भी डिज़ाइन किया गया है। इस डॉक्यूमेंट को त्रैमासिक आधार पर तैयार किया जाता है। यह डॉक्यूमेंट फाइनल परीक्षा के लिए निरंतर सुधार और तनाव मुक्त तैयारी हेतु अभ्यर्थियों के लिए एक आधार के रूप में कार्य करेगा।

यह सीखने की प्रक्रिया को बाधारहित और आसान यात्रा में बदल देता है। इसके परिणामस्वरूप, आप परीक्षा की तैयारी के साथ-साथ सरकारी योजनाओं, नीतियों और उनके निहितार्थों की गहरी समझ विकसित करने में सफल होते हैं।

डॉक्यूमेंट को पढ़ने के लिए QR कोड को स्कैन कीजिए

सरकारी योजनाएं त्रैमासिक रिवीजन डॉक्यूमेंट की मुख्य विशेषताओं पर एक नज़र

1. सुर्ख़ियों में रहीं में योजनाएं: अपडेट रहिए, आगे रहिए!

इस खंड में **आपको नवीनतम घटनाक्रमों से अवगत** कराया जाता है, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि आपकी तैयारी न केवल व्यापक हो, बल्कि हालिया तिमाही के लिए प्रासंगिक भी हो। सुर्ख़ियों में रही योजनाओं के रियल टाइम एकीकरण से आप नवीनतम ज्ञान से लैस होकर आत्मविश्वास से परीक्षा देने में सक्षम बन पाएंगे।

2. सुर्ख़ियों में रहीं फ्लैगशिप योजनाएं: परीक्षा में आपकी सफलता की राह!

भारत सरकार की 'फ्लैगशिप योजनाएं' **सिविल सेवा परीक्षा के सिलेबस के कोर** में देखने को मिलती हैं। हम इस डॉक्यूमेंट में इन महत्वपूर्ण पहलों को गहराई से कवर करते हैं, जिससे सरकारी नीतियों के बारे में **आपकी गहरी समझ विकसित** हो। इन फ्लैगशिप योजनाओं पर ध्यान केंद्रित करके, हम आपको उन प्रमुख पहलुओं में महारत हासिल करने के लिए मार्गदर्शन करते हैं, जिन्हें परीक्षक सफल उम्मीदवारों में तलाशते हैं।

3. प्रश्नोत्तरी: पढ़िए, मूल्यांकन कीजिए, याद रखिए!

मटेरियल को समझने और मुख्य तथ्यों को याद रखने में काफी अंतर होता है। इस अंतर को खत्म करने के लिए, हमने इस डॉक्यूमेंट में एक 'प्रश्नोत्तरी' खंड शामिल किया है। इस डॉक्यूमेंट में **सावधानी से तैयार किए गए 20 MCQs** दिए गए हैं, जो आपकी **समझ को मजबूत करने के लिए चेकपॉइंट** के रूप में काम करते हैं। ये मूल्यांकन न केवल आपकी प्रगति का आकलन करने में मदद करते हैं बल्कि महत्वपूर्ण तथ्यों को प्रभावी ढंग से याद रखने में भी सहायक होते हैं।

'सरकारी योजनाएं त्रैमासिक रिवीजन' एक डॉक्यूमेंट मात्र नहीं है; बल्कि यह आपकी परीक्षा की तैयारी में एक रणनीतिक साथी भी है। यह आपकी लर्निंग एप्रोच में बदलाव लाता है, जिससे यह एक सतत और कुशल प्रक्रिया बन जाती है। परीक्षा की **तैयारी के आखिरी चरणों में आने वाले तनाव को अलविदा कहिए, प्रोएक्टिव लर्निंग एक्सपीरियंस** को आपनाइए और आत्मविश्वास के साथ सफलता की ओर आगे बढ़िए।

5. व्यक्तित्व (Personalities)

5.1. मिहिर भोज (Mihir Bhoja)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, **हरियाणा के कैथल में राजा मिहिर भोज की प्रतिमा का अनावरण** किया गया।

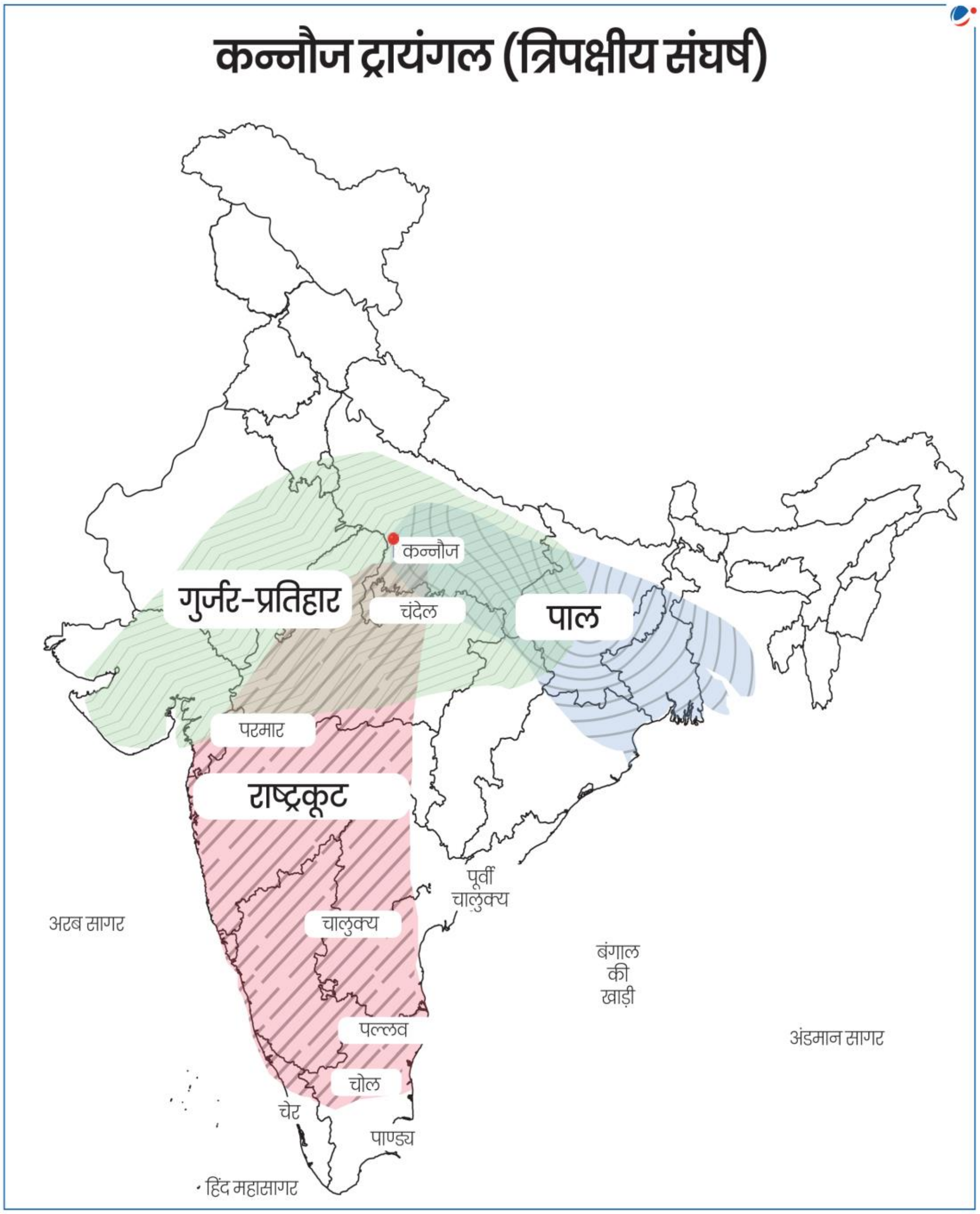

मिहिर भोज के बारे में

- वे **9वीं शताब्दी में गुर्जर-प्रतिहार राजवंश** के एक प्रमुख शासक थे।
- वह अपने **पिता रामभद्र** के उत्तराधिकारी बने थे और **836 ईस्वी में सिंहासन पर आसीन हुए थे।**
- उन्होंने **आदिवराह (भगवान विष्णु के भक्त) की उपाधि** धारण की। इसके अलावा, उनके शासनकाल के कुछ सिक्कों पर **आदिवराह** पद उत्कीर्ण है।
- **अरब व्यापारी सुलेमान** ने उन्हें **महानतम गुर्जर-प्रतिहार सम्राटों** में से एक बताया है।
- वे **कला और साहित्य के भी महान संरक्षक** थे। उन्होंने **कवि राजशेखर** को संरक्षण प्रदान किया था।

मिहिर भोज का राजनीतिक समेकन

- उन्होंने विजय और कूटनीति के माध्यम से प्रतिहार साम्राज्य को **पुनर्गठित व समेकित** किया था।
  - **वराह, दौलतपुर, कहला, पाहेवा आदि स्थानों पर पाए गए अनेक अभिलेख** यह जानकारी प्रदान करते हैं कि **मालवा, राजपूताना व मध्यदेश** पर उनका नियंत्रण था।
  - **कल्हण की राजतरंगिणी** में उल्लेख मिलता है कि उनके **साम्राज्य का विस्तार उत्तर में कश्मीर** तक था।
- **त्रिपक्षीय संघर्ष:**
  - उन्होंने **पूर्व में पालों और दक्कन में राष्ट्रकूटों के साथ कन्नौज के लिए हुए त्रिपक्षीय संघर्ष** में भाग लिया था।
  - उन्होंने पाल राजा **देवपाल** के साथ युद्ध लड़ा था। बाद में, **ग्वालियर प्रशस्ति के अनुसार, भोज ने देवपाल के पुत्र को हराया था।**
  - उनके शासनकाल के दौरान, **अमोघवर्ष और कृष्ण द्वितीय कन्नौज पर शासन करने वाले राष्ट्रकूट** राजा थे। भोज ने राष्ट्रकूटों से कन्नौज को जीतकर **अपने साम्राज्य को नर्मदा नदी तक विस्तारित किया था।**

© Vision IAS

गुर्जर प्रतिहार (730 ई. – 1036 ई.)

प्रमुख शासक	➝ नागभट्ट (संस्थापक) ➝ वत्सराज ➝ नागभट्ट द्वितीय ➝ मिहिर भोज ➝ महेन्द्रपाल ➝ जसपाल (अंतिम शासक)
बड़े नगर	➝ **उज्जैन**: वत्सराज की राजधानी ➝ **कन्नौज**: मिहिर भोज और उत्तरवर्ती शासकों की राजधानी
साहित्यिक स्रोत/अभिलेख	➝ पुलकेशिन द्वितीय का **ऐहोल अभिलेख** ➝ **ह्वेन त्सांग** का यात्रा वृतांत ➝ **बाणभट्ट** का हर्षचरित
प्रशासन	➝ राजाओं ने **'परमेश्वर', 'महाराजाधिराज'** जैसी बड़ी बड़ी उपाधियां धारण की थीं। ➝ इनके प्रशासन में **मंत्रिपरिषद का उल्लेख नहीं** मिलता है। ➝ राज्य को **भुक्तियों** में, **भुक्तियों** को **मंडलों** में और फिर **मंडलों को नगरों तथा गांवों** में विभाजित किया गया था। ➝ गांवों का प्रशासन स्थानीय स्तर पर किया जाता था।
सामाजिक–धार्मिक परिस्थितियां	➝ समाज में **जाति व्यवस्था प्रचलित** थी और **अंतरजातीय विवाह भी** होते थे। **शाही और अमीर वर्ग के लोग बहुविवाह** करते थे। ➝ यह **ब्राह्मणवादी धार्मिक व्यवस्था** के लिए प्रगति का युग था। तत्कालीन समय में **वैष्णव, शैव, शक्ति और सौर सबसे प्रमुख संप्रदाय** थे। ➝ इस काल में **मूर्ति पूजा, यज्ञ और धार्मिक स्थलों को दान देना** भी प्रचलन में थे।
कला और स्थापत्य	➝ इस राजवंश के शासक **कला, स्थापत्य कला और साहित्य के महान संरक्षक** थे। ➝ इस काल की उत्कृष्ट मूर्तियों में **विष्णु का विश्वरूप, शिव और पार्वती का विवाह, महिला आकृति सुरसुंदरी** आदि शामिल हैं। ➝ इस राजवंश की स्थापत्य कला के सबसे उत्कृष्ट कार्य को **ओसियां** में देखा जा सकता है, जहां स्थापत्य की **महा–मारू शैली में निर्मित हरिहर मंदिर** विशेष है। **ओसियां आधुनिक राजस्थान के जोधपुर जिले** में अवस्थित है। ➝ ओसियां में निर्मित आरंभिक संरचनाएं मंदिर निर्माण की **पंचायतन शैली** का उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। इस शैली में **मुख्य मंदिर चार सहायक मंदिरों** से घिरा रहता है। ➝ ग्वालियर किले में स्थित **तेली का मंदिर** भी स्थापत्य कला अद्भुत नमूना है। यह मंदिर **शक्ति–पंथ को समर्पित** है तथा इस राजवंश की सबसे आरंभिक बड़े स्तर की उन पुरानी संरचनाओं में से एक है, जो आज भी मौजूद हैं। इसका निर्माण मिहिरभोज के शासन काल में हुआ था।

- **उत्तराधिकारियों के बार–बार बदलने, पारिवारिक कलह, पश्चिम से तुर्क हमलों और पूर्व से पाल शासकों के आगे बढ़ने के कारण इस राजवंश का 1036 ई. में पतन हो गया।**

5.2. संत मीराबाई (Sant Meera Bai)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, उत्तर प्रदेश के मथुरा में **संत मीराबाई की 525वीं जयंती** मनाई गई।

संत मीरा बाई

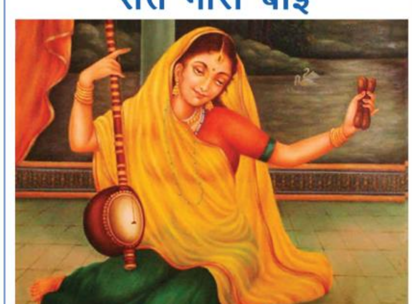

मीराबाई (1498-1546) के बारे में

- मीराबाई **भक्ति आंदोलन के महान संत कवियों में से एक** थीं। वे एक **हिंदू रहस्यवादी कवयित्री** और भगवान कृष्ण की परम भक्त थीं।
- **आरंभिक जीवन:**
  - उनका **जन्म राजस्थान के जोधपुर में राजपूत राजा रतन सिंह** के घर हुआ था। उनके बचपन का नाम **यशोदा** था।
  - **1516** में मीराबाई का विवाह **मेवाड़ के राजा राणा सांगा के पुत्र कुँवर भोज राज** से हुआ था।

- राणा सांगा ने अन्य राजपूत शासकों के साथ मिलकर मुगल शासक बाबर के खिलाफ खानवा का युद्ध (1527) लड़ा था।

- **एक संत के रूप में उनका जीवन:**
  - वे **सगुण भक्ति धारा की कवयित्री** थीं। वे बचपन से ही भगवान कृष्ण को अपना **पति** मानती थीं।
  - वे भगवान श्रीकृष्ण को **गिरिधर गोपाल** कहती थीं।
- **प्रमुख कृतियां/ रचनाएं:**
  - **"पायोजी मैंने राम रतन धन पायो"** उनकी सबसे प्रसिद्ध कविताएं हैं।
  - मीराबाई के **गीत/ काव्य ब्रज भाषा में संकलित हैं।** इन गीतों/ काव्यों का संकलन अपने आराध्य की पूजा करते समय और उसके प्रति अपनी भावनाएं व्यक्त करने के लिए गाए गए गीतों से हुआ है।
    - उनके गीतों/ काव्यों में **राग गोविंद, नरसी जी का मायरा, गीत गोविंद पर टीका, मीराबाई की मल्हार, राग विहाग और गरबा गीत** शामिल हैं।
    - **रॉबर्ट ब्लाइ और जेन हिर्श फील्ड** ने अपनी पुस्तक **"मीराबाई: एक्स्टैटिक पोयम्स"** में मीराबाई की **कुछ कविताओं का अंग्रेजी में अनुवाद** किया था।
  - **भक्तमाल ब्रज भाषा में रचित** एक काव्य संग्रह है। इसकी रचना **गुरु नाभा दास जी ने 1585** में की थी। इसमें मीराबाई के जीवन के बारे में वर्णन किया गया है।
- **समाज सुधारक के रूप में:**
  - वे **संत रविदास (रैदास) की शिष्या** थीं। संत रविदास **"अस्पृश्य"** समझी जाने वाली जाति से संबंधित थे।
  - मीराबाई ने अपने गीतों/ काव्यों में **उच्च जातियों द्वारा निर्मित मानदंडों** को खुले तौर पर **चुनौती** दी थी।

भक्ति आंदोलन के बारे में

भक्ति आंदोलन की शुरुआत **7वीं और 12वीं शताब्दी** के बीच दक्षिण भारत से मानी जाती है। इस आंदोलन के संतों ने जाति आधारित भेदभावमूलक सामाजिक व्यवस्था की आलोचना की थी और **सभी मनुष्यों की समानता** पर बल दिया था।

अलग-अलग क्षेत्रों में भक्ति आंदोलन

- **दक्षिण भारत:**
  - भक्ति आंदोलन का आरंभ **अलवार (भगवान विष्णु के भक्त) और नयनार (भगवान शिव के भक्त)** संतों के नेतृत्व में हुआ था।
    - उन्होंने अपने भजनों में **स्थानीय भाषा** का इस्तेमाल किया था। इस कारण उनका जनता से प्रत्यक्ष जुड़ाव संभव हुआ था।
  - **नयनार:** वे **भगवान शिव** के भक्त थे। इनकी संख्या 63 थी। प्रसिद्ध नयनार संत थे- **अप्पार, सुंदरार, तिरुगण, संबंदर, माणिक्कवाचकर (माणिकवासगर)** आदि।
  - **अलवार:** वे **भगवान विष्णु** के भक्त थे। इनकी संख्या 12 थी। प्रसिद्ध अलवार संत थे- **नाममलवार, तिरुमंगई अलवार, अंडाल, पेरियालवार** आदि।
    - **अंडाल के भक्ति गीतों** को **तिरुप्पवाई** कहा जाता है।
    - **अलवार संतों** के भक्ति गीत **दिव्य प्रबंधम्** में संकलित हैं।

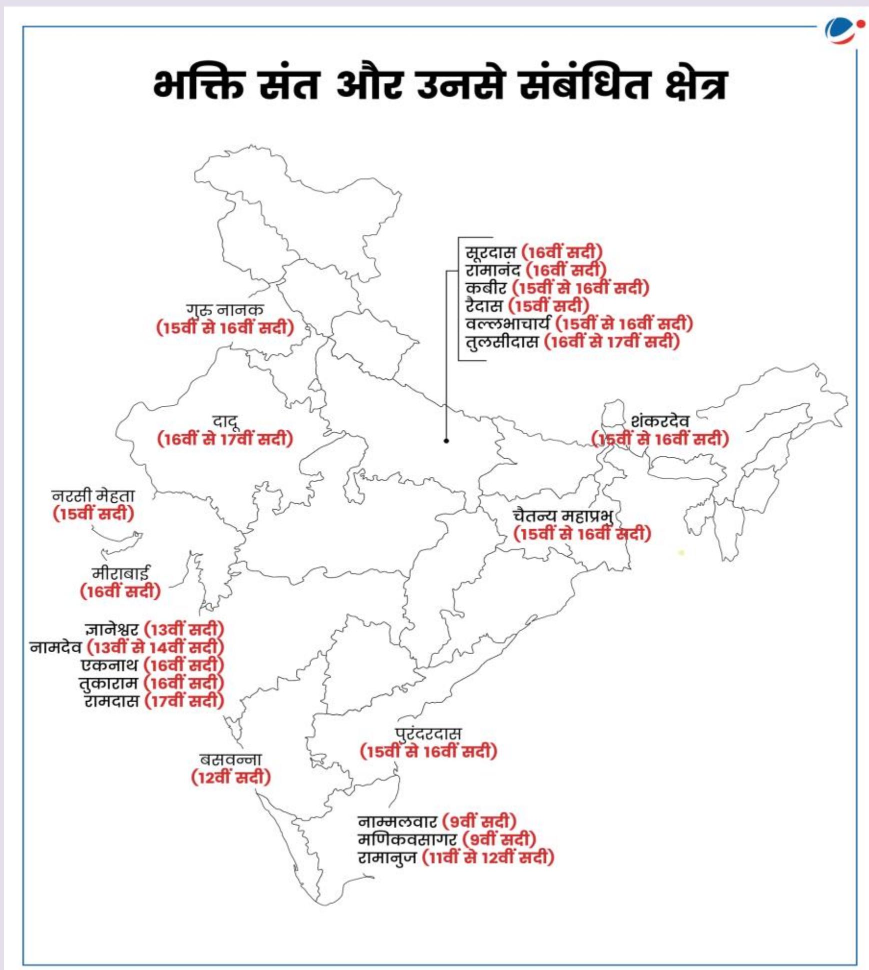

© Vision IAS

- **मध्य और उत्तर भारत:**
  - **13वीं शताब्दी के आस-पास** भक्ति आंदोलन का दक्षिण भारत से **मध्य और उत्तर भारत** में प्रसार होने लगा था। इस दौरान उत्तर भारत में भक्ति आंदोलन की एक नई लहर देखी गई थी।
  - इस क्षेत्र में प्रचलित भक्ति परंपराओं को **निम्नलिखित दो व्यापक श्रेणियों में बांटा गया है:**
    - **सगुण भक्ति धारा:** इसमें **ईश्वर के गुणयुक्त और साकार रूप** की उपासना की जाती थी। इस धारा के प्रमुख संत **तुलसीदास, मीराबाई** आदि थे।
    - **निर्गुण भक्ति धारा:** इसमें **निराकार ईश्वर** की उपासना की जाती थी। इस धारा के प्रमुख संत **कबीरदास, गुरु नानक देव** आदि थे।
- **महाराष्ट्र:**
  - **तेरहवीं से सत्रहवीं शताब्दी** तक महाराष्ट्र में बड़ी संख्या में संत-कवि हुए, जिनके सरल **मराठी भाषा** में लिखे गए गीत आज भी लोगों को प्रेरित करते हैं।
  - भक्ति की इस क्षेत्रीय परंपरा का केंद्र **पंढरपुर का विट्ठल (भगवान विष्णु का एक रूप) मंदिर** था। इन संतों ने **वारकरी संप्रदाय** का अनुसरण किया था।
  - महाराष्ट्र के प्रसिद्ध भक्ति संतों में **ज्ञानेश्वर, नामदेव, एकनाथ और तुकाराम** के साथ-साथ **सखुबाई** जैसी महिलाएं और **चोखामेला** का परिवार भी शामिल था। चोखामेला भी महाराष्ट्र के प्रमुख संत थे। उन्होंने कई **अभंगों** की रचना की थी। इनका संबंध **"अस्पृश्य"** समझी जाने वाली महार जाति से था।
  - इन संत-कवियों ने **सभी प्रकार के कर्मकांडों, धर्मपरायणता के बाह्य आडंबरों और जन्म के आधार पर सामाजिक भेदभाव का खंडन** किया था।
- **पूर्वी और पूर्वोत्तर भारत:**
  - **असम में नव-वैष्णव आंदोलन** का प्रचार-प्रसार **शंकरदेव** ने किया था।
  - **चैतन्य महाप्रभु,** बंगाल के एक प्रसिद्ध संत थे। वे **भगवान श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त** थे। उन्होंने **'संकीर्तन'** या **'लोक गायन'** के जरिए भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति का प्रसार किया।

5.3. रानी दुर्गावती (Rani Durgavati)

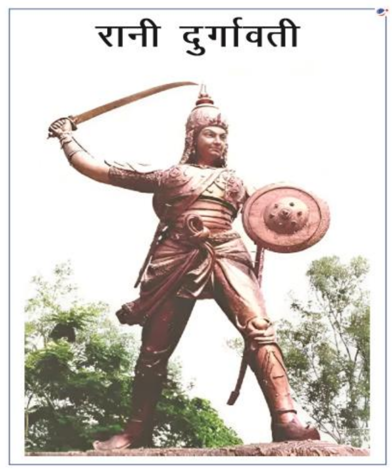

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, वीरांगना रानी दुर्गावती की **500वीं जयंती** मनाई गई।

रानी दुर्गावती के बारे में

- रानी दुर्गावती का जन्म **बांदा (उत्तर प्रदेश) में महोबा के चंदेल राजवंश** में हुआ था।
  - हालांकि, 12वीं शताब्दी के अंत तक चंदेल राजवंश का पतन हो गया था, लेकिन बाद में इसे चंदेल शासक **कीरत पाल सिंह (रानी दुर्गावती के पिता)** द्वारा पुनर्जीवित किया गया था।
- उनका विवाह 1542 ई. में **गढ़ा-कटंगा के गोंड राजवंश के शासक दलपत शाह** से हुआ था।
  - **गोंड** सबसे बड़े जनजातीय समूहों में से एक हैं। यह जनजाति मध्य भारत में निवास करती है।
- **नेतृत्व संभालना:** रानी ने 1550 ई. में दलपत शाह की मृत्यु के बाद उन्होंने **गोंड राजवंश की सत्ता** संभाली।
- **अकबर के साथ संघर्ष:** रानी के शासनकाल के दौरान, अकबर ने **आसफ खान** के नेतृत्व में गोंड साम्राज्य पर आक्रमण किया था।

चंदेल वंश

चंदेल मध्य भारत में शासन करने वाला एक राजपूत वंश (**जेजाकभुक्ति** वंश) था।	
संस्थापक	इस राजवंश की स्थापना **835 ई. में नन्नुक** ने की थी।
प्रमुख शासक	यशोवर्मन, धंग, विद्याधर, परमर्दिदेव, त्रैलोक्यवर्मन।
प्रमुख शहर	चंदेल शासकों की राजधानी खजुराहो थी। हालांकि, बाद में इसे बदलकर महोबा कर दिया गया था।
भाषा	संस्कृत और प्राकृत।
सामाजिक व्यवस्था	वर्ण व्यवस्था सामाजिक संगठन का आधार थी।
पतन	**महमूद गजनवी व कुतुबुद्दीन ऐबक** के आक्रमण के परिणामस्वरूप इस वंश का पतन हो गया था।

रानी दुर्गावती का योगदान

- **अवसंरचना का निर्माण:** उन्होंने **रानीताल, चेरीताल और अधारताल जैसे जलाशयों** का निर्माण कराया था।
  - उन्होंने अपनी राजधानी **सिंगौरगढ़ से चौरागढ़** स्थानांतरित की थी। नई राजधानी **सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण सतपुड़ा पर्वत श्रृंखला** में स्थित थी।
- **धर्म गुरुओं का संरक्षण:** रानी दुर्गावती ने **आचार्य बिट्ठलनाथ को गढ़ में पुष्टिमार्ग पंथ** की एक पीठ स्थापित करने की अनुमति दी थी। उन्होंने **वल्लभ समुदाय के धर्मगुरु विट्ठलनाथ** का स्वागत किया था और उनसे दीक्षा प्राप्त की थी।
- **मालवा के बाज बहादुर पर विजय: तारीख-ए-फरिश्ता** के अनुसार, **दुर्गावती ने मालवा के शासक बाज बहादुर को पराजित** किया था।

- **ऐतिहासिक लेखन:** दुर्गावती की कहानी **अबुल फजल (अकबर के इतिहासकार) और ब्रिटिश कर्नल स्लीमन** की रचनाओं से प्राप्त होती है।
- उन्होंने **बुन्देलखण्ड की समृद्ध विरासत** के निर्माण में योगदान दिया था। साथ ही, **कालिंजर किले के अंदर कई मंदिरों का निर्माण** करवाया था।

5.4. छत्रपति शिवाजी महाराज (Chhatrapati Shivaji Maharaj)

छत्रपति शिवाजी महाराज

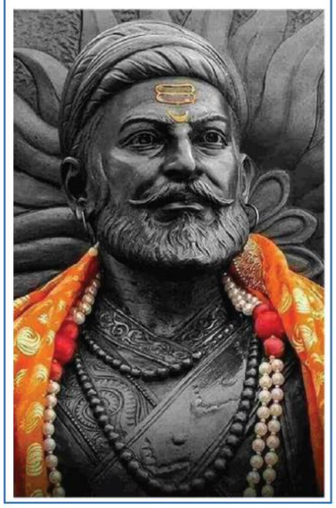

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, छत्रपति शिवाजी महाराज के **राज्याभिषेक की 350वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में महाराष्ट्र के रायगढ़ किले में समारोहों का आयोजन** किया गया।

छत्रपति शिवाजी महाराज (1627-1680) के बारे में

- **जन्म:** छत्रपति शिवाजी का जन्म 19 फरवरी 1630 को **पुणे जिले में जुन्नार के पास शिवनेरी किले** में हुआ था।
- **माता:** जीजाबाई
- **पिता:** शहाजी राजे भोसले
- छत्रपति शिवाजी महाराज ने **'देशमुख' नामक शक्तिशाली योद्धा परिवारों** के समर्थन से एक **स्थायी राज्य की स्थापना** की।

स्वराज की स्थापना

- छत्रपति शिवाजी महाराज ने **स्वराज स्थापना का कार्य पुणे क्षेत्र** में शुरू किया था।
- इस क्षेत्र के **निवासियों को मावल (Mavalas)** कहा जाता था।
- **स्वराज की स्थापना** में शिवाजी महाराज का उद्देश्य उनकी आधिकारिक मुहर या मुद्रा में स्पष्ट रूप से व्यक्त किया गया है। इनमें स्वराज के उद्देश्य के बारे में कहा गया है कि **"शिवाजी का साम्राज्य हमेशा लोगों के कल्याण के लिए तत्पर रहेगा।"**
- उन्होंने **मुरुंबदेव (राजगढ़), तोरण, कोंडाना (कोंढाणा) व पुरंदर के किलों** को अपने अधिकार में लिया और स्वराज की नींव रखी।

छत्रपति शिवाजी महाराज की प्रशासनिक संरचना

- **राजा का स्थान शासन में शीर्ष** पर था। शिवाजी को परामर्श देने के लिए एक **मंत्रिपरिषद** होती थी। इस परिषद में कुल **आठ मंत्री** शामिल थे। इन्हें **'अष्टप्रधान' कहा जाता** था। इसमें शामिल थे:
  - **पेशवा** (प्रधान मंत्री), **मजूमदार** (लेखाकार), **वाकयानवीस** (गुप्तचर विभाग, डाक और घरेलू मामले), **दबीर अथवा सुमंत** (विदेश मंत्री), **सेनापति, न्यायाधीश और पंडितराव** (धर्मार्थ अनुदानों के प्रभारी) तथा **सचिव/ सुरनविस (शाही आदेश तैयार करने वाला)।**
- छत्रपति शिवाजी महाराज ने अपने नियमित सैनिकों को **नकद वेतन दिए जाने को प्राथमिकता** दी थी। हालांकि, **कभी-कभी सेना-प्रमुखों को राजस्व अनुदान (सरंजाम)** भी दिया जाता था।
  - **मिरासदारों पर कड़ी निगरानी रखी जाती थी।** मिरासदार ऐसे लोग होते थे जिनके पास भूमि के वंशानुगत अधिकार थे।
- छत्रपति शिवाजी महाराज ने पड़ोसी मुगल क्षेत्रों पर एक प्रकार का कर लगाकर **अपनी आय में वृद्धि की थी।** इस कर को **'चौथ' (भू-राजस्व का एक चौथाई हिस्सा)** कहा जाता था।

छत्रपति शिवाजी महाराज का सैन्य संगठन

- छत्रपति शिवाजी महाराज ने गुरिल्ला और पहाड़ी युद्ध में प्रशिक्षित छोटी घुड़सवार सेना और पैदल सैन्य टुकड़ी को बनाए रखा था।
  - **मावली और हेतकरी** उनके सबसे उत्कृष्ट सैनिक थे।
- **मराठा नौसेना का गठन**
- नौसेना के जहाजी बेड़े में विविध प्रकार के चार सौ जहाज शामिल थे। इनमें **गुरब, गलबट और पाल** जैसे युद्धपोत शामिल थे।
- **छत्रपति शिवाजी महाराज की सैन्य संगठन योजना में दुर्गों को भी प्राथमिकता दी गई थी।**

© Vision IAS

- दुर्ग का संपूर्ण प्रभार किसी एक अधिकारी को नहीं सौंपा गया था। इसकी बजाय, प्रत्येक किले में एक **हवलदार** (चाबियों का प्रभारी), एक **सबनीस** (उपस्थिति नामावली और सरकारी पत्राचार के लिए) तथा एक **सरनोबत** (चौकी का प्रभारी) होते थे।
- **उन्होंने समुद्री दुर्गों (किलों) का भी निर्माण करवाया था।** ये दुर्ग **नौसेना को सुरक्षा** प्रदान करते थे तथा **जंजीरा के सिद्दी और पुर्तगालियों पर नियंत्रण** रखते थे।
  - **उन्होंने सुवर्णदुर्ग का निर्माण करवाया था।** उन्होंने 1664 में **मालवन में सिंधुदुर्ग** का निर्माण शुरू करवाया था। लगभग इसी समय उन्होंने **विजयदुर्ग** नामक किले को भी मजबूत करवाया था।
  - उन्होंने सिद्दियों की शक्ति का मुकाबला करने के लिए **राजपुरी** के सामने एक छोटे से द्वीप पर **पद्मदुर्ग नामक किले** का भी निर्माण करवाया था।

5.5. सर सैयद अहमद खान (Sir Syed Ahmed Khan)

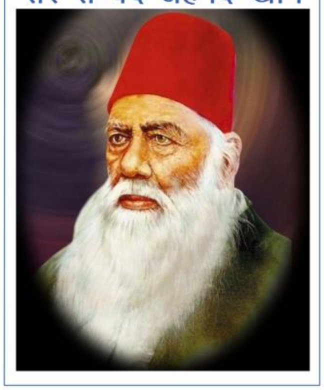

सुर्ख़ियों में क्यों?

2023 में **सर सैयद अहमद खान की 125वीं पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि अर्पित** की गई थी।

सर सैयद अहमद खान (1817-1898) के बारे में

- उन्होंने एक **सिविल सेवक, पत्रकार, शिक्षाविद्, समाज सुधारक और इतिहासकार** के रूप में काम किया था।
- **धार्मिक दृष्टिकोण**
  - सर सैयद अहमद खान ने **इस्लाम की व्याख्या में इज्तिहाद (स्वतंत्र चिंतन व तर्कवाद) की वैधता पर बल** दिया था।
  - सर सैयद ने **कुरान की शिक्षाओं** और आधुनिक विज्ञान द्वारा खोजे गए प्रकृति के नियमों **के बीच समानता** स्थापित करने पर बल दिया था।
- **रचनाएं:**
  - उन्होंने **"असबाब-ए-बग़ावत-ए-हिंद (सैन्य विद्रोह के कारण)"** नामक शीर्षक से एक लेख भी लिखा था। इसमें उन्होंने देशी परिप्रेक्ष्य से विद्रोह के कारणों को समझाने का प्रयास किया था।
  - उन्होंने **'अलीगढ़ इंस्टीट्यूट गजट'** नामक पत्रिका प्रकाशित की थी। यह पत्रिका **साइंटिफिक सोसाइटी** का एक अभिन्न अंग थी।
  - सर सैयद अहमद खान ने **तहज़ीब उल अखलाक (समाज सुधारक)** नामक पत्रिका की शुरुआत की थी। इसका उद्देश्य सामाजिक और धार्मिक मुद्दों पर लोगों की चेतना को जागृत करना था।
  - वे ईसाई धर्म के भी जानकार थे। उन्होंने **'कमेंट्री ऑन द होली बाइबल'** नामक पुस्तक की रचना की थी।
  - **ऐतिहासिक दस्तावेज़ीकरण: "आसार-उस-सनादीद"** जैसी उनकी रचनाओं ने भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने में योगदान दिया था।

एक समाज सुधारक के रूप में उनकी भूमिका

- **शिक्षा क्षेत्रक में बदलाव:**
  - सर सैयद अहमद खान ने **1863 में साइंटिफिक सोसाइटी** की स्थापना की थी। इसका उद्देश्य मुसलमानों में **वैज्ञानिक दृष्टिकोण** पैदा करना था।
  - सर सैयद ने यह अनुभव कर लिया था कि **मुसलमानों की उन्नति आधुनिक शिक्षा अपनाने पर और अंग्रेजी भाषा में निपुणता प्राप्त करने पर निर्भर है।**
  - उन्होंने **1875 में अलीगढ़ में मुहम्मद एंग्लो-ओरिएंटल कॉलेज** की स्थापना की थी तथा **अलीगढ़ आंदोलन** की शुरुआत की थी।
  - वे **अज्ञानता, धार्मिक असहिष्णुता और तर्कहीनता** के खिलाफ थे।
- **राष्ट्रीय आंदोलन के विरोधी:**
  - अपने बाद के वर्षों में, सर सैयद ने **भारतीय मुसलमानों को राष्ट्रीय आंदोलन में शामिल नहीं** होने के लिए प्रोत्साहित किया था।
  - उन्हें **द्वि-राष्ट्र सिद्धांत** के संस्थापकों में से एक माना जाता है।

- **महिलाओं के अधिकारों के संबंध में उनके विचार रूढ़िवादी थे:**
  - सर सैयद अहमद खान ने महिलाओं के लिए **"असंगठित ट्यूटर आधारित घरेलू शिक्षा"** का समर्थन किया था। उनका मानना था कि महिलाओं को उनकी पारिवारिक भूमिकाओं पर अधिक ध्यान केंद्रित करना चाहिए। हालांकि, महिलाओं के प्रति इस तरह की धारणा रखने के कारण उन्हें आलोचना का सामना करना पड़ा था।
  - यद्यपि, उन्होंने **बहुविवाह, शिशु-हत्या (Infanticide) और बाल विवाह की निंदा** की थी।

5.6. महर्षि दयानंद सरस्वती (Maharshi Dayanand Saraswati)

सुर्ख़ियों में क्यों?

केंद्र सरकार ने दयानंद सरस्वती की **200वीं जयंती** के उपलक्ष्य में साल भर तक चलने वाले समारोहों की निगरानी के लिए एक उच्च स्तरीय समिति का गठन किया।

दयानंद सरस्वती (1824-1883) के बारे में

- वे एक **समाज सुधारक** थे। उनका जन्म **1824 में काठियावाड़ (गुजरात) के मोरबी** में हुआ था।
- **मूल नाम:** मूल शंकर
- उन्होंने **स्वामी विरजानन्द के सानिध्य में रहते हुए मथुरा में पाणिनि और पतंजलि की रचनाओं का अध्ययन** करना तथा उपदेश देना शुरू किया था।
- **साहित्यिक रचनाएं:**
  - **सत्यार्थ प्रकाश:** यह उनकी हिन्दी में एक रचना है।
  - **वेद भाष्य भूमिका:** यह वेदों पर उनकी टीका का परिचय है, तथा
  - **वेद भाष्य:** यह यजुर्वेद पर संस्कृत में एक वैदिक भाष्य है।

दयानंद सरस्वती का दर्शन

- **वैदिक विचारधारा:**
  - उन्होंने **मानव निर्मित कर्मकांड और मूर्ति पूजा का विरोध** किया था। उन्होंने **वैदिक विचारधाराओं को पुनर्जीवित** करने की दिशा में काम किया था।
  - उन्होंने **वेदों की परम सत्ता को स्वीकार** किया था।
  - उनकी पुस्तक **"सत्यार्थ प्रकाश" में 'वैदिक सिद्धांतों की ओर वापसी'** पर जोर दिया गया है।
  - उन्होंने **"वेदों की ओर लौटो"** का नारा दिया था।
- **जाति प्रथा:**
  - उन्होंने दावा किया था कि जाति वंशानुगत नहीं बल्कि **व्यक्ति की प्रतिभा और स्वभाव** पर निर्धारित होती है।
  - हालांकि, उन्होंने **जाति संस्था का पूरी तरह से विरोध नहीं किया था, लेकिन उन्होंने इसके भीतर महत्वपूर्ण सुधारों** की वकालत की थी।
  - वे **छुआछूत की प्रथा के खिलाफ** थे और सभी जातियों के लिए **वैदिक शिक्षा की वकालत** करते थे।
- **महिला एवं शिक्षा:**
  - दयानंद सरस्वती ने **बाल विवाह और विधवा महिलाओं के बहिष्कृत स्थिति में रहने का विरोध** किया था।
  - इसके अलावा, उन्होंने महिलाओं की शिक्षा के लिए एक अभियान भी चलाया था। उनके अनुसार, शिक्षा का भार राजा/ राज्य को उठाना चाहिए। वे **अनिवार्य शिक्षा** के पक्ष में थे।
  - महर्षि दयानंद की स्मृति में **लाला हंसराज ने एंग्लो-वैदिक स्कूलों की स्थापना** की थी। इससे शिक्षा प्रणाली में पूर्ण बदलाव की शुरुआत हुई थी। इसका उद्देश्य **भारतीय छात्रों को समकालीन अंग्रेजी शिक्षा के साथ-साथ वेदों के अध्ययन-अध्यापन** के लिए एक अद्यतित पाठ्यक्रम भी प्रदान करना था।
- **राजनीतिक दर्शन: दयानंद सरस्वती के राजनीतिक दर्शन के दो केंद्रीय विचार हैं-**
  - पहला **'प्रबुद्ध राजशाही'** का विचार है। यह एक अवधारणा है, जिसे उन्होंने **मनुस्मृति** से उधार लिया था। इसका अर्थ है यह एक ऐसी राजशाही है, जो पूरी तरह से **धर्म के पालन पर आधारित** है।
  - दूसरी, कुछ हद तक विरोधाभासी धारणा **निर्वाचित प्रतिनिधित्व, यानी लोकतंत्र** से संबंधित है।

- **सामाजिक आंदोलन:** उन्होंने **गोरक्षा आंदोलन और शुद्धि कार्यक्रम** शुरू किये थे।
- **राष्ट्रीय आंदोलन:**
    - **स्वराज का विचार:** उन्हें **1876 में पहली बार स्वराज (स्व-शासन) शब्द** का उपयोग **"इंडिया फॉर इंडियंस"** के रूप में करने का श्रेय दिया जाता है। इसका आगे चलकर **लोकमान्य तिलक और महात्मा गांधी** जैसे नेताओं ने भी इस्तेमाल किया था।
    - **स्वदेशी को बढ़ावा देना:** उन्होंने स्वदेश निर्मित वस्त्रों के उपयोग की वकालत की थी तथा देश में ही कारखानों की स्थापना का समर्थन किया था। कई देशी राजाओं से बात करने के बाद, **उन्होंने उन्हें स्वदेशी के लिए प्रेरित** किया था।

आर्य समाज और वैदिक स्कूल

- 1875 में दयानंद सरस्वती ने **बॉम्बे में आर्य समाज** की स्थापना की थी। इसके संविधान को **लाहौर** में अंतिम रूप दिया गया था।
- यह एक **एकेश्वरवादी हिन्दू व्यवस्था** है, जो **आनुष्ठानिक कर्मकांडों और सामाजिक हठधर्मिताओं को नकारती** है।
- इसका मुख्य उद्देश्य **हिंदू धर्म को काल्पनिक मान्यताओं से दूर** ले जाना था। **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** आर्य समाज का नारा था। इसका अर्थ है, **"विश्व को आर्य (श्रेष्ठ) बनाते चलो" अर्थात संसार को मनुष्यों के रहने के लिए सभी तरीकों से सर्वोत्तम स्थान बनाना।**
- यह पहला हिन्दू संगठन है, जिसने हिन्दुत्व में **धर्मांतरण** का समावेश किया था।
- **आर्य समाज के कुछ महत्वपूर्ण सिद्धांत, जो सार्वभौमिकता के विचार पर आधारित हैं।**
    - **शुद्ध ज्ञान का स्रोत ईश्वर है।**
    - **कार्यों का नैतिक औचित्य अनिवार्य है।**
    - **अज्ञानता के अंधकार को ज्ञान की किरणें अवश्य दूर करती हैं।**
- आर्य समाज ने बड़ी संख्या में **शैक्षणिक संस्थान** और **अनाथालय** खोले थे। **1886 में लाहौर में पहला दयानंद एंग्लो वैदिक (DAV) स्कूल** खोला गया था।
- 1892 में आर्य समाज का **गुरुकुल (रूढ़िवादी) और कॉलेज समूह (उग्र सुधारवादी)** में विभाजन हो गया था।
    - रूढ़िवादी गुट के नेता **स्वामी श्रद्धानंद** थे और **उग्र सुधारवादी** गुट के नेता **लाला हंसराज** थे।
    - यह विभाजन इस बात को लेकर हुआ था कि **किस भाषा को बढ़ावा** दिया जाए और **किस प्रकार का भोजन** परोसा जाए।

5.7. श्री अरबिंदो घोष (Sri Aurobindo Ghosh)

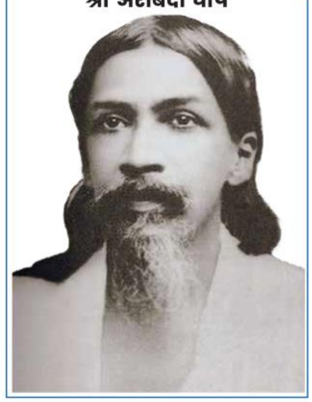

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, श्री अरबिंदो की **150वीं जयंती के उपलक्ष्य में वर्ष भर चलने वाले समारोह का पुडुचेरी के ऑरोविले** में समापन हुआ।

श्री अरबिंदो घोष के बारे में

- वे 20वीं सदी के **बंगाली कवि, दार्शनिक, आध्यात्मिक नेता और क्रांतिकारी स्वतंत्रता सेनानी** थे।
- **राष्ट्रीय आंदोलन में भागीदारी:**
    - वे **भारत के गरमपंथी आंदोलन के अग्रदूत थे**। उन्होंने **1902 में अनुशीलन समिति** की स्थापना में मदद की थी।
    - **वर्ष 1905 में बंगाल के विभाजन** के बाद श्री अरबिंदो ने अपनी नौकरी छोड़ दी और सक्रिय रूप से राजनीति में शामिल हो गए।
    - भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का सूरत अधिवेशन 1907 में हुआ था, इसे **सूरत विभाजन** के नाम से भी जाना जाता है। इस अधिवेशन के दौरान **वह नरमपंथियों के खिलाफ बाल गंगाधर तिलक के नेतृत्व वाले गरमपंथी समूह में शामिल** हो गए थे।
    - श्री अरबिंदो ने **हिंसा का नहीं, बल्कि निष्क्रिय प्रतिरोध** का समर्थन किया था। हालांकि, उन्होंने स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु हिंसा का सहारा लेना गलत नहीं माना था।
    - अरबिंदो को **मई, 1908 में अलीपुर षड्यंत्र कांड** में गिरफ्तार कर लिया गया था।
- **साहित्यिक योगदान:**
    - वर्ष 1893-94 में **इंदु प्रकाश** में उनके द्वारा लिखे गए लेखों को **"न्यू लैम्प्स फॉर ओल्ड"** शीर्षक से प्रकाशित किया गया था। इसमें उन्होंने कांग्रेस की **अति उदारवादी राजनीति की आलोचना** की थी।

- अरबिंदो ने **मार्च 1906** में बंगाली समाचार पत्र **युगान्तर में, खुले विद्रोह और पूर्ण स्वतंत्रता** का प्रचार किया था।
- उन्होंने **बिपिन चंद्र पाल** द्वारा स्थापित **बंदे मातरम्** समाचार-पत्र का संपादन भी किया था।
- उन्होंने दो साप्ताहिक पत्रिकाएं शुरू की थीं। इनके नाम थे- **कर्मयोगी (अंग्रेजी समाचार-पत्र)** और **धर्म (बंगाली समाचार-पत्र)।**
- वर्ष 1914 में उन्होंने एक **दार्शनिक पत्रिका 'आर्य'** का भी प्रकाशन शुरू किया था।
- कविताओं, पत्रों और निबंधों के रूप में संकलित अन्य कृतियां- **एस्सेज़ ऑन गीता (1922), कलेक्टेड पोयम्स एंड प्लेज़ (1942), द सिंथेसिस ऑफ योगा (1948), द ह्यूमन साइकिल (1949), द आइडियल ऑफ ह्यूमन यूनिटी (1949), सावित्री: ए लीजेंड एंड ए सिंबल (1950) आदि।**

- **आध्यात्मिक योगदान:**
  - अरबिंदो ने **1910 तक भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई थी।** इसके बाद वे एक आध्यात्मिक सुधारक बन गए थे।
  - उन्होंने इसी अवधि में **लाइफ डिवाइन, एसेज ऑन गीता, द सिंथेसिस ऑफ योगा, महाकाव्य 'सावित्री'** आदि जैसी अपनी महत्वपूर्ण कृतियों की रचना की थी।
  - उन्होंने **'एकात्म योग' (Integral Yoga) नामक एक योग साधना** का विकास किया था।
  - उन्होंने **आध्यात्मिक साधको के एक समुदाय** की स्थापना की थी। यह बाद (1926) में **मीरा अल्फासा** के सहयोग से **श्री अरबिंदो आश्रम (पुडुचेरी)** के रूप में स्थापित हुआ।
    - मीरा अल्फासा ने **तमिलनाडु में ऑरोविले अर्थात भोर के शहर** की स्थापना की थी। यह एक **शांतिपूर्ण, प्रगतिशील और सामंजस्यपूर्ण अस्तित्व** के लिए निर्मित एक सार्वभौमिक शहर था।
- **अरबिंदो का जीवन संबंधी दर्शन:**
  - उनके अनुसार जीवन **आदर्शवाद, यथार्थवाद, प्रकृतिवाद और व्यावहारिकता** का संश्लेषण है।
  - उनके अनुसार **ज्ञान, भक्ति और कर्म** मनुष्य को दिव्य मार्ग/ पथ पर ले जा सकते हैं।
    - हालांकि, एक मजबूत व्यक्तित्व के लिए **आध्यात्मिकता, रचनात्मकता और बौद्धिकता का संश्लेषण** आवश्यक है।
  - **श्री अरबिंदो मानव द्वारा बनाए गए किसी भी तरह के विभाजन में विश्वास नहीं करते थे।** यहीं कारण है कि उन्होंने राष्ट्रीय चेतना जागृत करने में सामाजिक असमानताओं को एक प्रमुख बाधा माना था।
  - **वे श्री रामानुजाचार्य की शिक्षा से प्रभावित थे**, जिन्होंने बहिष्कृत (Outcast) लोगों को हिंदू धर्म में शामिल करने की बात की थी।

5.8. भगवान बिरसा मुंडा (Bhagwan Birsa Munda)

सुर्ख़ियों में क्यों?

जनजातीय गौरव दिवस 2021 से प्रत्येक वर्ष **15 नवंबर** को मनाया जाता है। इसका आयोजन जनजातीय समुदायों के स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदानों को सम्मान देने के लिए किया जाता है।

बिरसा मुंडा

अन्य संबंधित तथ्य

- 15 नवंबर की तिथि **श्री बिरसा मुंडा की जयंती** भी है। उन्हें देश भर के जनजातीय समुदाय भगवान के रूप में पूजते हैं।
- इस अवसर पर सरकार ने PVTGs के लिए **'विकसित भारत संकल्प यात्रा'** और **प्रधान मंत्री जनजाति आदिवासी न्याय महाअभियान (PM JANMAN)** की शुरुआत की।

बिरसा मुंडा (1875-1901) के बारे में

- **प्रारंभिक जीवन:** बिरसा मुंडा को **'धरती आबा'** के नाम से भी जाना जाता है। उनका जन्म **छोटा नागपुर पठार क्षेत्र (झारखंड) के खूंटी जिले के उलिहातू** में मुंडा जनजाति में हुआ था।
- **सामाजिक सुधार:** उन्होंने **प्रार्थना के महत्त्व, शराब से दूर रहने, ईश्वर में विश्वास रखने और एक आचरण संहिता का पालन करने** पर जोर दिया था।
  - इन्हीं आदर्शों के आधार पर उन्होंने **बिरसाइत मत** की शुरुआत की थी।

© Vision IAS

- **उलगुलान आंदोलन:** उन्होंने स्थानीय अधिकारियों द्वारा जनजातियों के शोषण के खिलाफ **'उलगुलान' (The Great Tumult) नामक आंदोलन** शुरू किया था।
    - इस आंदोलन के दबाव में ब्रिटिश शासन ने **1908 में छोटानागपुर काश्तकारी अधिनियम** पारित किया था। इस अधिनियम ने **आदिवासी लोगों से गैर-आदिवासियों को भूमि हस्तांतरित करने पर प्रतिबंध** लगा दिया था।

5.9. श्री अल्लूरी सीताराम राजू (Shri Alluri Sitarama Raju)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, श्री अल्लूरी सीताराम राजू की **125वीं जयंती और रम्पा विद्रोह की 100वीं वर्षगांठ** के अवसर पर **हैदराबाद** में वर्ष भर चलने वाले उत्सव का शुभारंभ किया गया।

आरंभिक जीवन

- **जन्म स्थान:** इनका जन्म 04 जुलाई, 1897 को **आंध्र प्रदेश के भीमावरम** के निकट **मोगल्लु गांव** में हुआ था।

भारत की आजादी में योगदान

- **वे असहयोग आंदोलन (NCM) के दौरान महात्मा गांधी से प्रभावित हुए थे:**
    - उन्होंने आदिवासियों को **स्थानीय पंचायत अदालतों में न्याय पाने और औपनिवेशिक अदालतों का बहिष्कार करने के लिए प्रेरित** किया था।
    - उन्होंने लोगों को **खादी पहनने और मद्यपान का त्याग करने के लिए प्रेरित** किया था।
- **रम्पा विद्रोह (1922-1924):**
    - इसे **मन्यम विद्रोह** के रूप में भी जाना जाता है, जिसका शाब्दिक अर्थ है- **वन क्षेत्र।**
        - स्थानीय लोगों द्वारा उन्हें **"मन्यम वीरुडु" (जंगलों का नायक)** भी कहा जाता है।
    - **अगस्त 1922** में, श्री अल्लूरी सीताराम राजू ने अंग्रेजों के अत्याचारी शासन के खिलाफ आंदोलन शुरू किया था।
        - 1920 के दशक की शुरुआत तक यह **संगठित गुरिल्ला संघर्ष** के रूप में फैल गया।
        - आधुनिक हथियार प्राप्त करने के लिए उन्होंने इसे दुश्मन से छीनने का रास्ता अपनाया। इसके लिए उन्होंने **पुलिस स्टेशनों** पर हमले शुरू कर दिए।
        - इस तरह का पहला हमला **विशाखापत्तनम के चिंतापल्ली पुलिस स्टेशन** पर किया गया था।
    - 7 मई, 1924 को श्री अल्लूरी सीताराम राजू शहीद हो गए।
    - रम्पा विद्रोह ने ओडिशा के आदिवासियों को आगे भी संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया। फलतः उन्होंने वन कानूनों का उल्लंघन करने के साथ-साथ लगान न चुकाने को लेकर भी संघर्ष शुरू कर दिया।
- **वे कलकत्ता के गुप्त संगठनों** के सदस्य भी रहे थे, जहां से उन्होंने बम बनाना सीखा था।

रम्पा विद्रोह के पीछे के कारक

- **रम्पा और गुडेम पहाड़ियों से आदिवासी आबादी के अधिकारों को छीनना:** 1882 में मद्रास वन अधिनियम पारित किया गया। इसके तहत इन क्षेत्रों में आदिवासी समुदायों के मुक्त आवागमन तथा लघु वन उपजों के संग्रह को प्रतिबंधित कर दिया गया।
- कृषि की पारंपरिक **पोडु प्रणाली** पर प्रतिबंध लगा दिया गया। इसे ही कर्तन एवं दहन स्थानांतरण[9] कहा जाता है।
- **आदिवासियों का शोषण:**
    - **वेट्टी श्रमिक (अवैतनिक मजदूर)।**
    - **गोथी श्रमिक (ऋणी बंधुआ मजदूर)।**
    - **कुली श्रम की प्रणाली।**
- **मुत्तदार (गांव का मुखिया) की शक्ति कम कर दी गई:** रम्पा क्षेत्र के पारंपरिक सामाजिक-आर्थिक ढांचे के अंतर्गत मुत्तदार अपनी वर्चस्वशाली स्थिति के कारण वास्तविक शासक थे।
    - ब्रिटिश शासन ने जनजातीय समुदाय की इस शक्ति संरचना को नष्ट कर दिया था, जिससे मुत्तदार नाराज हो गए थे।

[9] Slash and burn shifting cultivation

5.10. काज़ी नजरुल इस्लाम (Kazi Nazrul Islam)

सुर्ख़ियों में क्यों?

काज़ी नज़रुल इस्लाम

हाल ही में, **'पिप्पा'** नाम से एक फिल्म रिलीज़ हुई है। इस फिल्म में **काजी नजरुल इस्लाम के 1922 के ब्रिटिश-विरोधी गीत "करार ओइ लौहो कोपाट (जेल की लोहे की सलाखें)"** को एक नए रूप में प्रदर्शित किया गया है। नए रूप में इस गीत की लय और धुन में बदलाव किया गया है, जिसकी **बांग्लादेश** में व्यापक स्तर पर **आलोचना** की जा रही है।

काज़ी नजरुल इस्लाम (1899-1976) के बारे में

- **बचपन और आरंभिक जीवन:**
  - उनका जन्म **पश्चिम बंगाल के बर्दवान (अब वर्धमान) जिले के चुरुलिया गांव** में हुआ था।
  - 1917 में, वे एक सैनिक के रूप में **ब्रिटिश इंडियन आर्मी** में शामिल हुए थे।
- **नजरुल इस्लाम 'बिद्रोही कोबी' (विद्रोही कवि)** के नाम से लोकप्रिय हैं। उन्होंने अपनी कई कृतियों में दासता, घृणा और परंपरा के नाम पर लोगों के किए जाने वाले **उत्पीड़न के खिलाफ** आवाज उठाई थी।
- उन्होंने **2000 से अधिक गीत** लिखे थे और उन्हें संगीतबद्ध किया था। ये गीत **'नजरुल गीती'** के नाम से लोकप्रिय हैं।
- **प्रमुख कृतियां/ रचनाएं:**
  - नज़रुल ने अपना पहला लेख **1919 में 'द ऑटोबायोग्राफी ऑफ ए डेलिंक्वेंट' या 'सौगात'** शीर्षक से प्रकाशित किया था।
    - 1920 में नज़रुल ने सेना की नौकरी छोड़ दी और **'बंगाली मुस्लिम लिटरेरी सोसाइटी'** में शामिल हो गए।
  - **बंधन-हारा (बंधन से मुक्ति), बोधन, शत-इल-अरब, बादल प्रतर शरब** आदि उनकी कुछ प्रसिद्ध रचनाएं हैं।
  - नज़रुल ने **1922** में अपनी प्रसिद्ध कविता **'अनोंदोमोइर अगोमोने'** लिखी थी। इसके लिए ब्रिटिश सरकार ने उन्हें एक साल की जेल की सजा दी थी।
  - 1930 में उनकी पुस्तक **प्रलयशिखा** पर प्रतिबंध लगा दिया गया था और **राजद्रोह** का आरोप लगाकर उन्हें जेल की सजा दे दी गई थी। उन्हें **गांधी-इरविन समझौते (1931) पर हस्ताक्षर** होने के बाद जेल से रिहा किया गया था।
- **राष्ट्रीय आंदोलन में उनकी भूमिका:**
  - काज़ी नजरुल इस्लाम ने अपनी कविताओं, नाटकों आदि के जरिए लोगों को **ब्रिटिश शासन के खिलाफ लड़ने** के लिए प्रेरित किया था।
  - उन्होंने **स्वदेशी और खिलाफत आंदोलन** में अपनी रचनाओं के माध्यम से सक्रिय भूमिका निभाई थी।
  - उन्होंने **श्रमिक प्रजा स्वराज दल** का गठन किया था।
    - **श्रमिक प्रजा स्वराज दल,** एक समाजवादी राजनीतिक दल था। यह दल **भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC)** के भीतर काम करता था।
  - नजरुल ने ब्रिटिश साम्राज्य से राजनीतिक स्वतंत्रता की मांग नहीं करने पर **"खिलाफत" आंदोलन** और **कांग्रेस** की आलोचना की थी।
- **हिंदू मुस्लिम एकता:** 1926 में **कलकत्ता** में हिंदू-मुस्लिम दंगों के दौरान, उन्होंने हिंदू-मुस्लिम एकता बनाए रखने की अपील की थी।
- **पुरस्कार एवं उपलब्धियां:**
  - **1960** में उन्हें भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मानों में से एक **पद्म भूषण** से सम्मानित किया गया था।
  - **बांग्लादेश** ने उन्हें **'राष्ट्र कवि'** और **'एकुशे पदक'** से सम्मानित किया था।
    - **'एकुशे पदक'** बांग्लादेश का **दूसरा** सर्वोच्च नागरिक सम्मान है।

5.11. राजा रवि वर्मा (Raja Ravi Varma)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, राजा रवि वर्मा की **175वीं जयंती** मनाई गई है।

भारतीय कला में योगदान:

राजा रवि वर्मा

- **लिथोग्राफी के प्रस्तावक:** वह भारत में **लिथोग्राफी के शुरुआती समर्थकों** में से एक थे।
    - लिथोग्राफी **एक सपाट पत्थर या धातु की प्लेट पर चित्रण करने की कला** को दर्शाता है।
- उन्होंने **यूरोपीय अकादमिक कला की तकनीकों के साथ भारतीय परंपरा के एक सुंदर मिश्रण** को पूरा करने में सफलता प्राप्त की थी।
- **पौराणिक कथाओं की अंतर्दृष्टि:** उन्होंने **अपने चित्रों में पौराणिक कथाओं के विषयों का चित्रण** किया था।
    - इनमें से उनके द्वारा चित्रित कुछ विख्यात उदाहरण हैं- **दुष्यंत और शकुंतला का प्रेम प्रसंग, नल व दमयंती की कथा, भगवान श्रीराम की वरुण देव पर विजय आदि।**
- **वे सामान्य जन के कलाकार थे:** वे अपने चित्रों की **सस्ती प्रतियां** जनता को उपलब्ध कराने के लिए जाने जाते थे।
- **महत्वपूर्ण तथ्य:**
    - उन्हें **'आधुनिक भारतीय कला का जनक'** माना जाता है।
    - उनका जन्म **त्रावणकोर के किलिमानूर महल में 1848** में हुआ था
    - उन्हें **राजा** की उपाधि व्यक्तिगत तौर पर **लॉर्ड कर्जन** ने प्रदान की थी।
    - **उनकी चित्रकारियों का वर्गीकरण:** पोर्ट्रेट, पोर्ट्रेट आधारित संकलन, मिथकों व किंवदंतियों पर आधारित नाट्य संकलन आदि।
    - **गुरु:** रामास्वामी नायडू (वाटर पेंटिंग) तथा एक डच चित्रकार थियोडोर जेन्सेन (ऑयल पेंटिंग)
- **पुरस्कार:** कैसर-ए हिंद स्वर्ण पदक (1904); केरल सरकार ने उनके नाम पर एक पुरस्कार की शुरुआत की है आदि।

5.12. सुर्ख़ियों में रहे अन्य व्यक्तित्व (Other Personalities in News)

5.12.1. श्रीमंत शंकरदेव (Srimanta Sankaradeva)

श्रीमंत शंकरदेव

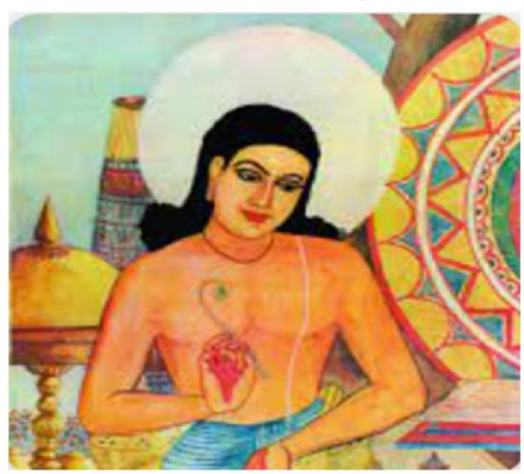

- वे **असम** के एक वैष्णव संत, विद्वान, नाटककार और सामाजिक-धार्मिक सुधारक थे। इनका **जन्म 1449** में हुआ था।
- उन्होंने **वैष्णववाद** के एक रूप **"एक-शरण-हरि-नाम-धर्म"** का प्रचार किया था। इसमें **भगवान कृष्ण** को परम, शाश्वत और एक माना जाता है।
- उनकी धार्मिक व्यवस्था **पूरी तरह से एकेश्वरवादी** थी।
- **काव्य रचनाएं:** कीर्तन-घोष, हरिश्चंद्र-उपाख्यान, कुरुक्षेत्र-यात्रा आदि।
- **योगदान**
    - उन्हें **अंकिया-नाट** (पारंपरिक असमिया एकांकी नाटक), **बोरगीत, भाओना और सत्रिया नृत्य** (भारत की शास्त्रीय नृत्य शैली) **की शुरुआत** का श्रेय दिया जाता है।
    - उन्होंने **नामघरों** की स्थापना की प्रथा शुरू की थी। ये सस्वर पाठ और प्रार्थना घर हैं।
    - **दृश्य कलाएं:** सप्त बैकुंठ, वृंदावनी वस्त्र आदि।

5.12.2. अहिल्याबाई होल्कर (1725 – 1795) {Ahilyabai Holkar (1725 – 1795)}

- महाराष्ट्र सरकार ने **अहमदनगर जिले का नाम बदलकर अहिल्यानगर** करने का निर्णय लिया है।
- वह **18वीं सदी के दौरान मालवा प्रांत की रानी** थी।
- उन्होंने **भरतपुर के राजा के खिलाफ कुंभेर की लड़ाई में अपने पति (खांडे राव) की मृत्यु के बाद 1754 में मालवा पर अधिकार** कर लिया था।
- **उनके शासन की प्रमुख विशेषताएं/ उपलब्धियां**
    - उनके शासनकाल में **महेश्वर शहर एक साहित्यिक, औद्योगिक, संगीत कला और शिल्प-कला का केंद्र बन** गया था। उन्होंने महेश्वर शहर में एक **वस्त्र उद्योग** स्थापित करने में मदद की थी। इस कारण इसे अब प्रसिद्ध **महेश्वरी साड़ियों** के लिए जाना जाता है।
    - उन्होंने **काशी विश्वनाथ, बद्रीनाथ, द्वारका, ओंकारेश्वरी सहित कई अन्य मंदिरों के जीर्णोद्धार/पुनर्निर्माण** का कार्य संपन्न कराया था।

अहिल्याबाई होल्कर

5.12.3. श्री नारायण गुरु (1856-1928) {Sree Narayana Guru (1856-1928)}

- प्रधान मंत्री ने श्री नारायण गुरु को उनकी जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित की।
- वह केरल के एक **हिंदू संत और समाज सुधारक** थे।
- उन्होंने **'एक जाति, एक धर्म, एक ईश्वर'** के विचार का प्रचार किया था।
- **प्रमुख योगदान**
    - उन्होंने **पद्मनाभन पल्पू के साथ मिलकर एझवा समुदाय के उत्थान और शिक्षा के लिए 'श्री नारायण धर्म परिपालन योगम' (SNDP) की स्थापना** की थी।
    - उन्होंने **"अरुविपुरम आंदोलन"** शुरू किया था। यह सभी जातियों के मंदिर में प्रवेश के समान अधिकार के लिए चलाए गए आरंभिक आंदोलनों में से एक था।
    - उन्होंने **त्रावणकोर में मंदिर प्रवेश के लिए वायकोम सत्याग्रह (1924-25) को समर्थन** दिया था।
    - उनकी प्रमुख रचनाओं में **दैवदसकम, अनुकम्पादसकम** आदि शामिल हैं।

नारायण गुरु

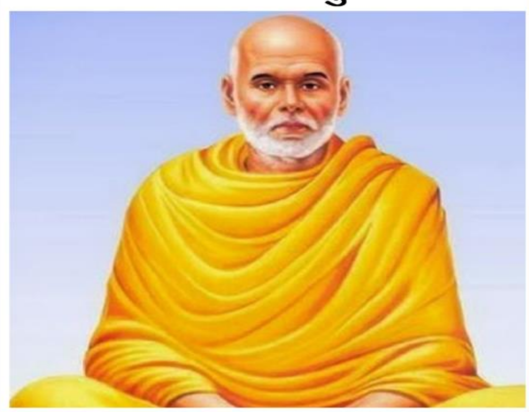

5.12.4. सच्चिदानंद सिन्हा (1871-1950) {Sachchidananda Sinha (1871-1950)}

- बिहार के मुख्यमंत्री ने 10 नवंबर को **पटना** में सच्चिदानंद सिन्हा की जयंती पर उनकी प्रतिमा का अनावरण किया।
- **सच्चिदानंद सिन्हा के बारे में:**
    - इनका जन्म तत्कालीन **बंगाल प्रेसीडेंसी के आरा** में हुआ था।
    - **बिहार और उड़ीसा प्रांत के गठन में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका** थी।
    - वे **लंदन में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पर बनी ब्रिटिश समिति** के सक्रिय सदस्य थे।
    - वे 1910-1930 तक **इम्पीरियल लेजिस्लेटिव काउंसिल** के सदस्य रहे थे।
    - वे एक **संविधानवादी राष्ट्रवादी** थे। उनका मानना था कि भारतीयों को स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए **संवैधानिक तरीके अपनाने** चाहिए।
    - वे **संविधान सभा के अंतरिम अध्यक्ष** भी रहे थे। बाद में **राजेंद्र प्रसाद को इसका औपचारिक अध्यक्ष नियुक्त** किया गया था।
    - **मुख्य पुस्तकें:** "इकबाल: द पोएट एंड हिज मैसेज", "कश्मीर-द प्लेग्राउंड ऑफ एशिया" इत्यादि।

सच्चिदानन्द सिन्हा

© Vision IAS

5.12.5. स्वामी सहजानंद सरस्वती (Swami Sahajanand Saraswati)

स्वामी सहजानंद सरस्वती

- इनका जन्म **उत्तर प्रदेश के गाजीपुर** में हुआ था।
- अप्रैल 1936 में **लखनऊ** में कांग्रेस अधिवेशन में **अखिल भारतीय किसान सभा** का गठन किया गया था। उन्हें इसके **प्रथम अध्यक्ष** के रूप में चुना गया था।
- उन्होंने **बिहार** में जमींदारों द्वारा बकाश्त भूमि से काश्तकारों को बेदखल करने के खिलाफ **बकाश्त आंदोलन** शुरू किया था।
    - इसके परिणामस्वरूप, किसानों के अधिकारों की रक्षा के लिए **बिहार टेनेंसी एक्ट और बकाश्त लैंड टैक्स** लागू हुआ था।
- उन्होंने, **बिहटा में डालमिया चीनी मिल में सफल संघर्ष का नेतृत्व** किया था। किसान-मजदूर एकता इस संघर्ष की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता थी।

5.12.6. मालती मेम (उर्फ मंगरी ओरंग) {Malati Mem (aka Mangri Orang)}

मालती मेम (उर्फ मंगरी ओरंग)

- उन्हें भारत के स्वतंत्रता संग्राम में **असम की पहली महिला शहीदों में से एक** के रूप में जाना जाता है।
- वे **असम के चाय बागानों में अफीम विरोधी अभियान की अग्रणी सदस्यों में से एक** थीं।
- वर्ष 1921 में, औपनिवेशिक काल के दौरान **विदेशी शराब और अफीम के खिलाफ लड़ाई का नेतृत्व करने के कारण उनकी हत्या** कर दी गई थी।

5.12.7. रुक्मिणी लक्ष्मीपति (1892-1951) {Rukmini Lakshmipathi (1892- 1951)}

रुक्मिणी लक्ष्मीपति

- वे **आंध्र प्रदेश** के पश्चिम गोदावरी जिले की **स्वतंत्रता सेनानी व समाज सुधारक** थीं।
- वे **महात्मा गांधी, सी राजगोपालाचारी और सरोजिनी नायडू** से प्रभावित थीं।
- **योगदान:**
    - उन्होंने **मद्रास प्रेसीडेंसी के वेदारण्यम में सविनय अवज्ञा यानी नमक सत्याग्रह (1930)** में हिस्सा लिया था।
        - वे **पहली महिला थीं, जिन्हें नमक सत्याग्रह के दौरान कैद** किया गया था।
    - उन्हें **मद्रास विधान परिषद** के लिए चुना गया था। बाद में **विधान सभा की सदस्य बनने वाली पहली महिला बनी थीं।**

5.12.8. अशफाक उल्ला खान (1900-1927) {Ashfaqulla Khan (1900-1927)}

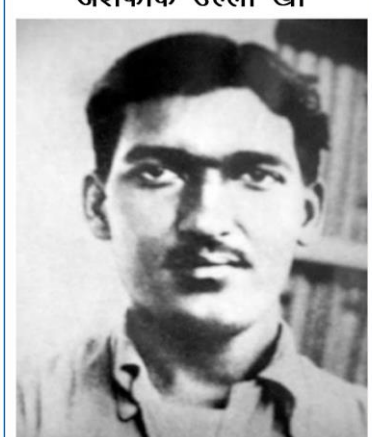

अशफाक उल्ला खां

- **वे एक स्वतंत्रता सेनानी थे। उन्होंने सक्रिय रूप से ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ संघर्ष किया था।**
- **योगदान**
    - उन्होंने **1924 में हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (HRA)** की स्थापना में मदद की थी। इस संगठन का उद्देश्य **सशस्त्र क्रांति के जरिए स्वतंत्रता प्राप्त** करना था। बाद में, HRA का नाम बदलकर **हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (HSRA)** कर दिया गया था।
        - **राम प्रसाद बिस्मिल, सचिंद्र नाथ बख्शी, सचिन्द्रनाथ सान्याल** आदि भी HRA के मुख्य सदस्य थे।
    - वे एक **कवि** भी थे। वे **'वारसी' और 'हसरत'** उपनाम से शायरी लिखते थे।
    - उन्हें **काकोरी ट्रेन डकैती** में शामिल होने के आरोप में **फांसी की सजा** दी गई थी।

5.12.9. श्री रामालिंगा स्वामीगल (Shri Ramalinga Swamigal)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, प्रधान मंत्री ने **श्री रामालिंगा स्वामीगल की 200वीं जयंती के अवसर** पर एक कार्यक्रम को संबोधित किया।

श्री रामालिंगा स्वामीगल के बारे में:

- उन्हें **वेल्लालर या रामालिंगा अडिगल** के नाम से भी जाना जाता है। ये उन **तमिल संतों** से संबंधित हैं, जिन्हें **'ज्ञान सिद्धार'** कहा जाता है। यहां ज्ञान से तात्पर्य उच्चतर बुद्धिमत्ता से है।
- वेल्लालर ने **शुद्ध सन्मार्ग संगम** की अवधारणा के माध्यम से **जाति प्रथा के उन्मूलन** का प्रयास किया था।
- **शुद्ध सन्मार्ग संगम** के अनुसार मानव जीवन के सर्वोप्रमुख पहलू **प्रेम, दान करना व पवित्र कर्मों का संपादन** करना चाहिए। इससे **शुद्ध ज्ञान** की प्राप्ति होगी।

श्री रामालिंगा स्वामीगल

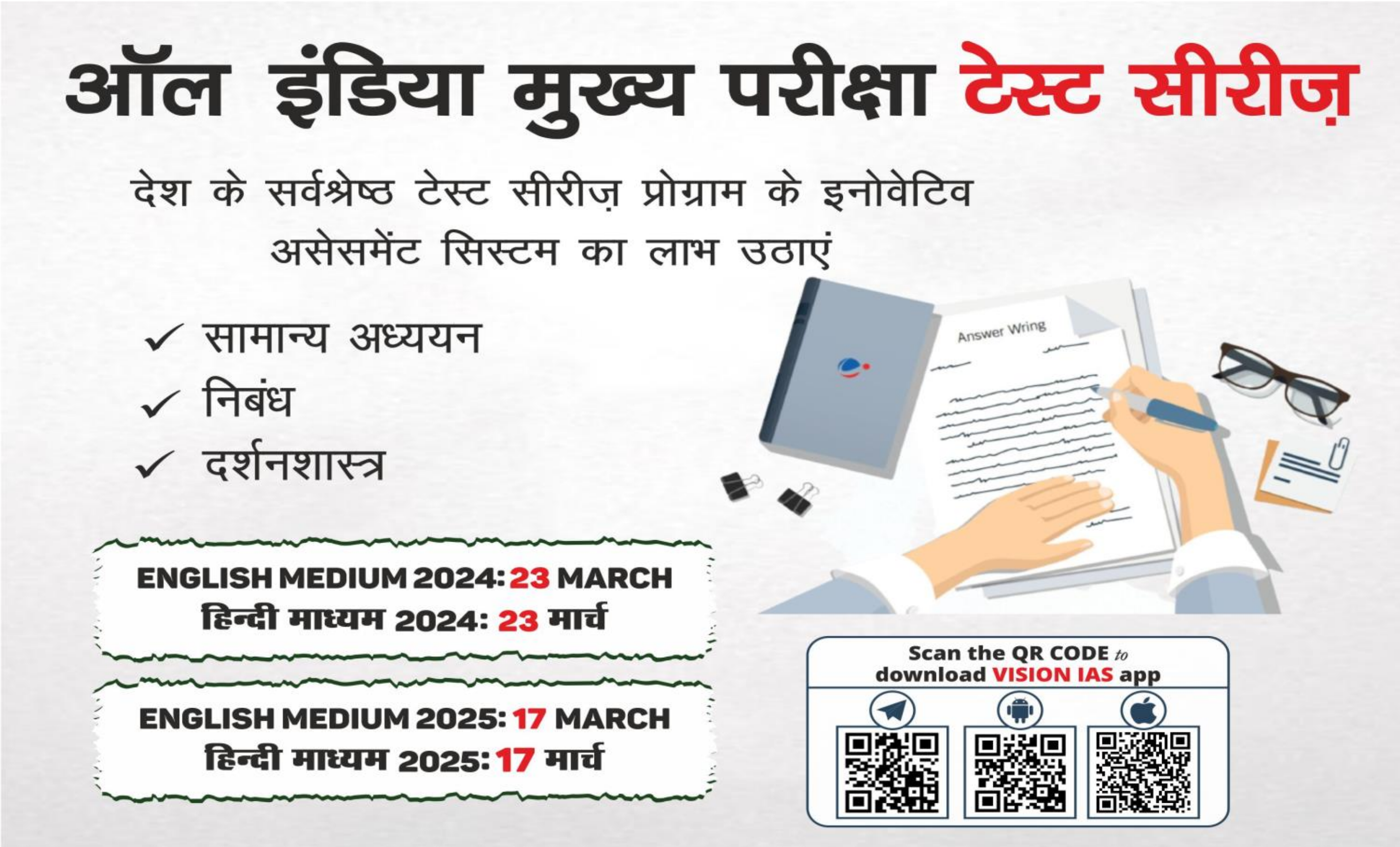

VISION IAS
INSPIRING INNOVATION

www.visionias.in
8468022022, 9019066066

VISION IAS के PT 365 के साथ UPSC प्रीलिम्स में करेंट अफेयर्स की चुनौतियों में महारत हासिल कीजिए

करेंट अफेयर्स की तैयारी कैसे करें

करेंट अफेयर्स सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी की आधारशिला है, जो प्रीलिम्स, मेन्स और इंटरव्यू तीनों चरणों में जरूरी होता है। करेंट अफेयर्स से अपडेट रहना अभ्यर्थी को सिविल सेवा परीक्षा के नए ट्रेंड को समझने में सक्षम बनाता है। सही रिसोर्सेज और एक रणनीतिक दृष्टिकोण के जरिए अभ्यर्थी इस विशाल सेक्शन को अपना सकारात्मक पक्ष बना सकते हैं।

PT 365 क्या है?

PT 365 (हिंदी) डाक्यूमेंट के अंतर्गत, व्यापक तौर पर विगत 1 वर्ष (365 दिन) के महत्वपूर्ण समसामयिक घटनाओं को ठोस तरीके से कवर किया जाता है ताकि प्रीलिम्स की तैयारी में अभ्यर्थियों को सहायता मिल सके। इसे करेंट अफेयर्स के रिविजन हेतु एक डॉक्यूमेंट के रूप में तैयार किया गया है।

PT365 की विशेषताएं

व्यापक कवरेज

- पूरे साल के करेंट अफेयर्स की कवरेज।
- UPSC हेतु प्रासंगिक विषय, जैसे– राजव्यवस्था, अर्थव्यवस्था, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, पर्यावरण, अंतर्राष्ट्रीय संबंध, आदि।
- आगामी प्रारंभिक परीक्षा में आने वाले संभावित विषयों पर जोर।

स्पष्ट एवं संक्षिप्त जानकारी

- प्रमुख मुद्दों के लिए स्पष्ट एवं संक्षिप्त प्रस्तुति
- विश्वसनीय स्रोतों से जानकारी
- तेजी से रिविजन के लिए परिशिष्ट

QR आधारित स्मार्ट क्विज

- अभ्यर्थियों की समझ और पढ़े गए आर्टिकल्स के परीक्षण के लिए QR आधारित स्मार्ट क्विज़ को शामिल किया गया है।

इन्फोग्राफिक्स

- आर्टिकल्स एवं तथ्यों को समझने और याद रखने में सहायता मिलती है।
- आर्टिकल्स को समझाने के लिए अलग-अलग तकनीक, विधियों और प्रक्रियाओं का इस्तेमाल।
- लर्निंग को बेहतर बनाने के लिए मानचित्रों का रणनीतिक उपयोग किया गया है।

सरकारी योजनाएं और नीतियां

- प्रमुख सरकारी योजनाओं, नीतियों और पहलों की गहन कवरेज।

नया क्या है?

- पिछले वर्ष के प्रश्नों के पैटर्न के अनुरूप तैयार किया गया है।

PT 365 का महत्त्व

रिविजन में आसानी: कंटेंट को विषयों या टॉपिक्स के आधार पर वर्गीकृत किया गया है, जिससे अभ्यर्थी आसानी से टॉपिक खोज सकते हैं और रिविजन आसान हो जाता है।

वैल्यू एडिशन: इसमें ऐसे इन्फोग्राफिक्स, संबंधित घटनाक्रम या सुर्खियाँ शामिल हैं, जो महत्वपूर्ण जानकारी की व्यापक कवरेज सुनिश्चित करते हैं।

क्रिस्प मटेरियल: आर्टिकल्स में क्रिस्प पॉइंट्स का प्रयोग किया गया है। इससे अभ्यर्थियों को सीमित समय में आसानी से कई बार रिविजन करने में सुविधा मिलती है।

इंटीग्रेटेड एप्रोच: UPSC में पूछे गए प्रश्नों के पिछले ट्रेंड के अनुरूप ही करेंट अफेयर्स की सभी बुनियादी अवधारणाओं और सूचनाओं को स्पष्ट तरीके से शामिल किया गया है। इससे स्टेटिक पार्ट और महत्वपूर्ण करेंट अफेयर्स को एकीकृत करने में भी मदद मिलती है।

और अधिक जानकारी के लिए दिए गए QR कोड को स्कैन कीजिए

PT 365 एक भरोसेमंद रिसोर्स है जिसने पिछले कुछ वर्षों में लाखों अभ्यर्थियों को समग्र तरीके से करेंट अफेयर्स को कवर करने में मदद की है। इसकी प्रभावशाली विशेषताओं की वजह से UPSC सिविल सेवा परीक्षा में करेंट अफेयर्स को समझने और सफल होने में अभ्यर्थियों को मदद मिलती है।

अहमदाबाद | बैंगलोर | भोपाल | चंडीगढ़ | दिल्ली | गुवाहाटी | हैदराबाद | जयपुर | जोधपुर | लखनऊ | प्रयागराज | पुणे | रांची

6. पुरस्कार (Awards)

6.1. साहित्य का नोबेल पुरस्कार (Nobel Prize in Literature for 2023)

सुर्ख़ियों में क्यों?

वर्ष 2023 का साहित्य का नोबेल पुरस्कार **नॉर्वे के लेखक जॉन फॉसे** को दिया गया। उन्हें यह पुरस्कार उनके **अभिनव नाटकों और गद्य रचनाओं** के लिए दिया गया है। फॉसे के नाटकों और साहित्य ने उन लोगों को आवाज दी है, जो अपनी बात कहने में सक्षम नहीं थे।

भारतीय नोबेल पुरस्कार विजेता*

रवीन्द्रनाथ टैगोर
साहित्य का नोबेल पुरस्कार (1913)
यह पुरस्कार उन्हें अत्यंत संवेदनशील, नवीन और सुंदर लेखन के लिए दिया गया था। उन्होंने लेखन शैली के उत्कृष्ट कौशल के साथ अपनी काव्य रचनाएं की।

सी.वी. रमन
भौतिकी का नोबेल पुरस्कार (1930)
प्रकाश के प्रकीर्णन पर शोध कार्य और रमन प्रभाव की खोज हेतु।

हरगोबिंद खुराना
फिजियोलॉजी या चिकित्सा का नोबेल पुरस्कार (1968)
प्रोटीन संश्लेषण में आनुवंशिक कोड और उसके कार्य की व्याख्या के लिए।

मदर टेरेसा
शांति का नोबेल पुरस्कार (1979)
पीड़ित मानव समुदायों की सहायता के लिए प्रयासों हेतु।

सुब्रमण्यम चंद्रशेखर
भौतिकी का नोबेल पुरस्कार (1983)
तारों की संरचना और विकास हेतु महत्वपूर्ण भौतिक प्रक्रियाओं के अध्ययन के लिए।

अमर्त्य सेन
अर्थशास्त्र का नोबेल मेमोरियल पुरस्कार (1998)
कल्याणकारी अर्थशास्त्र में योगदान के लिए।

वेंकटरमण रामकृष्णन
रसायन विज्ञान का नोबेल पुरस्कार (2009)
राइबोसोम की संरचना और कार्य के अध्ययन के लिए।

कैलाश सत्यार्थी
शांति का नोबेल पुरस्कार (2014)
बच्चों एवं युवाओं के शोषण के खिलाफ और सभी बच्चों के शिक्षा के अधिकार हेतु संघर्ष के लिए।

अभिजीत बनर्जी
अर्थशास्त्र का नोबेल पुरस्कार (2019)
दुनिया भर में ग़रीबी दूर करने के लिए एक्सपेरिमेंटल अप्रोच अपनाने हेतु।

*नोबेल पुरस्कार विजेताओं में से **पांच भारतीय नागरिक** हैं, जबकि **चार भारतीय मूल** के हैं।

© Vision IAS

साहित्य के नोबेल पुरस्कार के बारे में

- अकादमी ने फॉसे को यह सम्मान **नॉर्वे की नाइनोर्स्क** भाषा में लिखी कृतियों के लिए दिया है। इन कृतियों में कई नाटक, उपन्यास, कविता संग्रह, निबंध, बच्चों की किताबें और अनुवाद आदि शामिल हैं।
  - नाइनोर्स्क नॉर्वे की **दो आधिकारिक भाषाओं** में से एक है।
- **साहित्य में दिए जाने वाले नोबेल पुरस्कार** की राशि **11 मिलियन स्वीडिश क्रोनर (1 मिलियन डॉलर)** है। इसे व्यापक रूप से दुनिया का सबसे प्रतिष्ठित साहित्यिक पुरस्कार माना जाता है।
- 1901 से लेकर 2023 तक कुल **116 बार** साहित्य में नोबेल पुरस्कार प्रदान किया गया है। अब तक **120 लोगों** को इस पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है।
- हाल के वर्षों में, यह पुरस्कार **फ्रांसीसी लेखिका एनी एर्नाक्स (2022) और तंजानिया के उपन्यासकार अब्दुल रजाक गुरनाह (2021)** ने जीता था।

6.2. साहित्य अकादमी पुरस्कार (Sahitya Akademi Award)

सुर्ख़ियों में क्यों?

केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय साहित्य अकादमी पुरस्कार के लिए **नामांकन प्रक्रिया में बदलाव करने** पर विचार कर रहा है।

साहित्य अकादमी पुरस्कार के बारे में

- साहित्य अकादमी पुरस्कार एक साहित्यिक सम्मान है। इसे **प्रतिवर्ष किसी भी प्रमुख भारतीय भाषा में प्रकाशित उत्कृष्ट साहित्यिक कृति के लेखक को प्रदान** किया जाता है।
  - संविधान में उल्लिखित **22 भाषाओं** के अलावा **अंग्रेजी और राजस्थानी भाषा** को भी पुरस्कार के अंतर्गत मान्यता दी गई है।
  - इस पुरस्कार में **ताम्रपत्र युक्त मंजूषा, एक शॉल और 1,00,000 रुपये की राशि** प्रदान की जाती है।
- साहित्य अकादमी **एक स्वायत्त संगठन** के रूप में कार्य करती है। यह **सोसायटी पंजीकरण अधिनियम, 1860 के तहत एक सोसायटी** के रूप में पंजीकृत है।

6.3. संगीत नाटक अकादमी अमृत पुरस्कार (Sangeet Natak Akademi Amrit Awards)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, **84 कलाकारों को संगीत नाटक अकादमी अमृत पुरस्कार** से सम्मानित किया गया है।

- **पुरस्कार के बारे में**
  - **संविधान की 8वीं अनुसूची में शामिल 22 भाषाओं के अलावा अंग्रेजी और राजस्थानी को** अकादमी ने मान्यता दी है।
  - **उद्देश्य:**
    - यह सरकार द्वारा दिया जाने वाला **राष्ट्रीय सम्मान** है। यह **निष्पादन कला के कलाकारों के साथ-साथ शिक्षकों और विद्वानों** को भी प्रदान किया जाता है।
    - इसका उद्देश्य **75 वर्ष से अधिक आयु के उन भारतीय कलाकारों को सम्मानित** करना है, जिन्हें अब तक उनके करियर में **कोई राष्ट्रीय सम्मान नहीं** दिया गया है।
    - यह संगीत नाटक अकादमी द्वारा दिया जाने वाला वन टाइम अवार्ड है।
  - पुरस्कार के रूप में **एक लाख रुपये की राशि, एक 'ताम्रपत्र और अंगवस्त्रम'** प्रदान किए गए हैं।
  - पुरस्कार भारत के **उपराष्ट्रपति** द्वारा दिए गए थे।

संगीत नाटक अकादमी के बारे में

- **उत्पत्ति:** इसे **1953** में स्थापित किया गया था। इसकी स्थापना देश में **निष्पादन कला (Performing art)** के क्षेत्र में एक शीर्ष निकाय के रूप में की गई है।
- **मंत्रालय:** यह **संस्कृति मंत्रालय** के तहत एक स्वायत्त निकाय है।

© Vision IAS

- **उद्देश्य:** संगीत, नृत्य और नाट्य रूपों में व्यक्त भारत की **विविध संस्कृति की विशाल अमूर्त विरासत का संरक्षण एवं संवर्धन** करना।
- **प्रमुख पुरस्कार:**
    - संगीत नाटक अकादमी फेलोशिप (रत्न सदस्यता);
    - संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार (अकादमी पुरस्कार); तथा
    - उस्ताद बिस्मिल्लाह ख़ाँ युवा पुरस्कार।

6.4. अन्य महत्वपूर्ण पुरस्कार (Other Important Awards)

6.4.1. गोविंद स्वरूप लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड (Govind Swarup Lifetime Achievement Award)

- पहला एस्ट्रोनॉमिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया (ASI)-गोविंद स्वरूप लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड **प्रोफेसर जयंत विष्णु नार्लीकर** को पुणे में दिया गया है।
- इस पुरस्कार को 2022 में ASI की स्वर्ण जयंती के अवसर पर स्थापित किया गया था। इसका उद्देश्य **प्रख्यात भारतीय खगोलविदों की उपलब्धियों को सम्मानित** करना है।
- **प्रोफेसर गोविंद स्वरूप (1929-2020) भारतीय रेडियो एस्ट्रोनॉमी के संस्थापक थे।**
    - उन्होंने **ऊटी रेडियो टेलीस्कोप (ORT) और जायंट मीटर वेव रेडियो टेलीस्कोप (GMRT) का निर्माण** किया था।
    - वह **नेशनल सेंटर फॉर रेडियो एस्ट्रोफिजिक्स (NCRA), पुणे के संस्थापक निदेशक** थे।
    - वह **स्क्वायर किलोमीटर ऐरे (SKA)** के सबसे प्रमुख समर्थकों में से एक थे।

6.4.2. रेमन मैग्सेसे पुरस्कार (Ramon Magsaysay Award)

- **असम** के रहने वाले **ऑन्कोलॉजिस्ट रवि कन्नन** 2023 के रेमन मैग्सेसे पुरस्कार विजेताओं में से एक हैं।
- **वर्ष 1957** में स्थापित रेमन मैग्सेसे पुरस्कार को '**एशिया का नोबेल पुरस्कार**' माना जाता है।
- इसका नाम **फिलीपींस के सातवें राष्ट्रपति (1953-57) रेमन मैग्सेसे** के नाम पर रखा गया है। **रेमन मैग्सेसे अवार्ड फाउंडेशन (RMAF)** सामाजिक योगदान संबंधी गतिविधियों के लिए **हर साल एशिया के व्यक्तियों या संगठनों** को यह पुरस्कार प्रदान करता है।

6.4.3. इंदिरा गांधी शांति पुरस्कार, 2023 (Indira Gandhi Peace Prize, 2023)

- 2023 का शांति, निरस्त्रीकरण और विकास के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार संयुक्त रूप से **डैनियल बैरेनबोइम और अली अबु अव्वाद** को दिया गया है।
    - ये दोनों **इजराइल-फिलिस्तीन संघर्ष के अहिंसक समाधान के लिए इजरायल और अरब जगत के युवाओं एवं आम लोगों को एक साथ लाने** का प्रयास करते रहे हैं।
- **इंदिरा गांधी पुरस्कार के बारे में:**
    - यह **1986 से हर साल इंदिरा गांधी मेमोरियल ट्रस्ट द्वारा** दिया जाता रहा है।
    - पुरस्कार के तौर पर एक **प्रशस्ति पत्र और 25 लाख रुपए** दिए जाते हैं।

6.4.4. अन्नपूर्णा प्रमाण-पत्र कार्यक्रम (Annapurna Certificate Programme)

- संपूर्ण विश्व से **छह भारतीय रेस्तरां को अन्नपूर्णा प्रमाण-पत्र** से सम्मानित किया गया है।
- अन्नपूर्णा प्रमाण-पत्र कार्यक्रम को **विदेशों में उन रेस्तरां को सम्मानित करने के लिए शुरू किया गया है, जो भारतीय पाक और व्यंजन परंपराओं को बढ़ावा** देते हैं।
    - इस पहल की शुरुआत **भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (ICCR)** ने की है।
    - यह पुरस्कार **प्रत्येक वर्ष** दिया जाता है।

- **ICCR की बारे में**
    - इसकी **स्थापना 1950** में **मौलाना अबुल कलाम आज़ाद** ने की थी।
    - यह **विदेशों के साथ सांस्कृतिक संबंधों से जुड़े नीति-निर्माण** में भाग लेती है।

7. सुर्ख़ियों में रही जनजातियां (Tribes in News)

7.1. कुई भाषा (Kui Language)

सुर्ख़ियों में क्यों?

ओडिशा मंत्रिमंडल ने संविधान की **8वीं अनुसूची में कुई भाषा को शामिल करने** के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है।

कुई भाषा के बारे में

- **कुई भाषा द्रविड़ भाषा परिवार से संबंधित** है। यह मुख्य रूप से **कोंध/कंध नामक ओडिशा की सबसे बड़ी जनजाति के लोगों द्वारा बोली जाती है।**
  - इस भाषा में **उड़िया लिपि का उपयोग** होता है। खोंडी और गुम्साई इसकी उपभाषाएं हैं।
- **भारतीय संविधान की अनुसूची 8:**
  - **इसमें देश की आधिकारिक भाषाओं को सूचीबद्ध किया गया है। वर्तमान में, इसमें 22 भाषाएं शामिल हैं।**
  - **मूल संविधान में 14 भाषाएं सूचीबद्ध थीं** और बाकी भाषाओं को बाद में जोड़ा गया है।
  - सिंधी भाषा को 1967 में और कोंकणी, मणिपुरी एवं नेपाली को 1992 में इस सूची में शामिल किया गया था। साथ ही, 2003 के 92वें संशोधन अधिनियम के माध्यम से इसमें संथाली, डोगरी, मैथिली तथा बोडो भाषाओं को जोड़ा गया था।
- **नई भाषा का समावेश:**
  - **वर्तमान में किसी भाषा को आठवीं अनुसूची में शामिल करने के लिए विचार करने हेतु कोई निश्चित मानदंड नहीं है।**
  - हालांकि, एक निश्चित मानदंड विकसित करने के लिए सरकार ने **पाहवा (1996) और सीताकांत महापात्र (2003)** समितियों का गठन किया गया था। लेकिन ये समितियां संबंधित मानदंड स्थापित करने में सफल नहीं हो सकी।
  - **किसी भाषा को संविधान की 8वीं अनुसूची में शामिल होने से प्राप्त होने वाले लाभ**
    - उक्त भाषा के विकास के लिए सरकार से सहयोग प्राप्त होता है।
    - साहित्य अकादमी से मान्यता मिलती है।
    - राज्य विधान-मंडल और संसद में बहस के दौरान इसका उपयोग किया जा सकता है।
    - RBI द्वारा भारतीय नोटों पर अंकित भाषाओं में इसे भी शामिल कर लिया जाता है।

7.1.1. सुर्ख़ियों में रही अन्य जनजातियां और संबंधित घटनाएं (Other Tribes and Related Events in New)

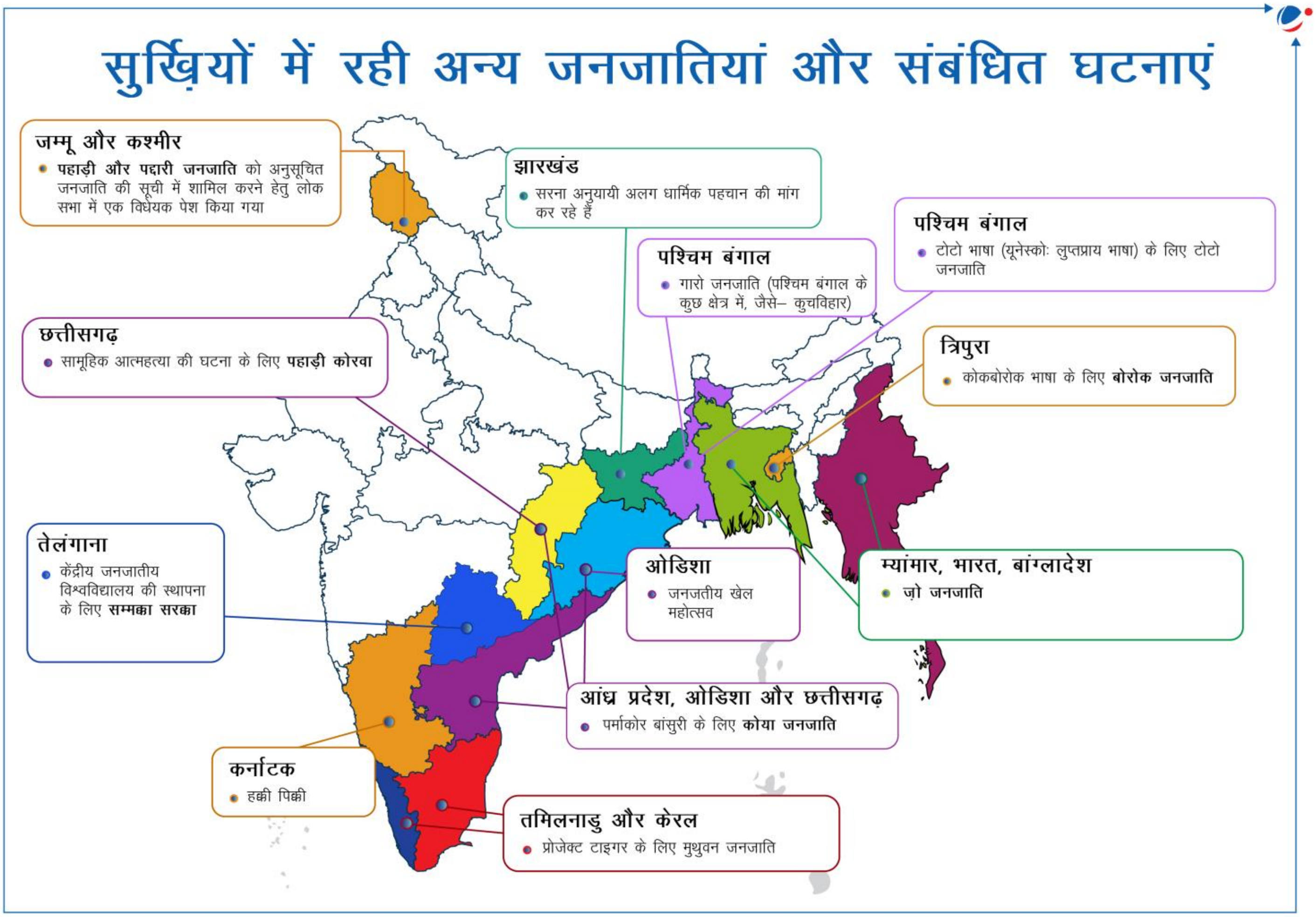

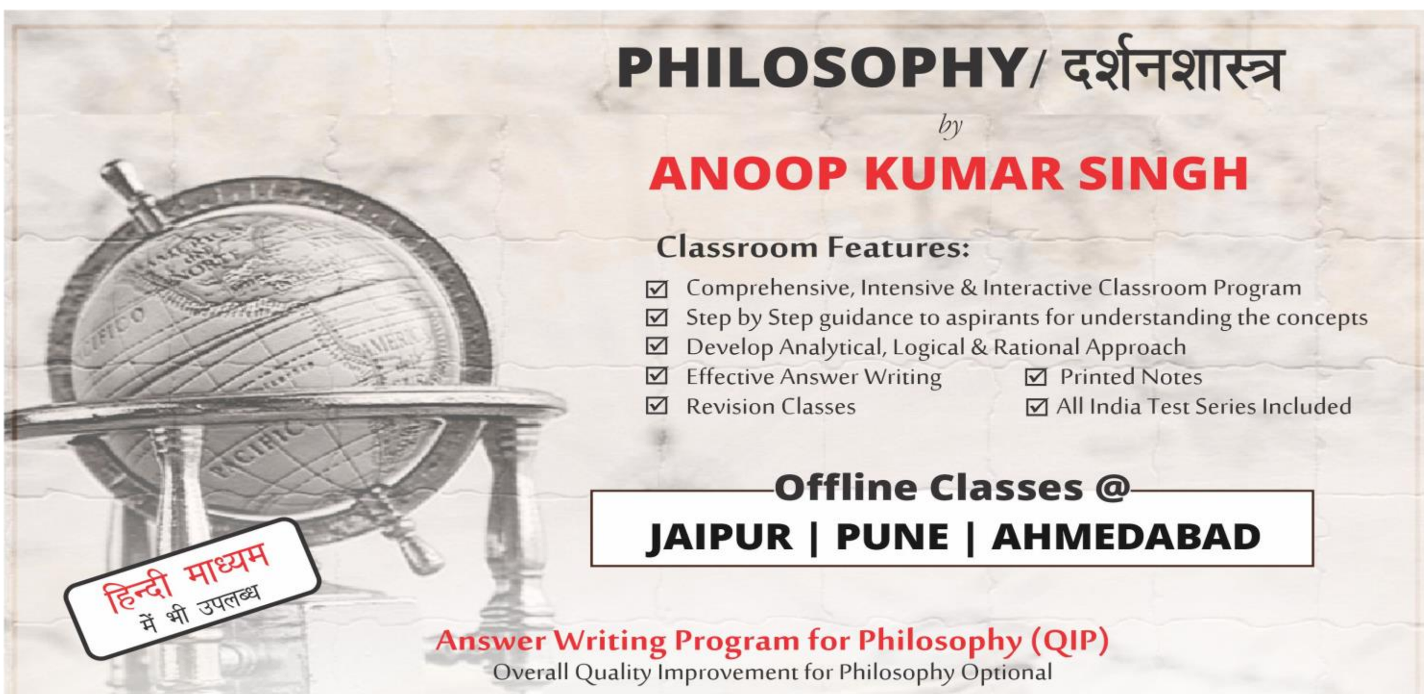

8. विविध (Miscellaneous)

8.1. प्राचीन भारत में सैन्य प्रणाली (Military Systems in Ancient India)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, रक्षा मंत्री ने **"भारतीय सैन्य विरासत महोत्सव" (IMHF)**[10] के उद्घाटन के अवसर पर **प्रोजेक्ट 'उद्भव'** की शुरुआत की है।

प्रोजेक्ट उद्भव का महत्त्व

- यह **सैन्य ज्ञान से जुड़े प्राचीन ग्रंथों और लेखन को मान्यता प्रदान करता है,** उदाहरण के लिए– महाभारत, नीतिसार, अर्थशास्त्र, तिरुक्कुरल आदि।
- **सैन्य शिक्षाशास्त्र को बढ़ावा: यह युद्ध से संबंधित प्राचीन भारतीय ज्ञान की बेहतर समझ** को आगे बढ़ाता है। साथ ही, यह **समकालीन सैन्य पद्धतियों में इसके उपयोग को सुविधाजनक बनाने में** भी मदद करता है।
- **ज्ञान में बढ़ोतरी:** रणनीतिक योजना, शासन कला और युद्ध कौशल से संबंधित **प्राचीन विचारों एवं सिद्धांतों पर शोध** हेतु सुविधा प्रदान करता है।

प्रोजेक्ट उद्भव के बारे में

- इस परियोजना की शुरुआत **भारतीय थल सेना और एक थिंक टैंक यूनाइटेड सर्विस इंस्टीट्यूशन ऑफ इंडिया (USI)** के सहयोग से की गई है।
- **इस परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य हैं:**
  - **शासन कला और रणनीतिक विचारों से समृद्ध भारतीय विरासत** की पुनः खोज करना। यहां 'उद्भव' का आशय 'उत्पत्ति' से है।
  - सुरक्षा संबंधी मौजूदा चुनौतियों का समाधान करने के लिए **समकालीन सैन्य पद्धतियों के साथ प्राचीन ज्ञान को समन्वित** करना।
  - प्राचीन सैन्य विद्या का इस्तेमाल करके **आधुनिक सैन्य चुनौतियों के लिए एक समग्र दृष्टिकोण विकसित** करना।

प्राचीन भारत में सैन्य प्रणाली

प्राचीन भारत का सैन्य ज्ञान **बौद्धिक ग्रंथों, शास्त्रों, पांडुलिपियों, विचारकों, प्रमुख सैन्य अभियानों तथा शासकों द्वारा लिखित पुस्तकों के अध्ययन** पर आधारित है।

- **कौटिल्य का यथार्थवाद:** कौटिल्य ने लगभग **300 ईसा पूर्व में मौर्य शासनकाल** के दौरान अर्थशास्त्र की रचना की थी। कौटिल्य ने इस पुस्तक में सुझाव दिया है कि रणनीतियां बनाते समय पहले जमीनी वास्तविकताओं को समझना चाहिए और उनके अनुसार ही रणनीति बनाए जाने पर बल दिया।
  - **मंडल सिद्धांत:** यह **शत्रुओं, मित्रों और मित्र देशों के ज्ञान** से संबंधित है।
  - **गुप्त सूचनाएं एकत्र करना:** कौटिल्य ने गुप्तचरों (गूढ़पुरुष) का इस्तेमाल करने का समर्थन किया है।
  - **रसद और आपूर्ति श्रृंखला।**
- **कामंदक का नीतिसार:** यह **गुप्त काल** से संबंधित एक **संस्कृत** ग्रंथ है। यह ग्रंथ अर्थशास्त्र की परंपरा का पालन करता है।
  - भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान **उपेक्षा** (कूटनीतिक उपेक्षा, कूटनीतिक उदासीनता) **की रणनीति, माया (छल) की रणनीति** का फिर से इस्तेमाल करके इसे पुनर्जीवित किया गया।

---

[10] Indian Military Heritage Festival

- नीतिसार में इस बात का उल्लेख किया गया है कि **महिलाओं की सेना भी युद्ध में भाग ले सकती है।**

- **तिरुवल्लुवर की तिरुक्कुरल (31 ईसा पूर्व):** इस ग्रंथ का संबंध युद्ध के दौरान किए जाने वाले आदर्श नैतिक आचरण से है।
- **अग्नि पुराण:** यह **युद्ध के मैदान में प्रतिग्रह** (आरक्षित) **दर्शन** का उल्लेख करने वाला पहला पुराण था। प्रतिग्रह आधुनिक सैन्य संरचना का एक अभिन्न हिस्सा है।

8.2. संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन (United Nations World Tourism Organisation)

सुर्ख़ियों में क्यों?

संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन (UNWTO) ने **कच्छ (गुजरात) के धोर्डो गांव** को सर्वश्रेष्ठ पर्यटन गांव में से एक के रूप में सम्मानित किया है।

अन्य संबंधित तथ्य

- धोर्डो गांव कच्छ के रण में अवस्थित है। इस गांव में **वार्षिक रूप से प्रसिद्ध रण उत्सव (व्हाइट डेजर्ट फेस्टिवल) का आयोजन** किया जाता है।
- UNWTO द्वारा उन्नयन कार्यक्रम में **मडला गांव (मध्य प्रदेश) का चयन** किया गया।
    - **कर्णावती (केन)** नदी इस गांव से होकर बहती है।

संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन (UNWTO)

- **उत्पत्ति:** इसकी **स्थापना 1975** में हुई थी। यह **2003 में संयुक्त राष्ट्र की एक विशेष एजेंसी** बन गया था।
- **मुख्यालय:** मैड्रिड, स्पेन
- **UNWTO के बारे में:** यह पर्यटन नीति से संबंधित मुद्दों के समाधान के लिए एक वैश्विक मंच के रूप में कार्य करता है। साथ ही, यह पर्यटन संबंधी तकनीकी ज्ञान के स्रोत के रूप में भी कार्य करता है।
- **उद्देश्य:** यह **आर्थिक संवृद्धि, समावेशी विकास और पर्यावरणीय संधारणीयता** के चालक के रूप में **पर्यटन को बढ़ावा** देता है।
- **सदस्य:** इसके भारत सहित **160** सदस्य देश हैं।
- **सर्वश्रेष्ठ पर्यटन गांव पहल:** इसकी शुरुआत **2021** में की गई थी। इसके तहत ग्रामीण पर्यटन का सर्वोत्तम उदाहरण प्रस्तुत करने वाले गांव को सम्मानित किया जाता है।

8.3. गिरमिटिया मजदूरी (Indentured Labourers)

सुर्ख़ियों में क्यों?

त्रिनिदाद और टोबैगो द्वीप समूह में भारतीय प्रवासियों द्वारा अब भी **राम-लीला के प्रदर्शन की परंपरा** निभाई जाती है। गौरतलब है कि इन प्रवासियों के **पूर्वजों को भारत से गिरमिटिया मजदूरों (Indentured labour) के रूप में इन द्वीपों पर लाया** गया था।

- **गिरमिटिया मजदूर कौन थे?**
    - **1834 में ब्रिटिश साम्राज्य में दास व्यापार का उन्मूलन** कर दिया गया था। इसके कारण अंग्रेजों ने अलग-अलग उपनिवेशों में अपने **बागानों में काम करने के लिए इन मजदूरों को भर्ती** किया था।
    - अक्सर उन्हें **गिरमिटिया** कहा जाता था।
- **गिरमिटिया मजदूरी का उन्मूलन**
    - 1916 में, **मदन मोहन मालवीय ने गिरमिटिया प्रणाली को समाप्त करने के लिए इम्पीरियल लेजिस्लेटिव कौंसिल में एक प्रस्ताव** पेश किया था।
    - **1917 में ब्रिटिश सरकार ने इस प्रणाली को आधिकारिक तौर पर समाप्त** कर दिया था।
    - 1914 में दक्षिण अफ्रीका में **स्मट्स-गांधी समझौता** हुआ था। इस समझौते के जरिये महात्मा गांधी ने **गिरमिटिया मजदूरों के आवागमन पर लगाए गए पोल टैक्स से छूट दिलाकर,** गिरमिटिया मजदूरों के साथ किए जा रहे भेदभाव को समाप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

8.4. सुर्ख़ियों में रहे त्यौहार (Festivals in News)

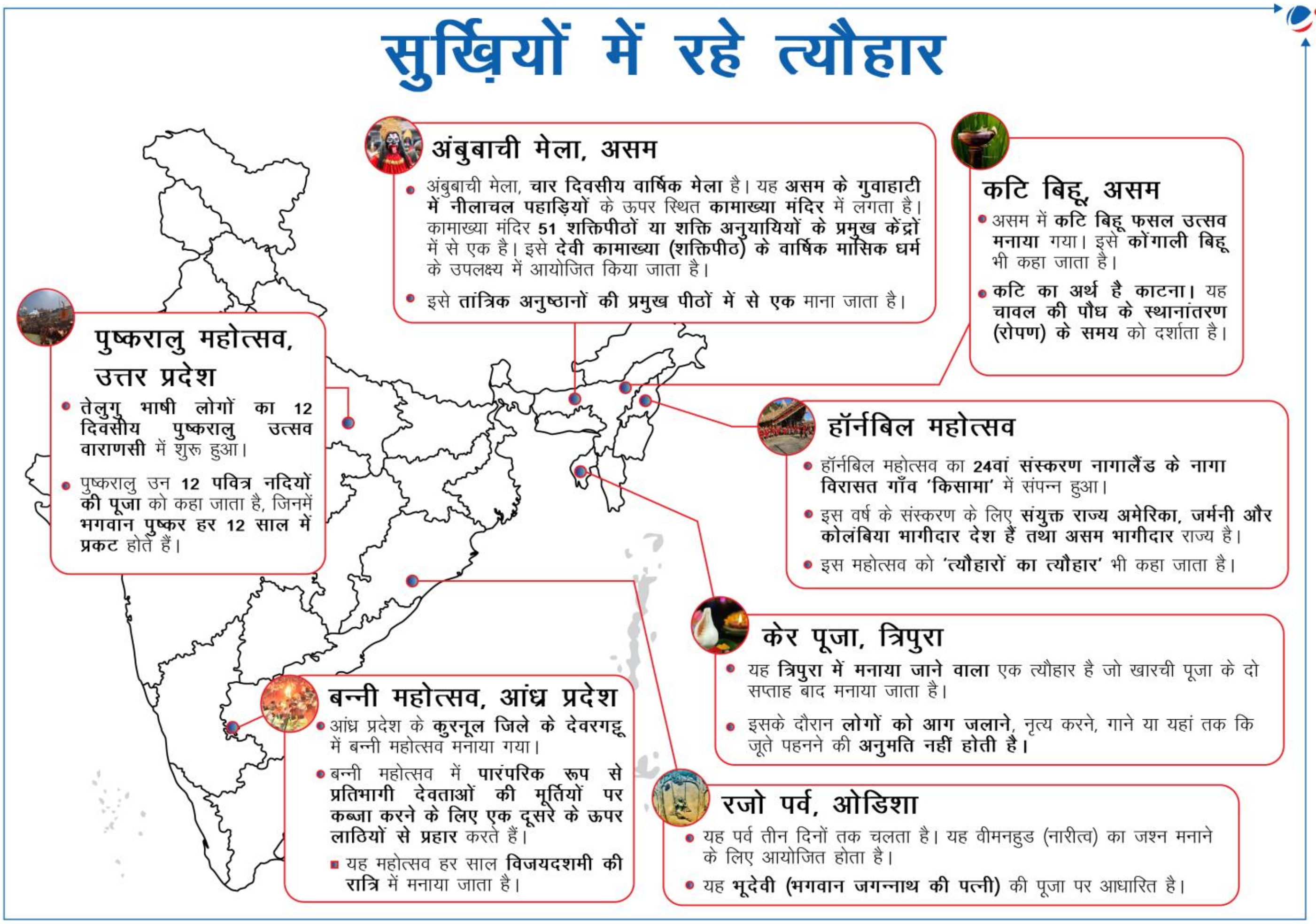

8.5. सुर्ख़ियों में रहे खेल (Sports Related News)

8.5.1. भारत के राष्ट्रीय खेल (National Games of India)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, **गोवा में राष्ट्रीय खेलों के 37वें संस्करण का समापन** हुआ।

अन्य संबंधित तथ्य

- भारत के राष्ट्रीय खेलों में भी **ओलंपिक खेलों की तरह अनेक खेल प्रतिस्पर्धाओं का आयोजन** किया जाता है। इनमें भारत के अलग-अलग राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के एथलीट पदक जीतने के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं।
    - **भारतीय सशस्त्र बलों** की स्पोर्ट्स टीम **सर्विसेज स्पोर्ट्स कंट्रोल बोर्ड (SSCB)** भी राष्ट्रीय खेलों में भाग लेती है।
- **भारतीय ओलंपिक संघ** राष्ट्रीय खेलों के लिए अवधि का निर्धारण करता है और नियम-कानून बनाता है।
- **राष्ट्रीय खेलों के बारे में:**
    - राष्ट्रीय खेलों के **पहले संस्करण** का आयोजन **1924** में अविभाजित पंजाब के **लाहौर** में किया गया था।
    - आजादी के बाद, राष्ट्रीय खेलों के **पहले संस्करण की मेजबानी लखनऊ** ने की थी।
    - **ओलंपिक की तर्ज पर** पहली बार राष्ट्रीय खेलों का आयोजन **1985 में नई दिल्ली** में किया गया था।

- **राष्ट्रीय खेलों के 37वें संस्करण के बारे में:**
    - राष्ट्रीय खेलों की सभी प्रतिस्पर्धाओं में समग्र रूप से सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए **राजा भालेंद्र सिंह ट्रॉफी महाराष्ट्र** को प्रदान की गई।
        - **1982 में 9वें एशियाई खेलों** की मेजबानी **भारत** को दिलाने और **दिल्ली** में इन खेलों के सफल आयोजन का श्रेय **राजा भालेंद्र सिंह** को दिया जाता है।
    - सर्वश्रेष्ठ महिला एथलीट की ट्रॉफी **प्रणति नायक और संयुक्ता काले** ने जीती तथा सर्वश्रेष्ठ पुरुष एथलीट की ट्रॉफी **श्रीहरि नटराज** ने प्राप्त की।
    - राष्ट्रीय खेलों की **मशाल उत्तराखंड** को सौंपी गई, क्योंकि उत्तराखंड राज्य ही **38वें राष्ट्रीय खेलों** के आयोजन की मेजबानी करेगा।
        - राष्ट्रीय खेलों के **39वें संस्करण का आयोजन मेघालय** में किया जाएगा।
- **भारतीय ओलंपिक संघ के बारे में**
    - **स्थापना:** IOA की स्थापना **1927** में हुई थी। इसके संस्थापक अध्यक्ष **सर दोराबजी टाटा** थे।
    - **IOA के बारे में:** IOA भारत में **ओलंपिक खेलों और राष्ट्रमंडल खेलों** के लिए शासी निकाय (Governing body) है।
    - **पंजीकरण:** इसका पंजीकरण एक **गैर-लाभकारी संगठन** के रूप में **1860 के सोसायटीज रजिस्ट्रेशन एक्ट** के तहत किया गया है।
    - **संबद्ध है (Affiliated):** अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति (IOC), राष्ट्रमंडल खेल संघ (CGF), एशिया ओलंपिक परिषद (OCA) और ओलंपिक समितियों का राष्ट्रीय संघ (ANOC)

8.5.2. खेलो इंडिया पैरा गेम्स 2023 (Khelo India Para Games 2023)

सुर्ख़ियों में क्यों?

प्रथम खेलो इंडिया पैरा गेम्स (KIPG) 2023 का आयोजन दिसंबर 2023 में दिल्ली में किया गया।

अन्य संबंधित तथ्य

- इसके तहत **7 खेल प्रतिस्पर्धाओं** का आयोजन किया गया। इन प्रतिस्पर्धाओं में शामिल थीं- पैरा तीरंदाजी, पैरा एथलेटिक्स, पैरा बैडमिंटन, पैरा टेबल टेनिस, पैरा पावरलिफ्टिंग, CP फुटबॉल और पैरा शूटिंग।
- KIPG 2023 पदक तालिका में शीर्ष स्थान **हरियाणा ने प्राप्त किया**। इसके बाद उत्तर प्रदेश का स्थान था।
- KIPG **भारत सरकार की "खेलो इंडिया पहल"** के तहत नई खेल प्रतिस्पर्धा है। इस पहल में **खेलो इंडिया यूथ गेम्स**, **खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स** और **खेलो इंडिया विंटर गेम्स** भी शामिल हैं।
- **खेलो इंडिया गेम्स के बारे में:**
    - इनका आयोजन **खेलो इंडिया** नामक एक **केंद्रीय क्षेत्रक योजना** के तहत किया जाता है।
    - 2018 से अब तक कुल 11 खेलो इंडिया गेम्स सफलतापूर्वक आयोजित किए जा चुके हैं।
    - प्रथम संस्करण नई दिल्ली में आयोजित किया गया था।

8.5.3. डायमंड लीग (Diamond League)

- लंबी कूद के भारतीय एथलीट **मुरली श्रीशंकर ने पेरिस डायमंड लीग में तीसरा स्थान** हासिल किया है।
- डायमंड लीग **शीर्ष स्तरीय ट्रैक और फील्ड प्रतिस्पर्धाओं की एक वार्षिक श्रृंखला** है। इसका आयोजन अंतर्राष्ट्रीय एथलेटिक्स शासी निकाय **'वर्ल्ड एथलेटिक्स"** करता है।
    - इसे **2010 में पूर्ववर्ती IAAF गोल्डन लीग और IAAF वर्ल्ड एथलेटिक्स फाइनल इवेंट्स की जगह शुरू** किया गया था।
    - **डायमंड लीग के एक विशेष सत्र में आम तौर पर प्रतिस्पर्धाओं की संख्या 14** होती है। ये **प्रतिस्पर्धाएं दुनिया भर के अलग-अलग शहरों** में आयोजित की जाती हैं।

8.5.4. ICC वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप (WTC) {ICC World Test Championship (WTC)}

- **ऑस्ट्रेलिया ने भारत को हराकर** WTC 2023 का खिताब जीत लिया है।
- **WTC में शीर्ष नौ टेस्ट टीमें शामिल होती हैं,** जिनमें से सभी ने तीन सीरीज घरेलू मैदानों और तीन सीरीज विदेशी मैदानों पर यानी कुल छह-छह सीरीज खेली होती हैं।
    - **WTC फाइनल शीर्ष दो टीमों के बीच** आयोजित होता है।
- WTC के पहले संस्करण में **प्रत्येक टेस्ट सीरीज के लिए समान अंक निर्धारित थे, लेकिन इस बार प्रत्येक मैच के लिए समान अंक** तय किए गए थे।
- **जीते गए अंकों के प्रतिशत के आधार पर टीमों ने फाइनल के लिए क्वालीफाई** किया। यह व्यवस्था टीमों द्वारा खेले गए मैचों की संख्या में असंतुलन को दूर करने के लिए की गई है।

8.6. सुर्ख़ियों में रही सरकारी पहलें (Government Initiatives in News)

8.6.1. संशोधित 'एडॉप्ट ए हेरिटेज 2.0' कार्यक्रम (Revamped 'Adopt A Heritage 2.0' Programme)

सुर्ख़ियों में क्यों?

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) ने संशोधित **'एडॉप्ट ए हेरिटेज 2.0' कार्यक्रम** की शुरुआत की है।

अन्य संबंधित तथ्य

- एडॉप्ट ए हेरिटेज योजना मूल रूप से 2017 में **पर्यटन मंत्रालय, संस्कृति मंत्रालय, ASI और राज्य/ केंद्र शासित प्रदेश सरकारों** के साझा प्रयासों के तहत शुरू की गई थी।
- इसका उद्देश्य निजी और सार्वजनिक क्षेत्रक के संगठनों तथा व्यक्तियों की सक्रिय भागीदारी से स्मारक स्थलों पर गुणवत्तापूर्ण एवं समावेशी सुविधाएं उपलब्ध कराना था।
    - ASI का महानिदेशक **प्राचीन संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष (AMASR) अधिनियम, 1958** के तहत संरक्षित स्मारकों के रखरखाव के खर्च के निमित्त स्वैच्छिक योगदान प्राप्त कर सकता है।
- **एडॉप्ट ए हेरिटेज 2.0 योजना की मुख्य विशेषताएं**
    - **स्मारक सारथी:** ये निजी/सार्वजनिक क्षेत्रक की कंपनी/ट्रस्ट/NGO/सोसाइटी कोई भी हो सकते हैं, जिन्हें ASI द्वारा इस कार्यक्रम के लिए चुना गया है। इन्हें पहले **'स्मारक मित्र'** कहा जाता था।
    - **परियोजनाओं का वित्त-पोषण:** निजी और सार्वजनिक क्षेत्रक की कंपनियां अपने **कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (CSR) कोष का उपयोग** कर सकेंगी, जबकि अन्य संस्था/ व्यक्ति स्वैच्छिक रूप से वित्तीय योगदान कर सकते हैं।

- लचीलापन: किसी स्मारक को पूर्ण रूप से गोद लेने की अनुमति होगी अथवा सुविधाओं में से किसी एक की जिम्मेदारी लेने की भी अनुमति होगी।
- **सुविधाओं का चार-आयामी फ्रेमवर्क:** स्वच्छता, पहुंच, सुरक्षा और ज्ञान।
- **परियोजना अवधि:** 5 वर्ष।

8.6.2. राष्ट्रीय सांस्कृतिक मानचित्रण मिशन (National Mission For Cultural Mapping: NMCM)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, सरकार ने **राष्ट्रीय सांस्कृतिक मानचित्रण मिशन के 'मेरा गांव मेरी धरोहर' कार्यक्रम** के तहत एक लाख से अधिक गांवों की अनूठी विशेषताओं की पहचान करके उनका दस्तावेजीकरण किया है।

मेरा गांव मेरी धरोहर सर्वेक्षण के बारे में

- **उद्देश्य:** ग्रामीण स्तर पर सांस्कृतिक पहचान का दस्तावेजीकरण करना है।
  - इसका उद्देश्य **ग्रामीण भारत की अनूठी सांस्कृतिक विरासत का दोहन** करना है।
- **तंत्र:** सामान्य सेवा केंद्रों (CSCs) के जरिए ग्राम स्तर के उद्यमी जुड़ते हैं, जो स्थानीय लोगों के साथ बैठकें करते हैं। इन बैठकों के दौरान ग्रामवासी अपने गांव के बारे में रोचक तथ्यों पर चर्चा करते हैं, जिन्हें बाद में आवेदन के जरिए अपलोड कर दिया जाता है।
  - इन रोचक तथ्यों में **गांव के दिलचस्प स्थान, रीति-रिवाज और परंपराएं, प्रसिद्ध हस्तियां, त्यौहार व मान्यताएं, कला एवं संस्कृति आदि शामिल** हो सकते हैं।
- **समन्वय:** संस्कृति मंत्रालय ने **इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय** के तहत CSCs के साथ भागीदारी की है।
- **गांवों को व्यापक रूप से अलग-अलग श्रेणियों में विभाजित** किया गया है। इन्हें विभाजित करने का आधार यह है कि क्या वे पारिस्थितिक, विकासात्मक और शैक्षिक रूप से महत्वपूर्ण हैं तथा क्या वे किसी ऐतिहासिक या पौराणिक घटनाओं से जुड़े हुए हैं।

NMCM के बारे में

- इसकी शुरुआत 2017 में **संस्कृति मंत्रालय** ने की थी।
- **शामिल संस्थाएं:**
  - संस्कृति मंत्रालय द्वारा NMCM को संचालित करने का कार्य **CSC ई-गवर्नेंस सर्विसेज इंडिया लिमिटेड** को सौंपा गया है।
  - इस मिशन को **इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (IGNCA)** के मार्गदर्शन में क्रियान्वित किया जा रहा है।
    - **IGNCA संस्कृति मंत्रालय के अधीन** एक स्वायत्त संस्थान है।
    - कला के क्षेत्र में **अनुसंधान, अकादमिक खोज और प्रसार** के एक केंद्र के रूप में कार्य करता है।
- **व्यापक स्तर पर, मिशन के तीन महत्वपूर्ण उद्देश्य निम्नानुसार हैं:**
  - **राष्ट्रीय सांस्कृतिक जागरूकता अभियान**
  - **राष्ट्रव्यापी कलाकार प्रतिभा खोज/ स्काउटिंग कार्यक्रम**
  - **राष्ट्रीय सांस्कृतिक कार्य स्थल (NCWP)**
- **मिशन के मुख्य घटक:**
  - ऐसे स्थानों की पहचान करना जहां सांस्कृतिक केन्द्र/ 'कला ग्राम' विकसित किए जा सकते हैं।
  - सीखने के लिए वर्चुअल प्लेटफॉर्म का निर्माण करना।
  - पर्यटन स्थलों के साथ-साथ स्थानीय कलाकारों और गुरु-शिष्य परंपरा सराहना कार्यक्रम की शुरुआत करना।

8.7. भौगोलिक संकेतक (GI) टैग {Geographical Indication (GI) Tags}

भौगोलिक संकेतक (GI)

GI टैग के बारे में

- यह एक प्रकार का ऐसा संकेतक है, जो किसी उत्पाद की पहचान उसकी विशिष्ट भौगोलिक उत्पत्ति से जोड़ता है। विश्व व्यापार संगठन (WTO) के **सदस्यों के अधिकार क्षेत्र या उनके राज्यों/ प्रांतों के भीतर किसी स्थानीय इलाके के उत्पादों को GI टैग दिया** जा सकता है।
- इसे **ट्रिप्स/TRIPS (बौद्धिक संपदा अधिकार के व्यापार संबंधी पहलू)** समझौते में परिभाषित किया गया है।
- पंजीकरण के बाद GI **टैग 10 वर्ष की अवधि के लिए मिलता** है। पंजीकरण अवधि को समय–समय पर एक बार में आगे 10 वर्ष की अवधि के लिए नवीनीकृत किया जा सकता है।
- **भारत में GI टैग** प्राप्त करने वाला पहला उत्पाद **दार्जिलिंग चाय था। दार्जिलिंग चाय को GI टैग 2004 में प्राप्त हुआ था।**
- सर्वाधिक संख्या में GI टैग प्राप्त करने वाले राज्यों में **कर्नाटक, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश और केरल** शामिल हैं।
- **भारत के सभी राज्य के किसी न किसी उत्पाद को GI टैग मिला है।**

महत्त्व

- यह टैग इसके धारकों को **किसी तीसरे पक्ष के गैर–मानकीकृत उत्पाद के लिए उक्त संकेतक का इस्तेमाल करने से रोकने में सक्षम बनाता है।**
- हालांकि, **एक संरक्षित GI टैग उसके धारक को किसी अन्य व्यक्ति को उसी तकनीक का उपयोग करके कोई अन्य उत्पाद बनाने से नहीं रोकता है,** जिसका निर्धारण उस संकेतक के मानकों में किया गया है।

भारत में कानून/ विधान

- वस्तुओं का भौगोलिक संकेतक (रजिस्ट्रीकरण और संरक्षण) अधिनियम, 1999
- वस्तुओं के भौगोलिक संकेतक (विनियमन और संरक्षण) का नियम, 2002

व्यवस्था/ तंत्र

- **भौगोलिक संकेत का रजिस्ट्रार:** भारत में उद्योग संवर्धन और आंतरिक व्यापार विभाग (DPIIT) के तहत **पेटेंट, डिजाइन और ट्रेडमार्क महानियंत्रक** भौगोलिक संकेतक का रजिस्ट्रार है।
  - रजिस्ट्रार **भौगोलिक संकेतक रजिस्ट्री (GIR) के काम–काज की निगरानी** करता है।
  - **GIR चेन्नई** में स्थित है और इसका **क्षेत्राधिकार अखिल भारतीय** है।

सुर्ख़ियों में रहे GI टैग्स

GI टैग उत्पाद	विवरण
उत्तर प्रदेश	
जलेसर धातु शिल्प (उत्तर प्रदेश)	• **ठठेरा समुदाय,** इन उत्पादों को बनाता है।
पारंपरिक इत्र उत्पादन	• **कन्नौज** अपने पारंपरिक इत्र उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है। ○ **भारत दुनिया का सबसे बड़ा इत्र निर्यातक है।** • **कन्नौज परफ्यूम को भी भौगोलिक संकेतक (GI) टैग** प्राप्त हुआ है।
हाल ही में मिले अन्य GI टैग्स	• **अमरोहा का ढोलक** (इस संगीत वाद्य यंत्र को **आम, कटहल, और सागौन** की लकड़ी से बनाया जाता है) • **बागपत होम फर्निशिंग** • **मैनपुरी तारकशी कला** (इस कला में **गहरे रंग की शीशम की लकड़ी पर पीतल के तारों, पट्टियों और रूपांकनों की बारीक जड़ाई का काम** किया जाता है।)

	• **कालपी का हस्तनिर्मित कागज** • **संभल का हॉर्न बोन शिल्प** • **बाराबंकी हैंडलूम** • **महोबा का गौरा पत्थर हस्तशिल्प**
कर्नाटक	
करी ईशद आम	• **विशेषताएं:** अनूठी सुगंध, अत्यधिक स्वादिष्ट, गूदे की मात्रा अधिक होती है।.
लम्बानी कढ़ाई पैच (थेकली)	• इसका नाम **लम्बानी जनजाति** के नाम पर रखा गया है। • यह **पैटर्न डार्निंग (रफ़ू), मिरर वर्क (छोटे-छोटे दर्पण के टुकड़े लगाना), क्रॉस स्टिच (दोसूती सिलाई) और ओवरलेड (मढ़ाई)** का एक मिश्रण है। इस पर कंगूरा पैचवर्क की किनारियों के साथ रजाई में लगने वाली सिलाई की तरह सिलाई की जाती है।
राजस्थान	
उदयपुर कोफ्तगारी धातु शिल्प (राजस्थान)	• कोफ्तगारी **सजावटी हथियार बनाने** की एक प्राचीन कला है। • इसमें **सोने या चांदी की तारों का उपयोग करके हथियार की सतहों को अलंकृत** किया जाता है।
बीकानेर कशीदाकारी शिल्प (राजस्थान)	• यह एक प्रकार की **सिलाई कला** है। इसके तहत **सूत, रेशम या मखमल** पर कांच जड़ाई का कार्य किया जाता है। • **पारंपरिक रूप से बीकानेर और आस-पास के जिलों में मेघवाल समुदाय** के बुनकर इस कला का निष्पादन करते हैं।
जोधपुर बंधेज शिल्प	• यह राजस्थान की एक **बंधनी (tying and dyeing) वस्त्र कला** है।
बीकानेर उस्ता कला शिल्प (यह स्वर्ण नक्काशी या स्वर्ण मनौती कला है।)	• यह नक्काशी **दीवारों, छतों, कांच, लकड़ी, संगमरमर और ऊँट के चमड़े से बनी कलाकृतियों** पर की जाती है।
गोवा	
मनकुराड आम	• यह **गोवा की मुख्य पारंपरिक फल फसल** है। पुर्तगालियों ने इसका नाम **मैलकोराडो** रखा था, जिसका अर्थ है 'खराब रंग का'। • मनकुराड में **समान पीला रंग, कम फाइबर और शर्करा की संतुलित मात्रा** होती है।
गोवा बेबिंका	• यह **एक पारंपरिक इंडो-पुर्तगाली** मिठाई है।
गोवा का काजू (गिरी)	• **उत्पत्ति:** यह **उत्तर-पूर्वी ब्राज़ील की स्थानिक** किस्म है। इसे **1570 में पुर्तगाली** गोवा लाये थे। • गोवा में बागवानी फसलों के अंतर्गत आने वाले क्षेत्र में **इसे सबसे अधिक क्षेत्र में उगाया** जाता है।
तमिलनाडु	
मट्टी केला (बेबी बनाना)	• यह अपनी **अनूठी सुगंध और शहद जैसे स्वाद** के लिए विख्यात है। • इसका **कम कुल घुलनशील सॉलिड्स कंटेंट (TSSC) इसे एक अच्छा शिशु आहार** बनाता है। • मट्टी केले के गुच्छे अन्य सामान्य केलों के गुच्छों की तरह सीधे-सीधे कतार में नहीं होते हैं, बल्कि ये हल्के से घुमावदार रूप में होते हैं।

साबूदाना (Sago)	• SAGOSERVE नामक सहकारी समिति को उसके **सेलम (तमिलनाडु) में उत्पादित साबूदाना के लिए भौगोलिक संकेतक (GI) टैग प्राप्त** हुआ है। • साबूदाना **कच्चे टैपिओका (कसावा) से प्राप्त** किया जाता है। यह छोटी ठोस **गोली या मोती की तरह होता है** और यह सफेद रंग का होता है। • यह अधिक **सुपाच्य (easy to digest)** होता है और **जल्दी ऊर्जा प्रदान** करता है।
उडंगुडी 'पनांगकरुपट्टी' (ताड़ का गुड़)	• पनांगकरुपट्टी तूतुक्कुडि क्षेत्र में **लाल रेत के टीलों पर उगने वाले पलमायरा (पंखिया ताड़) वृक्षों के पुष्पगुच्छ से एकत्रित ताड़ रस** से बनाई जाती है।
मनमदुरै मृदभांड)	• **वैगई नदी** मनमदुरै गांव से होकर बहती है। यह नदी मृदभांड निर्माण के लिए इस्तेमाल होने वाली **मिट्टी का उत्तम स्रोत है।**
छत्तीसगढ़	
नगरी दुबराज चावल	• वर्ष 2019 में **छत्तीसगढ़ के जीराफूल चावल** को भी भौगोलिक संकेतक दर्जा प्रदान किया गया था। इस प्रकार दुबराज राज्य की दूसरी चावल की किस्म बन गई है, जिसे यह टैग दिया गया है। • **वाल्मीकि रामायण** में इस अनाज का संदर्भ मिलता है।
असम	
जोहा चावल	• वैज्ञानिकों ने जोहा चावल के **न्यूट्रास्युटिकल (पौष्टिक-औषधीय) गुणों की खोज** की है। साथ ही, **लिनोलिक एसिड (ओमेगा-6) और लिनोलेनिक (ओमेगा-3) एसिड नामक दो असंतृप्त फैटी एसिड** का पता लगाया है। ○ **जोहा चावल** में व्यापक रूप से उपभोग किए जाने वाले गैर-सुगंधित किस्म के चावल की तुलना में **ओमेगा-6 और ओमेगा-3 के बीच अधिक संतुलित अनुपात** पाया जाता है। • यह **रक्त शर्करा को कम करने और मधुमेह को शुरुआत में ही रोकने** में प्रभावी है। ○ यह चावल कई **एंटीऑक्सीडेंट्स, फ्लेवोनोइड्स और फेनोलिक्स** से भी समृद्ध है।
मेघालय	
लाकाडोंग हल्दी	• **यह करक्यूमिन की उच्च मात्रा के लिए प्रसिद्ध है।** ○ इसकी जयंतिया पहाड़ियों के **लाकाडोंग** में मानसून के महीनों में काली जलोढ़ मिट्टी में खेती की जाती है।.
गारो दकमंदा	• यह **गारो जनजाति** द्वारा पहने जाने वाली पारंपरिक पोशाक है।
लारनाई मिट्टी के बर्तन	• ये बर्तन **जयंतिया हिल्स जिले में काली मिट्टी** से बनाए जाते हैं।
गारो चुबिची	• यह **गारो** जनजाति का **पारंपरिक मादक पेय** है। इसे **चावल** से बनाया जाता है।
लद्दाख	
सी बकथॉर्न	• यह **लद्दाख का चौथा GI-टैग प्राप्त उत्पाद** है। अन्य तीन हैं- ○ रकत्से कारपो खुबानी (Apricot), ○ पश्मीना शाल और ○ लद्दाखी काष्ठ नक्काशी।

PT 365 - संस्कृति

अरुणाचल प्रदेश	
अरुणाचल 'याक चुरपी'	• अरुणाचल 'याक चुरपी' **भौगोलिक संकेतक (GI) टैग पाने वाला पहला 'याक दूध उत्पाद'** बन गया है। • याक चुरपी **प्राकृतिक रूप से किण्वित पनीर** है। इसे **अरुणाचली याक के दूध से तैयार** किया जाता है। यह जानवर अरुणाचल प्रदेश में **अधिक ऊंचाई वाले क्षेत्रों में पाला** जाता है। ○ इस उत्पाद में प्रोटीन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होता है। ○ अरुणाचली याक को **ब्रोकपास** नामक जनजातीय याक चरवाहे पालते हैं।
उत्तराखंड	
चमोली **लकड़ी का रम्माण मुखौटा**	• रम्माण एक **धार्मिक त्यौहार और आनुष्ठानिक नाटक** है। इसका आयोजन भारत में **गढ़वाल क्षेत्र** में किया जाता है। • यह उत्तराखंड के चमोली जिले के **हिंदू समुदाय का रामायण महाकाव्य** पर आधारित त्यौहार है। • इसके अंतर्गत **मुखौटे बनाने की प्रक्रिया को कलाकार पवित्र** मानते हैं, क्योंकि वे पौराणिक देवी-देवताओं को जीवंत करते हैं।
बिच्छू बूटी कपड़े	• उत्तराखंड के बिच्छू बूटी कपड़ों को **हिमालयी बिच्छू बूटी के रेशों** से बनाया जाता है। • इसके **पौधे के रेशे अंदर से खोखले** होते हैं। इस कारण इनमें वायु को अपने भीतर एकत्र करने की अनूठी क्षमता होती है। इससे **प्राकृतिक ताप-रोधन** का निर्माण होता है। इस प्रकार यह कपड़ा सर्दियों और गर्मियों दोनों मौसमों में उपयोग किया जा सकता है।
काला भट्ट	• इसकी खेती पारंपरिक रूप से **"बारह-अनाज" कृषि प्रणाली** के तहत की जाती है। इस प्रणाली में **1-12 तक फसलें** एक साथ उगाई जाती हैं। इसके तहत वर्षा आधारित परिस्थितियों में एक ही खेत में **मिलेट्स, फलियां, दालें और अलग-अलग किस्मों के अनाज की खेती** की जाती है। • यह मानव आहार में **फ्लेवोन के सबसे समृद्ध स्रोतों** में से एक है।
बुरांश (रोडोडेंड्रॉन आरबोरियम)	• यह उत्तराखंड का **राजकीय पुष्प** है। • बुरांश के फूलों में प्रमुख पिगमेंट के रूप में **एंथोसायनिन और फ्लेवोनोल्स (स्वास्थ्यप्रद)** मौजूद होते हैं। **एंथोसायनिन** जल में घुलनशील **फ्लेवोनोइड्स** का एक वर्ग होता है।
अन्य हालिया GI टैग्स	• **मंडुआ (रागी) मिलेट (गढ़वाल और कुमाऊं)** • **झंगोरा मिलेट** • **लाल चावल (रेड राइस)** • **चौलाई (रामदाना)**, यह एक **स्यूडोसेरियल अनाज** (खाद्यान्नों के समान) है। • **पहाड़ी तूर दाल** • **गहत की दाल** • **रामनगर लीची** • **माल्टा फल** • **रामगढ़ नैनीताल आडू (गुठलीदार फल)** • **अल्मोड़ा लखौरी मिर्ची** (पीला रंग और इसमें **संतृप्त वसा, कोलेस्ट्रॉल और सोडियम** की कम मात्रा होती है। • **बेरीनाग चाय** • **लिखाई (लकड़ी पर नक्काशी)** • **मोमबत्ती** (इन्हें **हाथों से बनाया** जाता है और इनका निर्माण **प्राकृतिक फूलों** से किया जाता है।) • **कुमाऊं का रंगवाली पिछोड़ा**

© Vision IAS

8.8. अन्य महत्वपूर्ण सुर्ख़ियां (Other Important News)

8.8.1. होमो नलेडी (Homo Naledi)

- नए साक्ष्यों के अनुसार होमो नलेडी समुदाय **अपने संबंधियों के शवों को दफनाते होंगे और गुफा में नक्काशीदार अर्थपूर्ण प्रतीकों** को उत्कीर्ण करते होंगे। उल्लेखनीय है कि **होमो नलेडी एक विलुप्त मानव प्रजाति है।**
    - उनकी कब्रें किसी भी ज्ञात **होमो सेपियन्स की कब्रगाहों से कम से कम 100,000 वर्ष पुरानी हैं।**
- **होमो नलेडी की विशेषताएं**
    - **ये शरीर को पूर्णतः सीधे रखकर चलते थे** और उनके हाथ आधुनिक मानव के समान थे।
    - उनके **कंधों की बनावट पेड़ों आदि पर चढ़ने के अनुकूल** थी। उनके दांतों का आकार प्राचीन प्राइमेट्स के दांतों के आकार जैसा था।
    - उनके **मस्तिष्क का आकार आधुनिक मनुष्यों के मस्तिष्क का केवल एक तिहाई** था।
- मानव जाति के शुरुआती पूर्वज हैं: **अर्डीपिथेकस, ऑस्ट्रेलोपिथेकस, होमो हैबिलिस, होमो एर्गस्टर/इरेक्टस, होमो निएंडरथलेंसिस, डेनिसोवन्स आदि।**

8.8.2. महिला ओधुवर (Woman odhuvar)

- **तमिलनाडु** ने मंदिरों में महिला ओधुवरों की नियुक्ति की है।
    - **ओधुवर शैव मंदिरों में तिरुमुरै ग्रंथ से भगवान शिव के स्तुति गान में सेवारत** रहते/ रहती हैं।
- तिरुमुरै तमिलनाडु में **नयनार संतों द्वारा 6ठी से 10वीं शताब्दी के बीच भगवान शिव की स्तुति में गाए गए गीतों का बारह खंडों का संग्रह** है।
    - **प्रथम 7 खंडों को तेवरम** कहा जाता है। ये तीन प्रसिद्ध नयनार संतों **सुंदरार, संबंदर और अप्पार** द्वारा रचित हैं।
    - **मणिकावसागर ने 8वें खंड** को पूरा किया था।
    - प्रथम 9 खंडों को **तोतितिरम (शिव की स्तुति में)** कहा जाता है।
    - 10वें खंड में **तिरुमुलर** की रचनाएं शामिल हैं।
    - 11वें खंड में एक महिला कवयित्री **कराईकल अम्मैयार और नांबी अंडार** की लघु कृतियां शामिल हैं।
    - 12वें खंड को **पेरियारपुराणम** कहा जाता है।

8.8.3. बाली यात्रा (Bali Yatra)

- **कार्तिक पूर्णिमा** के अवसर पर **एशिया के सबसे बड़े मुक्ताकाश वार्षिक व्यापार मेले 'बाली यात्रा'** की शुरुआत **ओडिशा के कटक में महानदी के तट पर** हुई।
    - यह मेला वास्तव में **प्राचीन कलिंग साम्राज्य से शुरू होने वाली साहसिक समुद्री यात्राओं के गौरव को याद करने का अवसर** होता है। इस मेले के अवसर पर लोग केले के थम (तना) और **सोला से बनी छोटी नावें** नजदीक के तालाबों और नदियों में तैराते हैं।
- **बाली-यात्रा मेले के बारे में:**
    - यह मेला **बाली (इंडोनेशिया) के साथ ओडिशा के ऐतिहासिक संबंधों** और दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के लिए की गई समुद्रपारीय यात्राओं की **समृद्ध समुद्री विरासत** का प्रतीक है।
    - यह **'तपोई'** नामक कथा से भी जुड़ी हुई है। इसमें **नाविक भ्राता के वापस लौटने का इंतजार कर रही एक युवती की पारंपरिक स्मृति को भी** को याद किया जाता है।
    - एक मान्यता यह भी है कि **वैष्णव संत श्री चैतन्य** इसी शुभ दिन पर **बाली से होते हुए** पुरी जाने के लिए **कटक** तट पर **उतरे थे।**
    - **'भालुकुनी ओशा' या 'खुदुरुकुनी ओशा'** और **'बड़ा ओशा'** इस मेले से जुड़ी कुछ खास रिवाजें हैं।

8.8.4. यूनेस्को का प्रिक्स वर्साय पुरस्कार, 2023 (Unesco's 2023 Prix Versailles)

- **बेंगलुरु स्थित केम्पेगौड़ा अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे** को यूनेस्को ने 2023 का **प्रिक्स वर्साय पुरस्कार** प्रदान किया है। इसे **'दुनिया के सबसे खूबसूरत हवाई अड्डों'** में शामिल किया गया है।
- यूनेस्को **2015 से प्रतिवर्ष** यह पुरस्कार प्रदान कर रहा है। इसके तहत विश्व स्तर पर सबसे बेहतरीन समकालीन विशेषताओं को दर्शाने वाले स्थापत्य को पुरस्कार दिया जाता है।
    - पुरस्कार की **आधिकारिक सूची में शामिल स्थापत्य** इंटेलीजेंट सस्टेनेबिलिटी के सिद्धांतों का पालन करने वाले होते हैं। साथ ही, ये स्थापत्य परियोजनाएं **पारिस्थितिक, सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभावों** को भी ध्यान में रखती हैं।

- पुरस्कार प्राप्त स्थापत्य **लिविंग परिवेश (Living environment) को खूबसूरत और बेहतर बनाने** की प्राथमिक भूमिका का उदाहरण भी प्रस्तुत करते हैं।

8.8.5. अभिलेख पटल (Abhilekh Patal)

- अभिलेख पटल इंटरनेट के माध्यम से **भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार (NAI) के संदर्भ माध्यम और इसके डिजिटल संग्रह तक पहुंचने के लिए फीचर्स से परिपूर्ण एक वेब पोर्टल है।**
  - यह **NAI की एक पहल** है। इसका उद्देश्य इसके **भारतीय अभिलेखीय रिकॉर्ड्स को सभी के लिए उपलब्ध** कराना है।
- **NAI संस्कृति मंत्रालय का एक संबद्ध कार्यालय है। यह भारत सरकार के गैर-वर्तमान अभिलेखों के भंडार के रूप में कार्य करता है।**

8.8.6. JATAN: वर्चुअल म्यूजियम बिल्डर (JATAN: Virtual Museum Builder)

- JATAN: वर्चुअल म्यूजियम बिल्डर, **भारतीय संग्रहालयों के लिए एक डिजिटल संग्रह प्रबंधन प्रणाली है।**
- यह एक **क्लाइंट सर्वर एप्लीकेशन** है। इसमें **इमेज क्रॉपिंग, वॉटरमार्किंग, यूनिक नंबरिंग, मल्टीमीडिया रिप्रजेंटेशन के साथ डिजिटल ऑब्जेक्ट के प्रबंधन** जैसी सुविधाएं मौजूद हैं।
- इस सॉफ्टवेयर को **ह्यूमन सेंटर डिजाइन एंड कंप्यूटिंग ग्रुप** ने डिजाइन और विकसित किया है। यह संस्था **सेंटर फॉर डेवलपमेंट ऑफ एडवांस्ड कंप्यूटिंग (C-DAC), पुणे** के अधीन कार्य करती है।
- उल्लेखनीय है कि केंद्र सरकार ने **कलाकृतियों के बेहतर तरीके से संरक्षण के लिए अपने प्रशासनिक नियंत्रण वाले सभी संग्रहालयों के 3D डिजिटलीकरण** की योजना बनाई है। यह इसी योजना का एक हिस्सा है। यह कार्य 2023 के अंत तक पूरा किया जाना है।
  - **संस्कृति मंत्रालय** के दायरे में 10 संग्रहालय आते हैं।
  - इसके अलावा, **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण** के पास महत्वपूर्ण पुरातात्विक स्थलों के निकट देश भर में फैले 44 स्थानों पर साइट संग्रहालय भी हैं।

8.8.7. संयुक्त राज्य अमेरिका ने 100 से ज्यादा भारतीय पुरावशेष वापस किए (US to return over 100 Indian antiquities)

- भारत और अमेरिका ने **आपराधिक मामलों पर "पारस्परिक कानूनी सहायता संधि (MLAT)[11]"** पर हस्ताक्षर किए हैं। इस संधि में **पुरावशेषों को मूल देशों को वापस करने पर एक-दूसरे को सहायता करने का प्रावधान** भी शामिल है।
- **केंद्रीय गृह मंत्रालय** MLAT के तहत न्यायालय के आदेशों को निष्पादित करने के लिए **नोडल मंत्रालय** है।
- **पुरावशेष तथा बहुमूल्य कलाकृति अधिनियम (AATA), 1972** भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण से बिना लाइसेंस के पुरावशेष वस्तुओं के निर्यात को एक दंडनीय अपराध बनाता है।
- इसके अलावा, **सीमा शुल्क अधिनियम, 1962 भी पुरावशेषों के निर्यात पर प्रतिबंध** लगाता है
- **इंडिया प्राइड प्रोजेक्ट** एक वैश्विक संगठन है। यह संगठन **भारत की खो चुकी विरासत को फिर से प्राप्त** करने के प्रति समर्पित है।

8.8.8. वैश्विक बौद्ध शिखर सम्मेलन, 2023 (Global Buddhist Summit 2023)

- वैश्विक बौद्ध शिखर सम्मेलन, 2023 **"नई दिल्ली घोषणा-पत्र" के साथ समाप्त हुआ।**
- इस **शिखर सम्मेलन का आयोजन संस्कृति मंत्रालय** ने दिल्ली स्थित अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध परिसंघ के सहयोग से किया था।
- **उद्देश्य:** इस सम्मेलन का उद्देश्य **बौद्ध धर्म से संबंधित और सार्वभौमिक चिंताओं के मामलों पर विचार** करने के लिए **दुनिया भर के बौद्ध विद्वानों, परिसंघ के नेताओं एवं बौद्ध धर्मावलंबियों** को एक मंच पर एक साथ लाना था।
- इस शिखर सम्मेलन में **भारत की सॉफ्ट पावर रणनीति में बौद्ध धर्म की बढ़ती भूमिका** को रेखांकित किया गया।

Copyright © by Vision IAS

All rights are reserved. No part of this document may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior permission of Vision IAS.

[11] Mutual Legal Assistance Treaty

परिशिष्ट I : बौद्ध धर्म

बौद्ध धर्म के बारे में

संस्थापक: गौतम बुद्ध (उनके बचपन का नाम सिद्धार्थ था)

उनका जन्म **563 ई. पू. शाक्य क्षत्रिय कुल** में हुआ था।

उन्होंने 29 वर्ष की आयु में गृहस्थ जीवन का त्याग कर दिया था। उन्हें एक **पीपल के वृक्ष के नीचे ज्ञान (निर्वाण) की प्राप्ति** हुई।

बुद्ध से जुड़े महत्वपूर्ण स्थल
- **लुंबिनी** (जन्मस्थान)
- **बोधगया** (ज्ञान प्राप्ति स्थल)
- **सारनाथ** (प्रथम उपदेश)
- **कुशीनगर** (मृत्यु स्थल)

बौद्ध धर्म के सिद्धांत

बौद्ध धर्म के सिद्धांतों का केंद्र **चार आर्य सत्य हैं।**

आष्टांगिक मार्ग (या आठ मार्ग): इन्हें मध्य मार्ग भी कहा जाता है। इन्हें मानव के दुखों के उन्मूलन के लिए महात्मा बुद्ध ने प्रतिपादित किया था।

- बौद्ध धर्म के अनुयायी **ईश्वर में विश्वास नहीं** करते हैं। इसकी बजाए वे ईश्वर से स्वतंत्र **नैतिक प्रगति** पर ध्यान केंद्रित करते हैं।
- बौद्ध धर्म के अनुयायी आत्मा की अमरता में विश्वास करते हैं, लेकिन अलग रूप में।

महत्वपूर्ण बौद्ध महत्वपूर्ण संप्रदाय

हीनयान
- इसका अर्थ है **निम्न वाहन।**
- यह एक **रूढ़िवादी संप्रदाय है।**
- **मूर्तिपूजक नहीं**
- **पाली भाषा** का प्रयोग किया जाता है।

महायान
- इसका अर्थ है **महान वाहन।**
- यह अधिक **उदार संप्रदाय** है।
- **बुद्ध और बौद्धिसत्वों के ईश्वरत्व** में विश्वास करता है।
- **मूर्तिपूजक संस्कृत भाषा** का प्रयोग किया जाता है।

थेरवाद
- **यह हीनयान का एक उप–संप्रदाय है।**
- **क्लेश का अंत और निर्वाण की प्राप्ति** मुख्य लक्ष्य है।
- **विभाजवाद (विश्लेषण का ज्ञान)** में विश्वास करता है।
- **पाली भाषा** का प्रयोग किया जाता है।

वज्रयान (तांत्रिक बौद्ध)
- **यह महायान का एक उप–संप्रदाय है।**
- **बौद्ध दर्शनों के साथ ब्राह्मणवादी अनुष्ठानों (वेद आधारित) को संयोजित** करता है।
- **मुख्य आराध्यः तारा (देवी)**
- **शास्त्रीय तिब्बती भाषा** का प्रयोग किया जाता है।

अन्य उप–संप्रदाय
अन्य उप–संप्रदायः
- **सौतांत्रिक, सम्मित्य, महासांघिक, गोकुलिका, आदि**

बौद्ध संगीतियां (परिषदें)

क्र.सं.	स्थान	अवधि	राज संरक्षण	अध्यक्ष	महत्वपूर्ण उपलब्धियां
1	राजगृह	483 ई.पू.	अजातशत्रु	महाकश्यप	**विनयपिटक** और **सुत्तपिटक** को संकलित किया गया था।
2	वैशाली	383 ई.पू.	कालाशोक	सबकामी	मठीय अनुशासन को लेकर बौद्ध धर्म में पहला विभाजन हुआ था। बौद्ध धर्म **महासांघिक** और **स्थविरवाद** में विभाजित हो गया था।
3	पाटलिपुत्र	250 ई.पू.	अशोक	मोग्गलिपुत्त तिस्स	**अभिधम्मपिटक** को संहिताबद्ध किया गया था।
4	कश्मीर	72 ई.	कनिष्क	वसुमित्र	बौद्ध धर्म फिर से **हीनयान व महायान** संप्रदायों में विभाजित हो गया था।

मुख्य बौद्ध साहित्य

सुत्तपिटक
यह बुद्ध के उपदेशों का संग्रह है।

विनयपिटक
इसमें बौद्ध भिक्षुओं व भिक्षुणियों के लिए मठवासी जीवन के नियम संग्रहित हैं।

अभिधम्मपिटक
इसमें बौद्ध सिद्धांतों की व्याख्या व विश्लेषण किया गया है।

PT 365 - संस्कृति

परिशिष्ट II : जैन धर्म

जैन धर्म के बारे में

इसकी उत्पत्ति लगभग **ऋग्वैदिक काल** में हुई थी।

क्रमिक रूप से **24 महान उपदेशकों (तीर्थंकरों)** द्वारा स्थापित।

प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव थे। 23वें पार्श्वनाथ तथा 24वें वर्धमान महावीर थे।

जैन धर्म में मुख्य संप्रदाय: श्वेतांबर व दिगंबर। **अन्य उप–संप्रदाय: बीसपंथ, तेरापंथ, स्थानकवासी, मूर्तिपूजक आदि**

वर्धमान महावीर

उनका जन्म **540 ई. पू. में वैशाली** (वर्तमान में उत्तरी बिहार) में हुआ था।

उनके पिता **सिद्धार्थ ज्ञात्रिक कुल के प्रधान** थे। उनकी माता **त्रिशला** लिच्छवि राजकुमारी थीं।

उन्होंने 30 वर्ष की आयु में गृहस्थ जीवन का त्याग कर दिया था। उन्हें 42 वर्ष की आयु में **कैवल्य** या पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति हुई।

उन्होंने **कोशल, मगध, मिथिला, चंपा** आदि नगरों में जैन धर्म के उपदेशों का प्रसार किया था।

72 वर्ष की आयु में वर्तमान **राजगीर** के निकट मृत्यु हुई।

जैन धर्म के सिद्धांत

पंचमहाव्रत

- असत्य नहीं बोलना
- चोरी नहीं करना
- संपत्ति अर्जित नहीं करना
- हिंसा नहीं करना
- ब्रह्मचर्य का पालन करना

जैन धर्म के त्रिरत्न

- सम्यक् ज्ञान
- सम्यक् श्रद्धा
- सम्यक् आचरण

जैन धर्म में ईश्वर में विश्वास किया जाता है, लेकिन उसका स्थान जिन से नीचे है।

यह विश्वास किया गया है कि सर्वाधिक निर्जीव वस्तु में भी आत्मा का वास होता है।

कर्म के सिद्धांत को माना जाता है तथा आत्मा के देहांतरण को मान्यता दी गई है।

प्रसिद्ध संगीतियां (परिषदें)

क्र.सं.	वर्ष	स्थान	अध्यक्ष	उपलब्धियां
1	300 ई.पू.	पाटलिपुत्र	स्थूलभद्र	भगवान महावीर के उपदेशों को **12 अंगों** में संकलित किया गया था।
2	512 ई.	वल्लभी	देवद्धिगनी	भगवान महावीर के उपदेशों को **11 अंगों** में व्यवस्थित रीति से संकलित किया गया था, क्योंकि उस समय तक 12वां अंग लुप्त हो गया था।

VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION

UPSC TOPPERS PREPARATION APPROACH & STRATEGIES

Insights from Toppers' Talk and Answer Scripts

Ishita Kishore
Rank 1, 2022

Ishita Kishore, the UPSC topper of 2022, serves as a remarkable inspiration for her unwavering determination and relentless efforts making her as a beacon of motivation for aspiring candidates. Through her methodical preparation approach, she emerged triumphant in the esteemed Civil Services Examination securing top rank. Ishita extensively relied on VisionIAS Mains test series to refine her answer writing abilities. To gain further insights into Ishita's answer writing approaches, kindly scan the QR code provided.

TOPPER'S COPIES

+91 8468022022, +91 9019066066

/c/VisionIASdelhi /Vision_IAS /visionias_upsc www.visionias.in /VisionIAS_UPSC

UPSC CSE TOPPERS

Waseem Ahmad Bhat

7 RANK 2022

Waseem Ahmad Bhat, an exceptional achiever who secured an All India Rank 7 in his third attempt in the UPSC Civil Services Examination 2022. He also achieved All India Rank 225 in his first attempt in 2020 and currently, he is training as an Assistant Commissioner Income Tax.

TOPPERS' TALK

TOPPER'S COPIES

Waseem was a student of the **VisionIAS Foundation Course**, Batch in 2019.

Hailing from Doru Shahabad, Anantnag, Jammu & Kashmir, he completed his schooling in Anantnag and holds a degree in Civil Engineering from NIT Srinagar.

Waseem opted for **Anthropology** as his optional subject. His topper's talk covers vital topics such as preparing for the **changing pattern of Prelims**, essay writing and strategy, writing **quote-based essays,** utilizing topper's answer scripts for preparation, and **effective revision strategies.**

Aniruddh Yadav

8 RANK 2022

Aniruddh Yadav, a remarkable achiever who secured an All India Rank 8 in his fourth attempt in the UPSC Civil Services Examination of 2022.

Aniruddh opted for **Anthropology** as his optional subject. He completed his dual degree course in Biochemical Engineering & Biotechnology from IIT Delhi.

His topper's talk covers crucial aspects such as **creating a schedule** and **subject-wise timetable,** honing answer writing skills through topic-based **practice, mastering the structure** and format of answers (Introduction, Body, Conclusion), **managing time effectively** during answer writing practice, and preparing **topic-wise notes** with the help of syllabus analysis and previous year questions.

TOPPERS' TALK

TOPPER'S COPIES

कृतिका मिश्रा

66 RANK 2022

कृतिका मिश्रा **2022 की यूपीएससी (UPSC) हिंदी मीडियम टॉपर रही हैं,** इन्होने UPSC सिविल सेवा परीक्षा में अपने **दूसरे प्रयास** में अखिल भारतीय रैंक (AIR) 66 हासिल किया है। इन्होने अपने पहले प्रयास में इंटरव्यू दिया था लेकिन अंतिम रूप से सफलता नहीं मिली थी।

कानपुर की रहने वाली कृतिका ने **मानविकी विषयों में स्नातक** और **हिंदी साहित्य में परास्नातक** किया है। कृतिका अपनी तैयारी के दौरान **VisionIAS के ऑल इंडिया टेस्ट सीरीज, लक्ष्य कार्यक्रम** और पर्सनालिटी डेवलपमेंट कार्यक्रम से जुड़ी रहीं है, जो इनकी प्रभावी तैयारी और सफलता प्राप्त करने में सहायक रहे हैं।

TOPPERS' TALK

TOPPER'S COPIES

उनके **टॉपर टॉक्स (Topper's Talk)** में परीक्षा की प्रभावी तैयारी के लिए आवश्यक सभी महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की गयी है जैसे **हिंदी माध्यम के समक्ष चुनौतियाँ,** प्रारंभिक परीक्षा की रणनीति, **CSAT** की रणनीति, नोट्स बनाने से संबंधित कला और प्रभावी **उत्तरलेखन की रणनीतियां** इत्यादि। कृतिका मिश्रा ने **उत्तर लेखन और प्रस्तुतिकरण** में निपुणता, तथ्यों एवं उदाहरणों का उपयोग करने की असाधारण विशेषज्ञता के आधार पर सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्रों में अच्छे अंक हासिल किये हैं। कृतिका मिश्रा की **उपलब्धियां** देश भर के महत्वाकांक्षी **अभ्यर्थियों के लिए प्रेरणादायी** हैं। कृतिका के **Topper's Talk** एवं उत्तर लेखन दृष्टिकोण के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए कृपया दिए गए क्यूआर कोड (QR Code) को स्कैन कीजिये।

भरत जयप्रकाश मीणा

85 RANK 2022

सिविल सेवा परीक्षा में एक उल्लेखनीय उपलब्धि प्राप्त करने वाले **भरत जयप्रकाश मीणा** ने 2022 की यूपीएससी (UPSC) सिविल सेवा परीक्षा में अपने **तीसरे प्रयास** में अखिल भारतीय रैंक (AIR) **85** हासिल की है। पहली बार उन्होंने **624वीं रैंक** हासिल की थी और उनका **आईआरएस** (IRS) में चयन हुआ था।

गंगापुर सिटी के पास सलावद गांव निवासी भरत जयप्रकाश सिंह मीणा ने सीकर से 12वीं पास की है। इसके बाद धनबाद आईआईटी (IIT) से **मैकेनिकल इंजीनियरिंग** की है ।

टॉपर टॉक्स (Topper's Talk) के माध्यम से भरत जयप्रकाश मीणा ने पाठ्यक्रम का महत्त्व, **Prelims Exam** की रणनीति के साथ–साथ स्टडी मटेरियल, Current Affairs के लिए योजना–कुरुक्षेत्र आदि मैगजीन का उपयोग तथा **निबंध में अच्छे अंक** कैसे हासिल किया जा सकता है आदि संदर्भों में सविस्तार चर्चा की है। **उत्तर लेखन में भूमिका एवं निष्कर्ष को प्रभावी बनाना,** तथ्यों एवं उदाहरणों का उपयोग करने के साथ–साथ मैप, डायग्राम आदि का सटीक प्रयोग करने की कला ने उनकी सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। भरत जयप्रकाश के **Topper's Talk** एवं उत्तर लेखन दृष्टिकोण के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए, कृपया दिए गए क्यूआर कोड (**QR Code**) को स्कैन कीजिये ।

TOPPERS' TALK

TOPPER'S COPIES

UPSC CSE TOPPERS

Gamini Singla

3 RANK 2021

TOPPERS' TALK

TOPPER'S COPIES

Gamini Singla, hailing from Punjab, completed her graduation in Computer Science Engineering from Punjab Engineering College Chandigarh. Thereafter, she honed her skills through a five-month internship as a finance analyst at JP Morgan.

She secured a remarkable All India Rank of 3 in the UPSC CSE 2021 in her second attempt with **Sociology** as her optional subject.

With her strategic **approach to GS Paper IV (Ethics) and Essay,** Gamini demonstrated her ability to **critically analyze ethical issues** and effectively express her thoughts in a coherent manner.

Her expertise in answer writing provided her with a competitive edge, allowing her to convey her knowledge and insights concisely.

Aishwarya Verma

4 RANK 2021

Aishwarya Verma hails from Madhya Pradesh. After graduating in Electrical Engineering, he opted for Civil Services as a career of choice.

He chose **Geography** as his optional subject and achieved an All-India Rank 4 in UPSC CSE 2021 in his fourth attempt.

Apart from the hard work, determination and resilience shown by Aishwarya, his success can also be attributed to his **short and enriched self-made notes, advanced answer writing skills**, and smart preparation strategy, including S&T.

TOPPERS' TALK

TOPPER'S COPIES

अंकित कुमार जैन

173 RANK 2022

राजस्थान के बूंदी जिले के छोटे से गांव जरखोदा के **अंकित कुमार जैन** ने UPSC परीक्षा 2022 में **173वां (AIR 173)** स्थान प्राप्त किया है । यह उनका तीसरा प्रयास था। **सामान्य परिवार** से आने वाले अंकित की यह उपलब्धि उनकी प्रतिबद्धता और दृढ़संकल्प का परिणाम है। अंकित कुमार जैन ने Chemical Engineering **में स्नातक** किया है। UPSC में उनका वैकल्पिक विषय (Optional Subject) हिंदी साहित्य रहा है। उन्होंने **टॉपर टॉक्स** (Topper's Talk) के माध्यम से Prelims Exam और Mains Exam की रणनीति के साथ–साथ Revision के महत्त्व तथा हिंदी साहित्य विषय की तैयारी के विभिन्न आयामों पर चर्चा की है। **उत्तर लेखन प्रस्तुतिकरण में स्पष्टता**, तथ्यों एवं उदाहरणों का सटीक उपयोग करने के साथ साथ फ्लोचार्ट, डायग्राम आदि के प्रभावी प्रयोग ने उनकी सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी हैं। अंकित कुमार उन सभी युवाओं के लिए **प्रेरणास्रोत** हैं जो निर्भीक होकर **चुनौतियों और बाधाओं** को दूर कर अपने परिश्रम और मेहनत से स्वयं के लिए मुकाम बनाना चाहते हैं। **अंकित कुमार** के Topper's Talk एवं **उत्तर लेखन दृष्टिकोण** के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए, कृपया दिए गए क्यूआर कोड (QR Code) को स्कैन कीजिये ।

TOPPERS' TALK

TOPPER'S COPIES

गौरव कुमार त्रिपाठी

226 RANK 2022

गौरव कुमार त्रिपाठी ने UPSC की सिविल सेवा परीक्षा **2022 में 226 वाँ रैंक** प्राप्त किया है। इन्होंने IIT रुड़की से वर्ष 2018 में B-Tech करने के साथ ही सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी प्रारंभ की।

गौरव कुमार त्रिपाठी पहले वर्ष **2020 में** PCS **में भी चयनित** हुए थे किन्तु उच्चतर सफलता हेतु इन्होने च्है पद पर जॉइन नहीं किया । इन्होने तैयारी की शुरुआत में भूगोल को अपना वैकल्पिक विषय बनाया था किन्तु बाद में **हिन्दी साहित्य को वैकल्पिक विषय के रूप में** अपनाया। अंतिम रूप से सफलता प्राप्त करने के लिए इन्होने अपनी रणनीति में **टेस्ट सीरीज** के माध्यम से अभ्यास, टेस्ट सीरीज के **मॉडल उत्तरों से नोट्स बनाना,** स्वयं द्वारा बनाए गए **नोट्स को बार बार दोहराना** तथा PYQs **का निरंतर अभ्यास** करने आदि पक्षों को शामिल किया था। गौरव अपनी तैयारी के दौरान VisionIAS के **लक्ष्य कार्यक्रम, ऑल इंडिया टेस्ट सीरीज, अभ्यास, Mains 365, पर्सनालिटी डेवलपमेंट और एथिक्स केस स्टडीज कार्यक्रम** से जुड़े रहे हैं जो इनकी बेहतर तैयारी में सहायक रहे हैं। गौरव कुमार त्रिपाठी के Topper's Talk एवं उत्तर लेखन दृष्टिकोण के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए कृपया दिए गए क्यूआर कोड (QR Code) को स्कैन कीजिये ।

TOPPERS' TALK

TOPPER'S COPIES

UPSC CSE TOPPERS

Shubham Kumar

1 RANK 2020

Shubham Kumar, hailing from Katihar District in Bihar, completed his graduation in Civil Engineering from IIT Bombay. He achieved the remarkable feat of securing All India Rank 1 in the UPSC examination of 2020 in his third attempt.

His success can be attributed to his **unique approach and meticulous preparation.** Shubham emphasized the importance of **regular mock tests** for prelims and carefully analyzing previous years' UPSC prelims questions.

Shubham was a student of the **VisionIAS Foundation Course.**

He also **utilized topper's copies to enhance his skills in ethics answer writing** and emphasized the **use of diagrams and graphs** in GS papers.

TOPPERS' TALK

TOPPER'S COPIES

Jagrati Awasthi

2 RANK 2020

Jagrati Awasthi, from Bhopal, Madhya Pradesh, completed her graduation in Electrical Engineering from NIT Bhopal. She gained two years of valuable work experience at BHEL.

With **Sociology** as her optional subject, she achieved an outstanding All India Rank of 2 in the UPSC examination of 2020.

She has emphasized the **importance of a well-structured daily routine** and shared a **detailed booklist** and recommended sources. Jagrati stressed the significance of thorough reading and utilizing previous years' questions to grasp the exam's demands.

Along with refined **note-making techniques,** she has provided insights on determining the optimal number of questions to attempt in the prelims and leveraging previous year's question papers for **Ethics case studies'** preparation.

TOPPERS' TALK

TOPPER'S COPIES

बजरंग प्रसाद

454 RANK 2022

बजरंग प्रसाद टपेपवद IAS के फाउंडेशन कार्यक्रम के छात्र रहे हैं। बजरंग प्रसाद ने संघ लोक सेवा आयोग की प्रतिष्ठित सिविल सेवा परीक्षा, **2022 में 454 रैंक** प्राप्त की है । इन्होने वर्ष 2019 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से स्नातक किया, इसके बाद इन्होंने सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी करने का निर्णय लिया । ये विषम परिस्थितियों में भी सफलता प्राप्त करने वाले अभ्यर्थी रहे हैं। अंतिम रूप से सफलता प्राप्त करने के लिए इन्होने अपनी रणनीति में दृढ़ विश्वास, कठिन मेहनत, **सीमित अध्ययन स्रोतों के बारम्बार रिविजन पर बल,** क्लास नोट्स का निरंतर रिविजन, **PYQs का अभ्यास** तथा टेस्ट सीरीज के माध्यम से निरंतर अभ्यास इत्यादि को शामिल किया है। बजरंग प्रसाद के **Topper's Talk** एवं उत्तर लेखन दृष्टिकोण के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए कृपया दिए गए क्यूआर कोड (QR Code) को स्कैन कीजिये।

TOPPERS' TALK

TOPPER'S COPIES

रवि कुमार सिहाग

18 RANK 2021

रवि ने 2015 के बाद UPSC सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी का निर्णय लिया और **प्रथम प्रयास वर्ष** (2018) में ही **337वीं रैंक** प्राप्त किया, अपने **द्वितीय प्रयास (2019) में 317वीं रैंक** पर चयनित हुए । IAS प्राप्त करने के लिए इन्होंने अपनी तैयारी जारी रखी और अंततः सिविल सेवा परीक्षा 2021 में 18वीं रैंक प्राप्त किया। इन्होंने अपनी रणनीति में ज्यादा से ज्यादा टेस्ट देना, अपने **कमजोर पक्षों पर कार्य करना, प्रतिदिन उत्तर लेखन करना,** सामान्य अध्ययन और एथिक्स पेपर में **नवाचार की विधियां अपनाना** जैसे रेखाचित्र, आँकड़े आदि का प्रयोग तथा NCERT का प्रभावी उपयोग आदि को शामिल किया है । रवि, **VisionIAS के टेस्ट सीरीज कार्यक्रम** में भी शामिल थे। रवि कुमार के **Topper's Talk** एवं उत्तर लेखन दृष्टिकोण के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए कृपया दिए गए क्यूआर कोड (QR Code) को स्कैन कीजिये ।

TOPPERS' TALK

TOPPER'S COPIES

▶ लाइव / ऑनलाइन
कक्षाएं भी उपलब्ध

VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION

सामान्य अध्ययन फाउंडेशन कोर्स

2025 प्रीलिम्स और मेन्स, दोनों

दिल्ली	अवधि
10 अप्रैल | 9 AM	12–14 महीने

VisionIAS ऐप को डाउनलोड करने के लिए दिए गए **QR कोड** को स्कैन कीजिए

निःशुल्क काउंसिलिंग के लिए **QR** कोड को स्कैन कीजिए

डेली **MCQs** और अन्य अपडेट्स के लिए हमारे ऑफिशियल टेलीग्राम ग्रुप को ज्वाइन कीजिए

- सामान्य अध्ययन फाउंडेशन कोर्स में GS मेन्स के सभी चारों पेपर, GS प्रीलिम्स, CSAT और निबंध के सिलेबस को विस्तार से कवर किया जाता है।
- अभ्यर्थियों के ऑनलाइन स्टूडेंट पोर्टल पर लाइव एवं ऑनलाइन रिकॉर्डेड कक्षाओं की सुविधा भी उपलब्ध है, ताकि वे किसी भी समय, कहीं से भी लेक्चर और स्टडी मटेरियल तक प्रभावी ढंग से पहुंच सकें।
- इस कोर्स में पर्सनालिटी डेवलपमेंट प्रोग्राम भी शामिल है।
- 2025 के प्रोग्राम की अवधि: 12–14 महीने
- प्रत्येक कक्षा की अवधि: 3–4 घंटे, सप्ताह में 5–6 दिन (आवश्यकता पड़ने पर रविवार को भी कक्षाएं आयोजित की जा सकती हैं)

नोट: अभ्यर्थी फाउंडेशन कोर्स की लाइव वीडियो कक्षाएं घर बैठे अपने ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर भी देख सकते हैं। साथ ही, अभ्यर्थी लाइव चैट के जरिए कक्षा के दौरान अपने डाउट्स और विषय संबंधी प्रश्न पूछ सकते हैं। इसके अलावा, वे अपने डाउट्स और प्रश्न को नोट कर दिल्ली सेंटर पर हमारे क्लासरूम मेंटर को बता सकते हैं, जिसके बाद फोन/ मेल के जरिए अभ्यर्थियों के प्रश्नों का समाधान किया जाता है।

GS फाउंडेशन कोर्स की अन्य मुख्य विशेषताओं पर एक नज़र

नियमित तौर पर व्यक्तिगत मूल्यांकन
अभ्यर्थियों को नियमित ट्यूटोरियल, मिनी टेस्ट एवं ऑल इंडिया टेस्ट सीरीज के माध्यम से व्यक्तिगत व अभ्यर्थी के अनुरूप और ठोस फीडबैक दिया जाता है

सभी द्वारा पढ़ी जाने वाली एवं सभी द्वारा अनुशंसित
विशेषज्ञों की एक समर्पित टीम द्वारा तैयार की गई मासिक समसामयिकी मैगजीन, PT 365 और Mains 365 डॉक्यूमेंट्स तथा न्यूज़ टुडे जैसी प्रासंगिक एवं अपडेटेड अध्ययन सामग्री

नियमित तौर पर व्यक्तिगत मार्गदर्शन
इस कोर्स के तहत अभ्यर्थियों के डाउट्स दूर करने और उन्हें प्रेरित रखने के लिए नियमित रूप से फोन/ ईमेल/ लाइव चैट के माध्यम से "वन–टू–वन" मार्गदर्शन प्रदान किया जाता है।

ऑल इंडिया टेस्ट सीरीज़
प्रत्येक 3 सफल उम्मीदवारों में से 2 Vision IAS की ऑल इंडिया टेस्ट सीरीज को चुनते हैं। Vision IAS के पोस्ट टेस्ट एनालिसिस के तहत टेस्ट पेपर में स्टूडेंट्स के प्रदर्शन का विस्तार से विश्लेषण एवं समीक्षा की जाती है। यह अपनी गलतियों को जानने एवं उसमें सुधार करने हेतु काफी महत्वपूर्ण है।

कोई क्लास मिस ना करें
प्रत्येक अभ्यर्थी को एक व्यक्तिगत "स्टूडेंट पोर्टल" उपलब्ध कराया जाता है। इस पोर्टल के जरिए अभ्यर्थी किसी भी पुराने क्लास या छूटे हुए सेशन और विभिन्न रिसोर्सेज़ को एक्सेस कर सकते हैं एवं अपने प्रदर्शन का सापेक्ष एवं निरपेक्ष मूल्यांकन कर सकते हैं।

बाधा रहित तैयारी
अभ्यर्थी VisionIAS के क्लासरूम लेक्चर्स एवं विभिन्न रिसोर्सेज़ को कहीं से भी तथा कभी भी एक्सेस कर सकते हैं और वे इन्हें अपनी जरुरत के अनुसार ऑर्गनाईज कर सकते हैं।

/c/VisionIASdelhi /vision_ias /visionias_upsc /VisionIAS_UPSC

Heartiest

Congratulations

to all Successful Candidates

39 in Top 50 Selections in CSE 2022

1 AIR ISHITA KISHORE

2 AIR GARIMA LOHIA

3 AIR UMA HARATHI N

हिंदी माध्यम में 40+ चयन CSE 2022 में

हिंदी माध्यम टॉपर

66 AIR KRITIKA MISHRA

85 AIR BHARAT JAI PRAKASH MEENA

105 AIR DIVYA

120 AIR GAGAN SINGH MEENA

173 AIR ANKIT KUMAR JAIN

UPSC TOPPERS/OPEN SESSION: QR स्कैन करें

66 AIR KRITIKA MISHRA — TOPPERS' TALK, TOPPER'S COPIES

226 AIR GAURAV KUMAR TRIPATHI — TOPPERS' TALK, TOPPER'S COPIES

18 AIR RAVI KUMAR SIHAG — TOPPERS' TALK, TOPPER'S COPIES

13 AIR NISHANT JAIN — PREPARATION STRATEGY AVAILABLE AT HINDI YOUTUBE CHANNEL

अंतरिम बजट (2024–25) चर्चा एवं विश्लेषण

UPSC 2025 के लिए व्यापक रणनीति

UPSC प्रीलिम्स 2024: 4 महीने के लिए प्रभावी रणनीति

CSAT रणनीति व PYQs पर चर्चा

HEAD OFFICE
DELHI
Apsara Arcade, 1/8-B 1st Floor, Near Gate-6 Karol Bagh Metro Station

MUKHERJEE NAGAR CENTER
Plot No. 857, Ground Floor, Mukherjee Nagar, Opposite Punjab & Sindh Bank, Mukherjee Nagar

GTB NAGAR CENTER
Classroom & Enquiry Office, above Gate No. 2, GTB Nagar Metro Building, Delhi - 110009

FOR DETAILED ENQUIRY
Please Call:
+91 8468022022,
+91 9019066066

enquiry@visionias.in | /c/VisionIASdelhi | /visionias.upsc | /vision _ias | VisionIAS_UPSC

अहमदाबाद | बैंगलोर | भोपाल | चंडीगढ़ | दिल्ली | गुवाहाटी | हैदराबाद | जयपुर | जोधपुर | लखनऊ | प्रयागराज | पुणे | रांची